04 - एआई दूर नहीं कर सकता है यह खाई

05 - आज के युद्ध और शिवाजी महाराज की रणनीतियां

06 - पीएम मित्र पार्क को शीघ्र रेलवे लाइन से जोड़ा जाए - सावित्री ठाकुर

07 - संगीत की लता पर सुमन की तरह महकती रही

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 06 जून, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 274, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

थोड़ी सी संवेदना
थोड़ी सी मनुष्यता
थोड़ी सी कविताएं
औसत प्रतिभा
औसत ज्ञान
थोड़ा सा ईमान

हिम्मत भर प्रतिरोध
कूबत भर क्रांति
बहुत सारी भ्रांति

पाँव भर जमीन
गाँव भर आकाश
अनंत अंधकार
दिया भर प्रकाश

इसके अलावा जो कुछ है
वह मित्रों का प्यार है
कुल जमा यही मेरा संसार है।

- अरुण आदित्य

प्रसंगवश

लोकसभा में ताकत बढ़ाने बीजेपी तोड़ेगी टीएमसी सांसद?

शैलेश

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के ख़िलाफ़ बड़ी बगावत के बीच टीएमसी से निकाले गए विधायक ऋतब्रत बनर्जी अब पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नए नेता बन गए हैं। क्या बीजेपी अब लोकसभा में पूर्ण बहुमत हासिल करने के लिए टीएमसी सांसदों को अपने पाले में लाने की फिराक में है?

पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस के विधायकों की बगावत क्या ऑपरेशन लोटस का हिस्सा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बीजेपी की नजर विधायकों पर नहीं, बल्कि सांसदों पर है। विधानसभा में बीजेपी को दो तिहाई बहुमत प्राप्त है। इसलिए टीएमसी से 60 और विधायकों के टूटने का राज्य की राजनीति पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ेगा। लोकसभा में टीएमसी के 29 और राज्यसभा में 13 सांसद हैं। लोकसभा के दो तिहाई यानी करीब 20 सांसद टूट जाते हैं तो ये बीजेपी के लिए गेम चेंजर साबित हो सकता है। लोकसभा में बीजेपी के 240 सांसद हैं जबकि अकेले दम पर बहुमत के लिए 272 चाहिए। टीएमसी के 20 सांसद शामिल हो जाएँ तो बीजेपी बहुमत के आँकड़े के क़रीब पहुँच जाएगी और एनडीए के सहयोगी दलों पर उसकी निर्भरता कम हो जाएगी। टीएमसी की एक सांसद काकोली घोष दस्तीदार पार्टी से खुली नाराज़गी जता चुकी हैं। उन्होंने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफ़ा दे दिया है।

इसी तरह 245 सदस्यों वाले राज्य सभा में बीजेपी के 113 सदस्य हैं और बहुमत के लिए 123 सदस्यों की जरूरत है। आम आदमी पार्टी के सात राज्य सभा सांसदों का दल बदल कराकर बीजेपी ने उच्च सदन में अपनी संख्या बढ़ा ली। लेकिन अभी भी बहुमत से दूर है। राज्यसभा में टीएमसी के 13 सदस्य हैं। हाल में संविधान के 131वें संशोधन के ज़रिए लोकसभा के सदस्यों की संख्या 850 करने से संबंधित विधेयक पास नहीं हो सका था। इस विधेयक के ज़रिए लोकसभा क्षेत्रों के सीमांकन को भी बदलने का प्रस्ताव था। यह विधेयक महिला आरक्षण के नाम पर लाया गया था।

इस विधेयक के गिरने से बीजेपी का प्लान 2029 लोकसभा चुनाव ध्वस्त हो गया था। इस विधेयक को दोबारा पास कराने के लिए दो तिहाई बहुमत की ज़रूरत है। बीजेपी की नज़र अब टीएमसी और डीएमके जैसी पार्टियों के सांसदों पर है। तमिलनाडु में हार के बाद डीएमके भी मुश्किल में है। खास कर इसलिए कि उसके गठबंधन में शामिल कांग्रेस और वाम पंथी पार्टियों ने मुख्यमंत्री जोसफ़ विजय को समर्थन दे दिया है। कांग्रेस तो विजय सरकार में शामिल भी हो गई है। डीएमके ने इंडिया गठबंधन से अलग होने का संकेत भी दे दिया है।

15 साल बाद विधानसभा चुनावों में हार के बाद टीएमसी में बौखलाहट दिखाई दे रही है। इसके कई नेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। उन्हें डर है कि सीबीआई और ईडी जैसी एजेंसियां उनके ख़िलाफ़ कार्रवाई कर सकती हैं। जो भगदड़ विधायकों में दिखाई दे रही है उसका अंदेशा सांसदों में भी दिखाई दे रहा है। बीजेपी सांसद सौमित्र खान का दावा है कि टीएमसी के 20 सांसद पार्टी के संपर्क में हैं। उन्होंने 50 विधायकों के भी पार्टी के संपर्क का दावा किया था। एक हद तक ये दावा सच साबित हुआ। उनका कहना है कि टीएमसी के बागी बीजेपी में शामिल होने को तैयार हैं। उन्होंने कहा था कि अगर बीजेपी चाहे तो टीएमसी 'कुछ दिनों में खत्म' हो सकती है। बंगाल बीजेपी के अध्यक्ष समीक भट्टाचार्य ने दावा किया है कि कई टीएमसी सांसद-विधायक पार्टी में शामिल होना चाहते हैं, लेकिन फिलहाल बीजेपी का 'दरवाजा बंद' है।

विधानसभा का चुनाव नतीजा आने के तुरंत बाद सौ से ज़्यादा टीएमसी पार्षदों ने विभिन्न नगर पालिकाओं से सामूहिक इस्तीफ़ा दे दिया। ये पार्टी में बगावत का पहला संकेत था। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के क्षेत्रीय, प्रशासनिक बैठक में बारासात से 4 बार की टीएमसी सांसद काकोली घोष दस्तीदार शामिल होने पहुंची थीं। उन्होंने पार्टी के सभी संगठनात्मक पदों से इस्तीफा भी दे दिया। उनका मुख्यमंत्री की बैठकों में शामिल होना बगावत का बड़ा संकेत माना जा रहा है। नदिया, कल्याणी बैठक में टीएमसी के 6 विधायक भी शामिल हुए। इनमें आनिसुर रहमान, डिगांगा से बुरहान-उल-मुकद्दीन, बदुरिया से बीना मंडल, स्वरूपनगर से सुरजीत मित्रा, बसीरहाट दक्षिण से उषारानी मंडल और हारोआ से अब्दुल मतीन शामिल हैं। उत्तर बंगाल में भी अलग बैठक में 13 टीएमसी विधायकों ने भाग लिया।

शुभेंदु अधिकारी की बैठक में शामिल होने वाले ये नेता कहते हैं कि वे 'प्रशासनिक और विकास कार्य' के लिए गए थे, लेकिन इसे टीएमसी में टूट का संकेत माना जा रहा है। इसका एक कारण तो ये है कि टीएमसी ने सरकार का पूर्ण बहिष्कार करने की घोषणा कर रखी है।

ममता बनर्जी के ख़िलाफ़ खुली बगावत शोभनदेव चट्टोपाध्याय को विपक्ष का नेता बनाने के मुद्दे पर शुरू हुई। 9 मई को पार्टी ने शोभनदेव को विपक्ष का नेता बनाने के लिए विधानसभा सचिवालय को एक पत्र सौंपा। इस पत्र पर टीएमसी के 70 विधायकों के हस्ताक्षर बताए गए थे। विधान सभा सूत्रों के अनुसार उस पर पार्टी महासचिव अभिषेक बनर्जी का भी हस्ताक्षर था, हालाँकि वे विधायक नहीं हैं। सचिवालय सूत्रों के अनुसार कई विधायकों का हस्ताक्षर आधिकारिक रिकॉर्ड से मैच नहीं कर रहा था। कुछ हस्ताक्षर ब्लॉक लेटर्स में थे, और कुछ विधायकों ने दावा किया कि उन्होंने कोई ऐसा प्रस्ताव साइन नहीं किया या बैठक में प्रस्ताव पास ही नहीं हुआ था। विधानसभा सचिवालय ने हेयर स्ट्रीट पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। सीआईडी ने जांच शुरू की, एसआईटी गठित की गई और अभिषेक बनर्जी को समन भेजा गया। वे बीमार बताकर नहीं पहुंचे। ऋतब्रत बनर्जी और संदीपन साहा ने स्पीकर से शिकायत की है कि 6 मई की बैठक में कोई प्रस्ताव पास नहीं हुआ। उनके हस्ताक्षर फर्जी हैं। उनकी शिकायत के आधार पर एफआईआर दर्ज करायी गयी। टीएमसी ने दोनों विधायकों को एंटी-पार्टी एक्टिविटी के आरोप में पार्टी से निष्कासित कर दिया।

कुछ अन्य टीएमसी विधायकों जैसे बहरूल इस्लाम, अरूप राय सुभाषिस दास ने सीआईडी को बताया कि हस्ताक्षर उनके नहीं हैं। स्पीकर ने शुरुआत में मीटिंग डेट और पर्याप्त हस्ताक्षर ना होने का हवाला देकर नेता विपक्ष की नियुक्ति रोक दी थी। और अब हस्ताक्षरों की सीआईडी जाँच की जा रही है। लेकिन ऋतब्रत बनर्जी ने जैसे ही 58 विधायकों की सूची सौंपी वैसे ही उन्हें विधायक दल और विपक्ष का नेता घोषित कर दिया गया।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

आरबीआई को अंदेशा और बढ़ेगी महंगाई!

● सप्लाई चेन में रुकावटों के चलते जताया अनुमान ● जीडीपी ग्रोथ भी 6.9 से घटाकर 6.6 फीसदी की

मुंबई (एजेंसी)। रिजर्व बैंक ने नए वित्त वर्ष की दूसरी मीटिंग में रेपो रेट में बदलाव नहीं किया है। इसे 5.25 फीसदी पर बरकरार रखा है। इससे लोन महंगे नहीं होंगे और ईएमआई नहीं बढ़ेगी। वहीं 2027 में महंगाई के अनुमान को 4.6 से बढ़ाकर 5.1 फीसदी कर दिया है। आरबीआई गवर्नर संजय मल्होत्रा ने आज 5 जून को इसकी जानकारी दी।

वेस्ट एशिया (मध्य पूर्व) में चल रहे तनाव और सप्लाई चेन में रुकावटों के चलते आरबीआई ने आर्थिक विकास दर यानी जीडीपी ग्रोथ के अनुमान को घटा दिया है। अब चालू वित्त वर्ष-27 के लिए जीडीपी ग्रोथ अनुमान को 6.9 से घटाकर 6.6 फीसदी कर दिया गया है। महंगाई के बढ़ते जोखिमों के बावजूद मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी ने अपनी नीति का रुख न्यूट्रल (तटस्थ) बनाए रखने का फैसला किया है। कमेटी स्थिति पर नजर रखते हुए डेटा के आधार पर आगे कदम उठाएगी।

गवर्नर संजय मल्होत्रा ने बताया कि हालांकि रिटेल महंगाई अभी टारगेट के दायरे में है, लेकिन वैश्विक तनाव के कारण फ्यूल (ईंधन) और एनर्जी की बढ़ती कीमतें आगे चलकर खुदरा बाजार और आम जनता की जेब पर दबाव डाल सकती हैं।

आरबीआई को कमजोर मानसून का डर

पश्चिम-दक्षिण मानसून में कमी (कम बारिश) के अनुमान को लेकर भी चिंता जताई गई है। इसका सीधा असर खेती-किसानी की पैदावार और ग्रामीण इलाकों में मांग पर पड़ सकता है। हालांकि, सरकार की फसल विविधीकरण यानी डायवर्सिफिकेशन जैसी योजनाएं इसके असर को कम करने में मदद करेंगी। अच्छी बात यह है कि घरेलू आर्थिक गतिविधियां अब भी मजबूत बनी हुई हैं। मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर का प्रदर्शन बेहतर है और जीडीपी रेशनलाइजेशन व स्थिर रोजगार के चलते शहरी क्षेत्रों में कंजम्पशन (खपत) को सहारा मिल रहा है। गवर्नमेंट सिक्योरिटीज के तहत फुली एक्सेसिबल रूट का दायरा बढ़ा दिया गया है। अब इसमें 10 साल तक के अलावा 15, 30 और 40 साल की अवधि वाले नए सरकारी बॉन्ड्स को भी शामिल किया जाएगा। पब्लिक सेक्टर कंपनियों द्वारा लिए जाने वाले एक्सटर्नल कमर्शियल बॉरोइंग को बढ़ावा देने के लिए 13 सितंबर 2026 तक रियायती फॉरेक्स स्वैप की सुविधा दी जाएगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर एक पेड़ मां के नाम 2.0 अभियान का किया शुभारंभ

हमारी जीवन पद्धति में प्रकट होता है पर्यावरण संरक्षण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी सनातन संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की मूल अवधारणा नीहित है। पांच तत्वों से बनी सृष्टि के संरक्षण के लिए हर तत्व का महत्व हमारे पूजा पाठ-भोजन और भजन की पद्धति में विद्यमान है। सनातन संस्कृति में एक पेड़ को 10 पुत्रों के बराबर माना गया है। हमारी जीवन पद्धति में पर्यावरण संरक्षण प्रकट होता है। राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी कार्य पूर्ण प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत प्रदेश में नदी, कुओं, बावड़ियों और तालाबों के संरक्षण के लिए पवित्र भाव से कार्य जारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 'एक पेड़ मां के नाम 2.0' अभियान के राज्य स्तरीय समारोह के शुभारंभ अवसर पर यह विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार, अपर मुख्य सचिव वन एवं पर्यावरण अशोक बर्णवाल विशेष रूप से उपस्थित थे।

राज्य स्तरीय पुरस्कार किये प्रदान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार मे दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इससे पहले, सभागार परिसर में स्वर्ण चंपा, सीता अशोक, रामफल और आंवला का पौधा रोपा। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कार्यक्रम में 8 श्रेणियों में 11 राज्य स्तरीय पर्यावरण पुरस्कार प्रदान किये।

16 जिलों की 500 बावड़ियों के प्रलेखन दस्तावेजों का किया गया विमोचन

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सर्कुलर इकॉनॉमी से संबंधित 5 कोर्स मॉड्यूल्स और एप्को तथा इन्टैक द्वारा प्रदेश में संचालित जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत 16 जिलों की 500 बावड़ियों के प्रलेखन दस्तावेजों का विमोचन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े नवाचारों, सर्कुलर इकोनॉमी तथा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों पर केंद्रित प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

बिहार के 2 लाख किसानों के खाते में आएंगे 200 करोड़

● कृषि मंत्री विजय सिन्हा का बड़ा ऐलान फसल का मिलेगा मुआवजा

पटना (एजेंसी)। बिहार समेत पूरे देश में तेज आंधी और बारिश आम जनजीवन अस्त-व्यस्त कर दिया है। खासतौर से किसानों के लिए मौसम में आए अचानक बदलाव ने आफत खड़ी कर दी है। फसलों को भारी नुकसान हुआ है। ऐसे में बिहार सरकार ने बड़ी पहल की है। मार्च के महीने में आंधी, ओलावृष्टि और बारिश की वजह से प्रभावित 13 जिलों के किसानों के लिए प्रदेश सरकार ने बड़ा फैसला लिया है। इन जिलों में जिन किसानों की फसलों को नुकसान हुआ है, उन्हें

कृषि इनपुट अनुदान योजना के तहत आर्थिक मदद की जाएगी। बिहार के कृषि मंत्री विजय सिन्हा ने जानकारी देते हुए बताया है कि 13 जिलों के 2 लाख किसानों को जल्द ही 200 करोड़ से ज्यादा की सहायता राशि डीओटी के माध्यम से भेजी जाएगी। इस योजना का लाभ गेहूं, चना, मसूर, मक्का, फल एवं सब्जी उत्पादकों को ही मिलेगा। अगर इन किसानों की फसल को नुकसान हुआ है तो उसके आधार पर ही उन्हें आर्थिक सहायता दी जाएगी और उनके खाते में पैसा भेजा जाएगा। इसके अलावा बिहार कृषि विभाग डीजल अनुदान योजना भी चलाती है, जिसके तहत किसानों को सिंचाई के लिए सब्सिडी मिलती है।

कृषि इनपुट अनुदान योजना की शर्तें

फसल मुआवजे का अनुदान सिर्फ परिवार का विवरण जमा कराने वालों को ही मिलेगा। परिवार से मतलब पति-पत्नी और नाबालिग बच्चों से है। योजना का लाभ अधिकतम 2 हेक्टेयर यानी 494 डिसिमिल भूमि पर ही मान्य होगा। किसान अपनी जमीन पर खेती कर रहा है, या वास्तविक खेतिहर है, इसका स्व घोषणा प्रमाण पत्र देना होगा। अगर खुद की जमीन है तो वंशावली दस्तावेज अमान्य है। ऐसी स्थिति में आवेदन वास्तविक खेतिहर के रूप में करें। योजना का लाभ लेने के लिए आधार से लिंक बैंक खाता अनिवार्य है।

विधानसभा चुनाव से पहले युवाओं को साधने की तैयारी

● 4 महीने में 38 हजार भर्तियां होंगी पूरी, 10 हजार नए पदों पर वैकेंसी की उम्मीद

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में 2027 विधानसभा चुनाव से पहले युवाओं को साधने के लिए योगी सरकार ने पूरी ताकत झोंक दी है। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के जरिए अलग-अलग विभागों में 38 हजार से ज्यादा पदों पर जल्द भर्ती प्रक्रिया पूरी करके राजनीतिक माहौल बनाने की तैयारी है। आयोग ने मार्च, 2026 तक 115 विभागों में 23 हजार 668 पदों के लिए परीक्षा और इंटरव्यू पूरा कर लिया है। जून से सितंबर के बीच 48 विभागों में 10 हजार 445 पदों पर परीक्षा और इंटरव्यू की तारीखें तय कर दी गई हैं। इसके अलावा कई विभागों में 3,685 पदों पर भर्ती के लिए वर्तमान में एप्लिकेशन फॉर्म भरे जा रहे हैं। अगले कुछ ही दिनों में करीब 10 हजार नए पदों पर भर्तियां आने की पूरी संभावना है। लोकसभा चुनाव के खराब रिजल्ट के बाद भर्तियां बढ़ीं मुख्य रूप से ग्रुप-सी के पदों पर होने वाली इन भर्तियों की रफ्तार में 2024 लोकसभा चुनाव के बाद तेजी आई है। सरकारी विभागों की ओर से खाली पदों के प्रस्ताव आयोग को नहीं भेजे थे।

रोजगार के जरिए युवाओं को साधने की तैयारी

सीनियर जर्नलिस्ट आनंद राय का मानना है कि सरकार मिशन रोजगार के जरिए युवाओं को साधने की कोशिश कर रही है। लोकसभा चुनाव के बाद जिस प्रकार विपक्ष ने सरकार के खिलाफ माहौल बनाया था, उसे ठीक करने की पूरी कोशिश हो रही है। सीएम योगी हर महीने नियुक्ति-पत्र वितरण समारोह कर रहे हैं। यूपी लोक सेवा आयोग, शिक्षा सेवा चयन आयोग लगातार वैकेंसी निकाल रहा है।

साल के अंत तक देश में खुलेंगे 500 इथेनॉल पंप

2027 तक 5000 का लक्ष्य, पेट्रोलियम मंत्री ने की घोषणा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने गुरुवार को बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि देश में इस साल दिसंबर तक लगभग 500 इथेनॉल डिस्पेंसिंग स्टेशन स्थापित किए जाएंगे। इस योजना का लक्ष्य 2027 तक इन स्टेशनों की संख्या को बढ़ाकर 5,000 तक पहुंचाना है। सरकार का यह कदम मुख्य रूप से फ्लेक्स फ्यूल वाहनों की पहुंच को तेज करने और आयातित ईंधन पर देश की निर्भरता को कम करने के उद्देश्य से उठाया गया है। पेट्रोलियम मंत्री ने यह घोषणा मारुति सुजुकी की वैगनआर के लॉन्च कार्यक्रम के दौरान की। यह भारत की पहली फ्लेक्स-फ्यूल कार है जो वर्तमान 20 प्रतिशत की सीमा से अधिक इथेनॉल मिश्रित ईंधन पर चलेगी।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 06 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

तमिलनाडु में भाजपा छोड़ते ही अन्नामलाई ने बनाई नई पार्टी

● अगला चुनाव लड़ने का ऐलान कहा- मतभेद थे, आलाकमान ने चुनाव तक रुकने को कहा था

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के अन्नामलाई ने शुक्रवार को नई पार्टी बनाने का ऐलान किया। सोशल मीडिया पर एक वीडियो मैसेज में अन्नामलाई ने कहा कि आज हम एक आंदोलन शुरू करने जा रहे हैं। हमारी राजनीतिक पार्टी तमिलनाडु में 2031 में अगला विधानसभा चुनाव लड़ेगी। मेरे लिए यह तय करना बहुत मुश्किल था कि मैं बीजेपी का सदस्य रहूं या तमिल लोगों से जुड़ा रहूं। मैंने 4 दिसंबर 2025 को पार्टी को बताया कि मैं इस्तीफा देने जा रहा हूं। पार्टी ने मुझसे कहा कि पहले चुनाव हो जाने दें, फिर जाएं। अन्नामलाई ने 2 जून को भाजपा से इस्तीफा दिया था। लेटर शुक्रवार को सामने आया। उन्होंने इस्तीफे की वजह भी बताई है।

मोदी से प्रभावित होकर भाजपा में आया था- पीएम मोदी जी के नेतृत्व से प्रेरित होकर मैं 6 साल पहले भाजपा में शामिल हुआ था। मेरा मकसद तमिलनाडु में बदलाव लाना और राज्य में राजनीति के तौर-तरीकों को बेहतर बनाना था। मैं बीजेपी नेतृत्व का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने मुझ जैसे युवा और अनुभवहीन व्यक्ति पर भरोसा करके बड़ी जिम्मेदारियां दी।

8 आईपीएस समेत 74 पुलिस अफसरों के तबादले

विधायक से विवाद में आए आयुष जाखड़ बने एएसपी, पति-पत्नी की जोड़ी जबलपुर पहुंची

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश सरकार ने पुलिस विभाग में बड़ा प्रशासनिक फेरबदल करते हुए 8 आईपीएस और राज्य पुलिस सेवा के 66 अधिकारियों समेत कुल 74 अफसरों के तबादले किए हैं। गृह विभाग ने शुक्रवार को इसके आदेश जारी किए। तबादलों का असर भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, उज्जैन और सतना समेत प्रदेश के करीब 30 जिलों पर पड़ा है। तबादला सूची में सबसे चर्चित नाम आईपीएस आयुष जाखड़ का है। करैरा (शिवपुरी) में एसडीओपी पद पर पदस्थ आयुष जाखड़ को प्रमोट कर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) जबलपुर बनाया गया है। आयुष जाखड़ पिछले महीने उस समय चर्चा में आए थे, जब पिछोर से भाजपा विधायक प्रीतम सिंह लोधी के बेटे दिनेश लोधी की थार से राहगीरों को टक्कर लगने के मामले में उन्होंने कार्रवाई की थी।

जबलपुर में साथ पदस्थ हुए पति-पत्नी-तबादला आदेश में आयुष जाखड़ की पत्नी और आईपीएस अधिकारी अनु बेनिवाल को भी जबलपुर भेजा गया है। अनु बेनिवाल ग्वालियर से स्थानांतरित होकर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जबलपुर बनाई गई हैं।

मिनी शुक्ला को प्रमोशन, पति के साथ भोपाल में पोस्टिंग- राजगढ़ जिले के नरसिंहगढ़ में पदस्थ एसडीओपी मिनी शुक्ला को प्रमोट कर अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त (जोन-2) भोपाल नगरीय पुलिस बनाया गया है। मिनी शुक्ला का विवाह पिछले वर्ष आईएएस अधिकारी सुमित पांडेय से हुआ था। सुमित पांडेय वर्तमान में भोपाल में अपर कलेक्टर हैं। नई पदस्थापना के बाद दोनों अधिकारी अब एक ही जिले में सेवाएं देंगे।

इन 8 आईपीएस अधिकारियों के तबादले

अनु बेनिवाल- एएसपी ग्वालियर से एएसपी जबलपुर।
ओमप्रकाश- लांजी (बालाघाट) से अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, जोन-3 इंदौर नगरीय पुलिस।
करणदीप- बैहर (बालाघाट) से एएसपी उज्जैन।
आयुष जाखड़- करैरा (शिवपुरी) से एएसपी जबलपुर।
गौरव पांडेय- सिंगरौली से एएसपी सतना।
मिनी शुक्ला- नरसिंहगढ़ (राजगढ़) से अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त, जोन-2 भोपाल नगरीय पुलिस।
राज कृष्णा- सबलगढ़ (मुरैना) से एएसपी महू, इंदौर ग्रामीण।
सुजावल जग्गा- सीएसपी धार से एएसपी ग्वालियर

66 राज्य पुलिस सेवा अधिकारियों को भी नई जिम्मेदारी

गृह विभाग ने राज्य पुलिस सेवा के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक स्तर के 66 अधिकारियों के भी तबादले किए हैं। इन्हें विभिन्न जिलों में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, पुलिस इकाइयों में एसपी तथा उप सेनानी के पदों पर पदस्थ किया गया है।

भारत ने दशकों तक अमेरिका का फायदा उठाया

● ट्रम्प बोले-अब हम टैरिफ से खूब पैसा कमा रहे

कहा- फिर भी डील करेंगे क्योंकि मुझे मोदी पसंद

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत के साथ व्यापार को लेकर कहा कि लंबे समय तक भारत ने अमेरिका पर ऊंचे टैरिफ लगाए और उसका फायदा उठाया। ट्रम्प ने दावा किया कि अब स्थिति बदल गई है और अमेरिका भारत से अच्छी कमाई कर रहा है। ट्रम्प ने आगे कहा कि अमेरिका और भारत के बीच जल्द ही एक बड़ा व्यापार समझौता भी हो सकता है, क्योंकि मैं मोदी को बहुत पसंद करता हूं। मोदी मेरे बहुत अच्छे दोस्त हैं। हमारे संबंध अच्छे हैं और हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं। ट्रम्प का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब अमेरिका की एक टीम हाल ही में नई दिल्ली में भारत सरकार के अधिकारियों के साथ कई दौर की बातचीत कर चुकी है। दोनों देश एक अस्थायी व्यापार समझौते पर सहमति बनाने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि व्यापार से जुड़े कुछ मुद्दों का जल्द समाधान किया जा सके।

भारत-अमेरिका में ट्रेड डील का खाका तैयार

भारत-अमेरिका में फरवरी 2026 में एक अंतरिम व्यापार समझौता पर सहमति बनी थी। इसका मकसद लंबे समय से अटके व्यापारिक मुद्दों को सुलझाना था। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने ट्रम्प के कुछ टैरिफ को अवैध बता दिया। इसके बाद साफ नहीं हो रहा था कि कौन से टैरिफ लागू रहेंगे, कौन से नहीं। इसका असर अमेरिका-भारत के व्यापार समझौते पर पड़ा। अब तक अंतरिम व्यापार समझौता फाइनल नहीं हो पाया है।

अमेरिका भारत पर 12.5 फीसदी टैरिफ लगाने की तैयारी में

समझौतों को लेकर बातचीत के बीच एक नई मुश्किल भी खड़ी हो गई है। अमेरिका ने कुछ देशों पर अतिरिक्त आयात शुल्क (टैरिफ) लगाने का प्रस्ताव रखा है। अमेरिका का कहना है कि ये देश जबरन मजदूरी से जुड़े मामलों को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहे हैं। इस प्रस्तावित सूची में भारत का नाम भी शामिल है। अगर यह फैसला लागू होता है, तो अमेरिका जाने वाले भारतीय सामान पर 12.5 फीसदी अतिरिक्त शुल्क लग सकता है। इससे भारतीय उत्पाद अमेरिकी बाजार में महंगे हो सकते हैं और निर्यातकों पर असर पड़ सकता है। भारत सरकार का कहना है कि अभी इस अतिरिक्त शुल्क को लेकर कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है। अमेरिका पहले इस प्रस्ताव पर लोगों और संबंधित पक्षों की राय लेगा, उसके बाद ही अंतिम निर्णय करेगा।

बरहामपुर से चुनाव लड़ना चाहती हैं ममता बनर्जी !

मांगा यूसुफ पठान से इस्तीफा पूर्व क्रिकेटर का इनकार

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल चुनावों में करारी हार और विधायकों में विधायकों के बागी गुट बना लेने के बाद ममता बनर्जी अपने सियासी जीवन में सबसे मुश्किल वक्त से गुजर रही हैं। अटकलें लग रही है कि विधायकों की तरह ही सांसदों में भी बगावत हो सकती है। इसकी अटकलें कोलकाता से दिल्ली तक लग रही हैं। संभावना जताई रही है कि मानसूत्र सत्र से पहले खेला हो सकता है। इस सब के बीच पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बड़ी चर्चा सामने आई है। इसमें कहा जा रहा है कि टीएमसी पार्टी को बचाने के लिए ममता बनर्जी खुद लोकसभा सदस्य बनना चाहती हैं। वह बहरामपुर से चुनाव लड़ना चाहती हैं। अभी यहां से पूर्व क्रिकेटर यूसुफ पठान सांसद हैं। टीएमसी के पास 28 लोकसभा सांसद और 13 राज्यसभा एमपी हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, ममता बनर्जी ने बेहरामपुर से चुनाव लड़ने के लिए यूसुफ पठान से इस्तीफा देने को कहा, जिसे पूर्व क्रिकेटर ने खारिज कर दिया है।

यूसुफ पठान सीट खाली करने को नहीं तैयार

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो ममता बनर्जी भले ही बहरामपुर से लड़ना चाहती हैं लेकिन गुजरात के वडोदरा के रहने वाले यूसुफ पठान इसके लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने इस्तीफा देने की संभावना से इनकार कर दिया है। 2024 लोकसभा चुनावों में यूसुफ पठान ने ममता बनर्जी के बल पर ही बरहरामपुर से जीत हासिल की थी। तब उन्होंने कांग्रेस के कद्दावर नेता अधीर रंजन चौधरी को हराया था। बहरामपुर सीट 70 फीसदी मुस्लिम बहुल है।

दोषी है तो फांसी दे दो, सड़क पर तमाशा क्यों?

● कमर में रस्सी बांधकर घुमाने पर हाईकोर्ट सख्त ● वेस्ट बंगाल की बीजेपी सरकार को लगाई फटकार

कोलकाता (एजेंसी)। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि अपराधी होने का आरोप किसी व्यक्ति के मौलिक अधिकारों को समाप्त नहीं करता। इसलिए पुलिस को कानून के दायरे में रहकर कार्रवाई करनी चाहिए और किसी आरोपी को सार्वजनिक रूप से अपमानित नहीं किया जा सकता। बंगाल में भाजपा सरकार के आने के बाद अपराध पर लगाम की तैयारी है।

पुलिस किसी का सम्मान नहीं छीन सकती

सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने कानूनी कार्रवाई और सार्वजनिक अपमान के बीच स्पष्ट अंतर रेखांकित किया। अदालत ने माना कि अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना प्रशासन का अधिकार है, लेकिन इसके नाम पर किसी व्यक्ति की गरिमा और मानवाधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। जस्टिस जॉय सेनगुप्ता ने पुलिस के इस रवैये की कड़ी आलोचना करते हुए कहा, पुलिस आरोपियों को गिरफ्तार कर सकती है और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर सकती है। अगर वे दोषी पाए जाते हैं तो अदालत उन्हें फांसी तक की सजा दे सकती है। लेकिन गिरफ्तारी के नाम पर आत्मसम्मान को चोट नहीं पहुंचा सकती है।

भाजपा सरकार बनने के बाद बदला पुलिस का तरीका

मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के नेतृत्व में भाजपा सरकार के गठन और तृणमूल शासन के अंत के बाद राज्य में कानून-व्यवस्था की स्थिति सुधारने की प्रक्रिया शुरू हुई है। सरकार का दावा है कि रंगदारी, भ्रष्टाचार और सिंडिकेट राज से जुड़े असामाजिक तत्वों के खिलाफ राज्य पुलिस ने 'जीरो टॉलरेंस' की नीति अपनाई है। हालांकि, हाईकोर्ट में दायर याचिकाओं में आरोप लगाया गया है कि अपराध के खिलाफ कार्रवाई के नाम पर कुछ मामलों में पुलिस ने कानूनी प्रक्रिया की सीमाओं को पार किया है। इसी संदर्भ में अदालत ने आरोपियों को रस्सी बांधकर सार्वजनिक रूप से घुमाने की घटनाओं पर राज्य सरकार से जवाब मांगा है और स्पष्ट किया है कि कानून का पालन करते हुए ऐसा न हो।

1.76 लाख बूथ पालक, 27633 शक्ति केंद्र

● यूपी में बंगाल जैसी जीत के लिए बीजेपी का मेगा प्लान

● यूपी चुनाव से पहले एक नई टीम बनाना चाहती है भाजपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल और असम में हुए हालिया विधानसभा चुनाव नतीजों से गदगद भाजपा अब देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में न सिर्फ जीत की हैट्रिक लगाने का ख्वाब देख रही है बल्कि बंगाल जैसी प्रचंड जीत की कोशिशों में जुट गई है। हालांकि, यूपी में विधानसभा चुनाव होने में अभी करीब एक साल बाकी हैं, लेकिन पार्टी ने अभी से ही तैयारियां शुरू कर दी हैं। पश्चिम बंगाल और असम चुनावों में 'माइक्रो-मैनेजमेंट' मॉडल की सफलता से उत्साहित भाजपा अब इसे उत्तर प्रदेश में बड़े पैमाने पर लागू करने जा रही है।

इसी रणनीति के तहत पार्टी ने राज्यभर में लगभग 1.76 लाख बूथ पालक नियुक्त करने और जमीनी स्तर पर संगठन को सक्रिय करने का फैसला किया है। हाल ही में लखनऊ में बैठक हुई है।

हाइपर-लोकल लेवेल पर चुनाव प्रचार

इन दोनों उपायों के अलावा सूक्ष्म स्तर तक मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए भाजपा ने बूथों का वर्गीकरण करने का भी फैसला किया है। इसके तहत सभी बूथों को मजबूत, प्रतिस्पर्धी और कमजोर श्रेणियों में बांटा जाएगा ताकि कमजोर क्षेत्रों में अतिरिक्त संसाधन और निगरानी तैनात की जा सके। इसके अतिरिक्त भाजपा हाइपर-लोकल लेवेल पर चुनाव प्रचार करने की योजना पर भी काम कर रही है। इसके तहत स्थानीय मुद्दों के आधार पर बूथ स्तर पर विशेष प्रचार अभियान चलाया जाएगा। लखनऊ से दिल्ली तक बैठकों के दौर में सांगठनिक कामकाज को धार देने के लिए जोन वाइज प्रभारियों की नियुक्ति पर भी विचार चल रहा है। सूत्रों ने बताया कि बैठक में 2024 के लोकसभा चुनावों के दौरान सामने आई कमियों को दूर करने पर भी ध्यान दिया गया।

● **बीजेपी का मेगा प्लान, चार बातों पर ध्यान-** पार्टी ने प्रचंड जीत की रणनीति बनाते हुए चार प्रमुख बातों पर ध्यान दिया है। इसके तहत पन्ना प्रमुखों की नियुक्ति करने, शक्ति केंद्रों की स्थापना करने, बूथों का वर्गीकरण करने और हाइपर-लोकल लेवेल पर चुनाव प्रचार करने का फैसला किया गया है। बता दें कि पन्ना प्रमुख प्रणाली में हरेक पन्ना प्रमुख को मतदाता सूची के एक पन्ने पर दर्ज 30 से 35 मतदाताओं की जिम्मेदारी दी जाएगी, जिनसे वे नियमित संपर्क बनाए रखेंगे। इसके अतिरिक्त शक्ति केंद्र प्रणाली में 5 से 7 बूथों के समूहों को मिलाकर एक शक्ति केंद्र बनाने और उसके लिए एक समन्वयक तैनात किए जाने की योजना है, जो अनिश्चित मतदाताओं को प्रभावित करने का काम करेंगे।

● **एसआईआर के मद्देनजर विशेष निर्देश-** इन सबसे अलग विशेष गहन मतदाता पुनरीक्षण (एसआईआर) को ध्यान में रखते हुए प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को खास निर्देश दिया है कि वे उन पात्र मतदाताओं की पहचान करें, जिनके नाम मतदाता सूची से गायब हैं। प्रदेश अध्यक्ष ने निर्देश दिया है कि कार्यकर्ता फॉर्म-6 के माध्यम से उन मतदाताओं के नाम जुड़वाने में उनकी मदद करें। साफ है कि 2027 के महा रण में भाजपा उत्तर प्रदेश की सत्ता में बने रहने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाह रही।

जिलाध्यक्षों को निर्देश, बंगाल मॉडल अपनाएं

पार्टी सूत्रों के मुताबिक, पार्टी ने सभी जिला प्रमुखों को निर्देश दिया है कि वे बूथ समितियों, पन्ना प्रमुखों, शक्ति केंद्रों और स्थानीय स्तर के राजनीतिक अभियानों पर नए सिरे से ध्यान देते हुए उत्तर प्रदेश में बंगाल चुनाव मॉडल को अपनाएं। बीजेपी का लक्ष्य आगामी महीनों में राज्य के सभी 1,62,459 विधानसभा बूथों का आंकलन करना है, जिसमें 1,918 मंडलों में फैले 27,633 शक्ति केंद्र भी शामिल हैं। इस कवायद में मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन के बाद बनाए गए लगभग 14,000 नए बूथ भी शामिल होंगे। पार्टी नेताओं ने निर्देश दिया कि वे तुरंत बूथ समितियां बनाएं।

मणिपुर फिर दहला, तीन ग्रामीणों की हत्या

● भारी हथियारों के साथ आए उग्रवादी, सात घर फूंके

कांगपोकपी (एजेंसी)। मणिपुर में जातीय तनाव और हिंसा का दौर थमने का नाम नहीं ले रहा है। शुक्रवार तड़के राज्य के कांगपोकपी जिले में एक बड़ा संदिग्ध उग्रवादी हमला हुआ है। इस खौफनाक वारदात में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 7 घरों को आग के हवाले कर दिया गया। राज्य में कुकी जनजातियों के शीर्ष निकाय कुकी इनपी मणिपुर ने इस घटना की जानकारी दी है। संगठन की ओर से जारी एक प्रेस बयान के मुताबिक, शुक्रवार तड़के करीब 4 बजे भारी हथियारों से लैस उग्रवादियों ने लोइबोल खुल्लेन गांव पर हमला कर दिया। संगठन ने आरोप लगाया है कि इस वारदात को उग्रवादी और उसके प्रॉक्सी संगठन के कैडरों ने अंजाम दिया है। संगठन के मुताबिक, इस हमले में तीन नागरिकों की जान चली गई, सात घर जलकर खाक हो गए और लोगों की संपत्तियों को भारी नुकसान पहुंचा है।

● **मणिपुर में 6 नागा बंधकों की रिहाई की मांग तेज-** मणिपुर में जारी संकट के बीच अब 6 नागा नागरिकों के अपहरण का मुद्दा गरमा गया है। इन बंधकों की सुरक्षित वापसी के लिए राज्य में लगातार विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं और सरकार पर दबाव बनाया जा रहा है। ऑल नागा स्टूडेंट्स एसोसिएशन, मणिपुर ने शुक्रवार को राज्य सरकार से मांग की है कि वह सभी छह नागा बंधकों को तुरंत रिहा कराए और उन्हें उनके परिवारों को सौंपे।

● **महिलाओं ने निकाला विरोध मार्च, राज्यपाल को सौंपा ज्ञापन-** इससे पहले 28 मई को ऑल मणिपुर नुपी मारुप नाम के संगठन ने बंधकों की रिहाई की मांग को लेकर इंफाल के इरावत भवन पर एक बड़ी विरोध रैली निकाली थी। प्रदर्शनकारियों ने हाथों में बैनर और तख्तियां लेकर अपहरण की घटनाओं को रोकने की अपील की।

सम्राट सरकार ने लालू-राबड़ी की जेड+ सुरक्षा खत्म की

● तेजप्रताप को मिलेगा अब एक बॉडीगार्ड बंगला विवाद के बीच घटी सिक्योरिटी

पटना (एजेंसी)। सम्राट सरकार की तरफ से राबड़ी आवास को खाली करने का नोटिस दिया गया है। इस बीच लालू परिवार की सुरक्षा घटा दी गई है। राजद के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव और उनकी पत्नी और पूर्व सीएम राबड़ी देवी की जेड प्लस सिक्योरिटी खत्म कर दी गई है। दोनों को अब बिहार पुलिस की विशेष सुरक्षा व्यवस्था दी गई है, जिसमें एस्कॉर्ट, बुलेट प्रूफ कार और 8 से 16 गार्ड शामिल हैं। लालू यादव के बेटे और जनशक्ति जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेज प्रताप यादव की भी जेड कैटेगरी की सुरक्षा खत्म कर दी गई है। सरकार ने अब उन्हें सिर्फ एक बॉडीगार्ड दिया है। **तेजस्वी की सुरक्षा में कोई बदलाव नहीं-** बिहार विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव, उनकी पत्नी राजश्री और बहन मीसा भारती की सुरक्षा में कोई बदलाव नहीं किया गया है। तेजस्वी पहले की तरह वाई प्लस श्रेणी की सिक्योरिटी (एस्कॉर्ट) के साथ मिलती रहेगी।

पूरी हुई पवन खेड़ा की तपस्या, मिला टिकट

● राज्यसभा चुनाव ● हिमंत से भिड़ने का पार्टी ने दिया बड़ा ईनाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी ने पवन खेड़ा को राज्यसभा का टिकट दिया है। इस खबर को महज एक हार्ड न्यूज नहीं कहा जा सकता। वजह यह है कि इस टिकट के पीछे पवन खेड़ा की सालों की तपस्या है। वैसे तो पार्टी की प्रेस कॉन्फ्रेंस और न्यूज चैनलों पर वे सालों से पार्टी का पुरजोर तरीके से पक्ष रखते आ रहे हैं, लेकिन हाल के दिनों में उनकी मानो एक फायरब्रैंड कांग्रेसी के रूप में छवि बन गई है। अब राज्यसभा टिकट के रूप में उन्हें पार्टी आलाकमान से बड़ा इनाम मिला है। गौरतलब है कि कांग्रेस आलाकमान ने 18 जून को होने वाले राज्यसभा चुनाव के लिए जारी अपनी 7 उम्मीदवारों की सूची में पवन खेड़ा का नाम शामिल किया है। उन्हें कर्नाटक से मैदान में उतारा गया है। इसके साथ ही पवन खेड़ा अपने संसदीय पारी की शुरुआत भी करने जा रहे हैं। उन्हें राज्यसभा टिकट मिलते ही राजनीतिक गलियारों में एक वाक्य खूब प्रसिद्ध हो रहा है-पवन खेड़ा की तपस्या पूरी हुई। कांग्रेस के सबसे मुखर चेहरों में शामिल पवन खेड़ा पिछले कई मौकों पर राज्यसभा टिकट की रेस में आगे रहे थे।

हिमंत से ली थी सीधी टक्कर

पिछले कुछ महीनों में असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के साथ तीखे राजनीतिक और कानूनी विवादों का सामना करने के बावजूद खेड़ा फ्रंटफुट पर रहकर पार्टी का पक्ष रखते रहे। उनपर गिरफ्तारी की तलवार भी अटकी। पिछले महीने जब हिमंत की पत्नी से जुड़े मानहानि और जालसाजी के एक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें अग्रिम जमानत दे दी, तब दिल्ली पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत हुआ था। इस दौरान 'शेर आया, शेर आया' के नारे भी लगे। पूरे घटनाक्रम से उनकी जुझारू नेता के रूप में छवि और मजबूत हुई। लोग टिकट को हिमंत से सीधी टक्कर का ईनाम भी कह रहे हैं।

आज की सजगता, कल का सुरक्षित पर्यावरण, छोटे-छोटे प्रयासों से भी बड़ा फर्क पड़ता है

पर्यावरण संरक्षण केवल अभियान नहीं, भारतीय संस्कृति और नागरिक कर्तव्य का हिस्सा : जिला न्यायाधीश अमित निगम

भोपाल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सुख-शांति भवन नीलबड़ केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण संरक्षण, जल संवर्धन एवं वृक्षारोपण को समर्पित भव्य जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागृति लाने हेतु नाट्य प्रस्तुति, रैली, वृक्षारोपण, प्रेरक उद्बोधन एवं संकल्प समारोह आयोजित किए गए।

कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। मुख्य अतिथि देवास जिला न्यायाधीश देवास श्री अमित निगम ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में पृथ्वी को माता का दर्जा प्राप्त है। प्राचीन काल में लोग प्रतिदिन पृथ्वी का स्पर्श कर उसे नमन करते थे और यह भावना व्यक्त करते थे कि हे पृथ्वी माता, मैं अपना भार तुम्हारे ऊपर रख रहा हूँ, मुझे क्षमा करना। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है, इसलिए हमारे देश में नदियों, पर्वतों, वृक्षों एवं प्रकृति के विविध स्वरूपों की पूजा की जाती है।

उन्होंने कहा कि संभवतः इसी भावना को जागृत रखने के लिए भगवान ने गीता में प्रकृति के विभिन्न स्वरूपों में अपनी उपस्थिति का वर्णन किया, ताकि मनुष्य उनका दोहन करने के स्थान पर सम्मान करना सीखे। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अभाव दिखाई देता है। लोग अपने वाहनों की सर्विसिंग तो समय पर करा लेते हैं, लेकिन प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र बनवाने में लापरवाही करते हैं। इसी प्रकार धार्मिक आस्था के नाम पर नदियों में विभिन्न प्रकार का कचरा प्रवाहित कर दिया जाता है, जिससे जल स्रोत प्रदूषित होते हैं।

श्री निगम ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 का उल्लेख करते हुए कहा कि प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का मौलिक कर्तव्य है । प्रकृति की सेवा ही वास्तव में ईश्वर की सेवा है।

इस अवसर पर जानी-मानी समाजसेवी श्रीमती बबीता जी ने कहा कि पर्यावरण केवल हमारे चारों ओर की प्रकृति का नाम नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन, स्वास्थ्य, सुख-समृद्धि और आने वाली पीढ़ियों के भविष्य का आधार है। जब प्रकृति सुरक्षित होगी तभी मानवता का भविष्य भी सुरक्षित रह सकेगा।

आदरणीय वरिष्ठ राजयोगिनी नीता दीदी जी, प्रभारी राजयोग भवन एवं डायरेक्टर सुख-शांति भवन ने कहा कि आज का मनुष्य अपने अधिकारों की बात तो करता है, लेकिन अपने कर्तव्यों को भूलता जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण की शुरुआत बाहरी परिवर्तन से नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन से होती है। उन्होंने कहा कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने मन के प्रदूषण को समाप्त करने का संकल्प ले, तो बाहरी पर्यावरण का प्रदूषण भी स्वतः कम होने लगेगा। उन्होंने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि परिवर्तन की शुरुआत स्वयं से करनी होगी और एक-एक व्यक्ति की जागरूकता मिलकर बड़े सामाजिक परिवर्तन का आधार बनेगी।

दीदी जी ने दैनिक जीवन में पर्यावरण संरक्षण के अनेक व्यावहारिक उपाय भी बताए। उन्होंने कहा कि घरों में नलों से टपकने वाली पानी की बूंदें प्रतिवर्ष हजारों लीटर जल की बर्बादी का कारण बनती हैं। उन्होंने सिंगल यूज़ प्लास्टिक के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए R – Reduce, Reuse, Recycle का सूत्र अपनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक का उपयोग कम करें, जिन वस्तुओं का पुनः उपयोग किया जा सकता है उनका पुनः उपयोग करें तथा जिन्हें पुनर्चक्रित किया जा सकता है उन्हें रिसाइकल करें। उन्होंने सभी को BBC – Bottle, Bag, Cloth का सूत्र अपनाने, ऊर्जा संरक्षण हेतु शीघ्र सोने एवं प्राकृतिक प्रकाश का अधिकाधिक उपयोग करने तथा किसी भी वस्तु को फेंकने से पहले यह विचार करने की प्रेरणा दी कि उसका पुनः उपयोग कैसे किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन का कारण बनते हैं।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों द्वारा सीता माता एवं लव-कुश पर आधारित प्रभावशाली नाट्य प्रस्तुति दी गई, जिसमें वृक्षों के महत्व तथा पेड़ों की अंधाधुंध कटाई के दुष्परिणामों को दर्शाते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इसके पश्चात पर्यावरण जागरूकता रैली निकाली गई, जिसमें प्रतिभागियों ने पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ, हरियाली ही खुशहाली है जैसे नारों के माध्यम से जनसामान्य को जागरूक किया।

इस अवसर पर राजा भोज पार्क में आदरणीय विधायक श्री सबनानी जी के साथ सामूहिक वृक्षारोपण भी किया गया तथा अधिकाधिक पौधे लगाने और उनकी सुरक्षा का संकल्प लिया गया।

कार्यक्रम में बीके साक्षी दीदी ने प्रभावशाली कमेंट्री के माध्यम से सभी को शुभ संकल्प दिए जिसके माध्यम से प्रकृति तक शुभकामनाएं एवं सकारात्मक संकल्प पहुंच गए एवं सच्चे हृदय से प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं सादर धन्यवाद व्यक्त किया गया।

वहीं बीके आराधना दीदी ने प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उपस्थित सभी नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण, जल बचत, स्वच्छता एवं वृक्ष संवर्धन की प्रतिज्ञाएँ दिलाईं।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों एवं पर्यावरण प्रेमियों ने सहभागिता करते हुए पर्यावरण संरक्षण को जन-आंदोलन बनाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का प्रभावी मंच संचालन आदरणीय रामकुमार भाई जी द्वारा किया गया। अपने संबोधन में उन्होंने पर्यावरण संरक्षण को दैनिक जीवन की आदतों से जोड़ते हुए कहा कि बड़े परिवर्तन की शुरुआत छोटे-छोटे संकल्पों से होती है। उन्होंने जल संरक्षण, ऊर्जा बचत एवं सतत जीवनशैली अपनाने पर विशेष बल दिया। अनावश्यक रूप से जलती रहने वाली विद्युत ऊर्जा भी प्राकृतिक संसाधनों पर अतिरिक्त भार डालती है। उन्होंने सभी से पानी बचाने, बिजली का संयमित उपयोग करने, समय पर सोने तथा अधिक से अधिक प्राकृतिक प्रकाश एवं वायु का उपयोग करने का आह्वान किया।

रामकुमार भाई जी ने पर्यावरण संरक्षण हेतु एक सरल सूत्र देते हुए कहा कि किसी भी वस्तु को फेंकने से पहले स्वयं से पूछें–क्या इसका पुनः उपयोग किया जा सकता है? उन्होंने बताया कि पर्यावरण संरक्षण केवल बड़े अभियानों से नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में अपनाई गई छोटी-छोटी सकारात्मक आदतों से संभव है। उनके संदेश का सार था– छोटे-छोटे प्रयासों से भी बड़ा फर्क पड़ता है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर एसबीआई भोपाल मंडल की हरित पहल

पर्यावरण संरक्षण के संकल्प के साथ एसबीआई भोपाल मंडल ने मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

भोपाल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) भोपाल मंडल द्वारा पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के संवर्धन एवं सतत विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करते हुए पूरे मंडल में व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों के माध्यम से कर्मचारियों एवं समाज को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। मुख्य कार्यक्रम भोपाल स्थित रेवा परिसर में आयोजित किया गया, जहां भोपाल मंडल के मुख्य महाप्रबंधक श्री प्रभाष कुमार सुबुद्धि तथा महाप्रबंधक (नेटवर्क-आईआईआई) श्री मनोज कुमार ने पौधारोपण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी निभाना हम सभी का नैतिक दायित्व है तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अधिक से अधिक वृक्ष लगाने एवं उनकी देखभाल का संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम की एक महत्वपूर्ण विशेषता एसबीआई सस्टेनेबिलिटी प्लेज का सामूहिक वाचन रहा। भोपाल मंडल के सभी कार्यालयों एवं शाखाओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पर्यावरण-अनुकूल कार्यप्रणालियों को अपनाने, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, ऊर्जा एवं जल की बचत, अपशिष्ट में कमी तथा सतत विकास को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर भोपाल मंडल के अंतर्गत सभी प्रशासनिक कार्यालयों, क्षेत्रीय व्यवसाय कार्यालयों एवं शाखाओं में भी वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी करते हुए विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाए तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी सक्रिय भूमिका का परिचय दिया। इन प्रयासों का उद्देश्य हरित आवरण को बढ़ाना, जैव विविधता को प्रोत्साहित करना तथा समाज में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करना है। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा पर्यावरण संरक्षण को अपने सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सतत विकास की नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। इसी दिशा में बैंक समय-समय पर हरित पहल, ऊर्जा संरक्षण, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा तथा पर्यावरण-अनुकूल गतिविधियों के माध्यम से प्रकृति संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास करता रहा है। विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित ये कार्यक्रम एसबीआई भोपाल मंडल की पर्यावरण संरक्षण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। बैंक का यह प्रयास न केवल हरित एवं स्वच्छ वातावरण के निर्माण में योगदान देगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, संतुलित भविष्य सुनिश्चित करने की दिशा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

स्वच्छ और हरित पर्यावरण के लिए पेड़ लगाएं और प्रकृति के अनुकूल अपनाएं जीवन शैली : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों से विश्व पर्यावरण दिवस पर जल, जंगल और जमीन के संरक्षण का संकल्प लेने का आह्वान किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया पर जारी अपने संदेश में कहा कि पेड़-पौधे, नदियां, पर्वत और वन्य जीव हमारे जीवन के आधार हैं। भारतीय परंपरा ने हमें प्रकृति के साथ रहने का मार्ग दिखाया है। स्वच्छ और हरित पर्यावरण के लिए पेड़ लगाएं। प्रकृति के अनुकूल जीवन शैली अपनाएं और इसके प्रति लोगों को भी जागरूक करें।

विश्व पर्यावरण दिवस पर उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने जेपी अस्पताल परिसर में किया पौधारोपण

भोपाल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने जयप्रकाश जिला चिकित्सालय परिसर में पौधारोपण किया। इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन की शपथ भी दिलाई। इस अवसर पर लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, अपर मुख्य सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री अशोक बर्णवाल, आयुक्त लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री धनराजू एस., स्थानीय पार्षद श्रीमती बृजला सचान, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. मनीष शर्मा, सिविल सर्जन डॉ. संजय जैन सहित अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी अस्पताल परिसर में पौधारोपण किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि आज लगाया गया एक पौधा भावी पीढ़ियों के लिए सबसे मूल्यवान उपहार है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन एवं स्वच्छता के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों से देश में जन-जागरूकता बढ़ी है, इस दिशा में नई ऊर्जा का संचार हुआ है। उन्होंने सभी नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने एवं उनकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया। उन्होंने सार्वजनिक स्वच्छता के नियमों का पालन करने, जल एवं ऊर्जा संरक्षण को अपनाने तथा पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली विकसित करने पर भी बल दिया। उल्लेखनीय है कि विश्व पर्यावरण दिवस प्रतिवर्ष 5 जून को पर्यावरण की सुरक्षा एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से विश्वभर में मनाया जाता है। वर्ष 1972 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा पर्यावरण संबंधी वैश्विक राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना को प्रोत्साहित करने के लिए इस दिवस को मनाने की घोषणा की गई थी। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस इंस्पायर्ड बाय नेचर, फ़ॉर क्लाइमेट, फॉर अवर फ्यूचर थीम के साथ मनाया जा रहा है।

डिंडोरी में आजीविका ग्राम संगठन और डॉट्स एंड डैशेज के बीच हुआ एमओयू

गोंड चित्रकला को ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से मिलेगा वैश्विक मंच : मंत्री पटेल

भोपाल (नप्र)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास और श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि गोंड चित्रकला हमारे जनजातीय समाज की एक प्राचीन और गौरवशाली कला है। बुधवार को डिंडौरी जिले के कलेक्ट्रेट ऑडिटोरियम में आयोजित अमेज़न ई-कारीगर मंच के शुभारंभ और समझौता ज्ञापन हस्ताक्षर समारोह को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए उन्होंने यह बात कही। इस अवसर पर पंचायत एवं ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह सहित विभाग एवं जिले के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

वैश्विक पहचान और जीआई टैग पर जोर- मंत्री श्री पटेल ने कहा कि गोंडी कला आधारित उत्पादों को अमेज़न ई-कारीगर सहित विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध करने से इस कला को वैश्विक बाजार तक पहुंच मिलेगी। इससे न केवल चित्रकारों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य और सम्मान

मिलेगा, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी विशेष पहचान बनेगी। उन्होंने इस पुरातन और जीवंत कला को जीआई टैग दिलाने के लिए भी आवश्यक प्रयास करने की बात कही।

आर्थिक सशक्तिकरण और कला संरक्षण के लिए ऐतिहासिक कदम- गोंडी चित्रकला के प्रमुख केंद्र डिंडौरी के पाटनगढ़ ग्राम के कलाकारों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। कार्यक्रम में आजीविका ग्राम संगठन पाटनगढ़ और डॉट्स एंड डैशेज संस्था के मध्य एक एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। ग्राम पाटनगढ़ के 157 परिवार प्रत्यक्ष रूप से इस कला से जुड़े हुए हैं, जिनमें 85 महिला और 72 पुरुष कलाकार शामिल हैं। इस साझेदारी का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक गोंडी कला का संरक्षण, संवर्धन और बाजार का विस्तार करना है।

आय में 10 गुना वृद्धि और ग्रामीण उद्यमिता का लक्ष्य- यह समझौता कलाकारों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। डॉट्स एंड डैशेज के व्यवस्थित विपणन सहयोग से वर्तमान में चित्रकार परिवारों की औसत वार्षिक आय 35 हजार रूपये से बढ़कर 70 हजार रूपये तक पहुंच गई है। अब उत्पादों को ऑनलाइन बिक्री मंचों पर उपलब्ध कराने से इनकी वैश्विक मांग बढ़ेगी, जिससे आगामी समय में कलाकारों की आय में 10 गुना तक वृद्धि होने की संभावना है। यह पहल डिंडौरी जिले में कला आधारित आजीविका का एक सफल उदाहरण स्थापित करेगी।

युवक की संदिग्ध हालात में मौत

कर्ज से तंग आकर दस दिन पहले जहर खाया था, अस्पताल से छुट्टी के बाद अचानक तबीयत बिगड़ी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मंगलवारा में रहने वाले युवक ने कर्ज से तंग आकर दस दिन पहले सल्फास खा लिया था। परिजनों ने उल्टियां करता देखने के बाद उसे अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां दो दिन चले इलाज के बाद उसकी मौत हो गई। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पिता ने कर्ज से चलते तकादेदारों से तंग आकर जहर खाने के आरोप लगाए हैं।

मंगलवारा थाना पुलिस के मुताबिक फराज अंसारी पिता शकील अंसारी (21) पटेल कॉलोनी भारत टॉकीज के पास का रहने वाला था और कुशन का काम करता था। 10 दिन पहले युवक ने सल्फास की गोलियां घर में खा ली थीं। उल्टियां करता देखने के बाद परिजनों ने उसे अस्पताल पहुंचाया था। दो दिन चले इलाज के बाद छुट्?टी हो गई थी। गुरुवार रात को अचानक तबीयत बिगड़ी थी। जिसके बाद अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। डॉक्टरों ने बताया कि सल्फास के कारण आंतो और लिवर में इन्फेक्शन हो गया था। जिससे उसकी मौत हो गई।

पिता बोले- कर्ज से परेशान था

मृतक के पिता शकील अंसारी ने बताया कि बेटे ने 90 हजार रुपए कर्ज लिया था। तकादेदार उसे कर्ज चुकाने के लिए प्रताड़ित करते थे। आए दिन कॉल कर धमकाते थे। इसी से तंग आकर युवक ने सुसाइड की कोशिश की थी। तब तो वह बच गया लेकिन अब उसकी इन्फेक्शन के कारण मौत हो गई।

वृक्ष धरती को केवल हरियाली नहीं देता बल्कि मानवता को जीवन, ऊर्जा और भविष्य प्रदान करता है : उप मुख्यमंत्री देवड़ा

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा किवृक्ष धरती को केवल हरियाली नहीं देता, बल्कि मानवता को जीवन, ऊर्जा और भविष्य प्रदान करता है। उन्होंनेविश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत भोपाल के महाराणा प्रताप मंडल में आरोग्य वाटिका

में आयोजित वृक्षारोपण कार्यक्रम में सहभागिता कर पौध-रोपण किया।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा प्रकृति केवल हमारे जीवन का आधार नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य की भी सबसे बड़ी पूंजी है। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चुनौतियों के इस दौर में प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह प्रकृति संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप देने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाए। एक पौधा लगाना केवल वृक्षारोपण नहीं, बल्कि स्वच्छ वायु, जल संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन और हरित भविष्य के निर्माण का संकल्प है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रेरणादायी संकल्प 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान से जुड़कर हम न केवल पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रहे हैं, बल्कि अपनी मातृशक्ति के प्रति सम्मान और कृतज्ञता भी व्यक्त कर रहे हैं। आईये, हम सभी अधिक से अधिक पौधे लगाकर उनके संरक्षण का संकल्प लें और हरित, स्वच्छ एवं समृद्ध भारत के निर्माण में अपना योगदान दें।

इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर, प्रदेश मंत्री एवं राज्यसभा प्रत्याशी श्री रजनीश अग्रवाल, पूर्व विधायक श्री ध्रुव नारायण सिंह, महापौर श्रीमती मालती राय एवं टोली के सदस्य उपस्थित रहे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री के प्रयासों से विदिशा मेडिकल कॉलेज में 6-7 जून को लगेगा निशुल्क कैंसर जांच शिविर

हर जरूरतमंद तक पहुंचे बेहतर इलाज, यही हमारी प्रतिबद्धता- शिवराज

भोपाल/विदिशा(नप्र)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री और विदिशा संसदीय क्षेत्र के सांसद शिवराज सिंह चौहान की पहल पर क्षेत्रवासियों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 6 व 7 जून को विदिशा मेडिकल कॉलेज में विशेष निःशुल्क कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में देश के प्रतिष्ठित टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल, मुंबई के विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ-साथ एम्स भोपाल के विशेषज्ञ चिकित्सक भी अपनी सेवाएं प्रदान करेंगे। शिविर के दौरान मरीजों को कैंसर स्क्रीनिंग की आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। आवश्यकता के अनुसार विशेष जांचें भी की जाएंगी, जिससे बीमारी की समय रहते पहचान सुनिश्चित हो सके। साथ ही विशेषज्ञ, परामर्श देकर मरीजों को आगे के उपचार और आवश्यक चिकित्सकीय प्रक्रियाओं के संबंध में विस्तृत मार्गदर्शन भी देंगे।

जनप्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति में होगा शुभारंभ

विदिशा मेडिकल कॉलेज में आयोजित होने वाले इस विशेष निःशुल्क कैंसर जांच एवं परामर्श शिविर में केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, मध्यप्रदेश शासन के उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला, जिले के प्रभारी मंत्री लखन पटेल, स्थानीय विधायकगण और क्षेत्र के जनप्रतिनिधि उपस्थित रहेंगे। जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में आयोजित यह स्वास्थ्य पहल क्षेत्रवासियों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने और कैंसर के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास होगी।

विदिशा में पहली बार एक मंच पर जुटेंगे कैंसर उपचार के विशेषज्ञ

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान की पहल पर 6 और 7 जून को विदिशा मेडिकल कॉलेज में आयोजित होने वाले विशेष निःशुल्क कैंसर जांच व परामर्श शिविर में देश के प्रतिष्ठित टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुंबई और एम्स भोपाल के विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम अपनी सेवाएं प्रदान करेगी। शिविर में आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कैंसर की स्क्रीनिंग, चिकित्सकीय परामर्श और आवश्यकतानुसार आगे के उपचार संबंधी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। सभी सेवाएं आमजन के लिए पूर्णतः निःशुल्क रहेंगी। कैंसर की समय रहते पहचान सुनिश्चित कर प्रभावी उपचार का मार्ग प्रशस्त करने वाला यह शिविर क्षेत्रवासियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

नियमित जांच ही सशक्त सुरक्षा कवच है

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि क्षेत्र के प्रत्येक नागरिक का स्वास्थ्य और जीवन सुरक्षा मेरे लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि मेरा निरंतर प्रयास है कि आर्थिक स्थिति और जानकारी के अभाव में कोई भी व्यक्ति बेहतर चिकित्सा सुविधाओं से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि अक्सर लोग कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के नाम मात्र से भयभीत हो जाते हैं, जबकि जागरूकता, समय पर जांच और सही उपचार के माध्यम से इस बीमारी पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कैंसर का सफल उपचार तभी संभव है, जब उसकी पहचान शुरुआती अवस्था में हो जाए। समय पर कराई गई जांच न केवल रोगी का जीवन बचा सकती है, बल्कि पूरे परिवार को संकट से भी सुरक्षित रख सकती है। उन्होंने क्षेत्रवासियों से आग्रह किया कि वे 6 एवं 7 जून को आयोजित निःशुल्क कैंसर जांच शिविर में पहुंचकर इसका लाभ लें और अपने परिवार, मित्रों और परिचितों को भी जांच के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि जागरूक समाज और नियमित स्वास्थ्य जांच ही कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के खिलाफ सबसे सशक्त रक्षा कवच हैं।

संपादकीय

अन्नामलाई की बीजेपी से विदाई

कभी तमिलनाडु में भाजपा का चेहरे के रूप में देखे जाने वाले के. अन्नामलाई ने शुक्रवार को अपनी घोषणा के अनुसार पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। जिसे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने स्वीकार भी कर लिया है। इसी के साथ अन्नामलाई ने तमिलनाडु में एक नई क्षेत्रीय पार्टी बनाने का ऐलान किया है, जो आगामी विधानसभा चुनावों में भाग लेगी। उसके पहले अन्नामलाई ने राज्य में एक नए राजनीतिक आंदोलन की शुरूआत करने का भी ऐलान किया। कभी आईपीएस अधिकारी रहे और बाद में नौकरी छोड़ भाजपा में शामिल हुए अन्नामलाई की राजनीतिक महत्वकांक्षाएं ऊंची हैं। शुरू में भाजपा ने उन्हें तमिलनाडु भाजपा का अध्यक्ष भी बनाया था। लेकिन बाद में पार्टी ने रणनीति बदलते हुए विधानसभा चुनाव के दौरान एआईएडीएमके के दबाव में अन्नमलाई को न केवल अध्यक्ष पद से हटाया बल्कि उन्हें विधानसभा चुनाव का टिकट तक नहीं दिया। अपनी उपेक्षा से नाराज अन्नामलाई ने नया रास्ता चुनने के संकेत दे दिए थे। हालांकि बीजेपी आलाकमान ने उन्हें रोकने और धैर्य रखने की सलाह दी थी। अन्नामलाई ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी मिलने का समय मांगा था, लेकिन उन्हें समय नहीं मिला। अन्नामलाई राज्य में सक्रिय भूमिका निभाना चाहते थे, लेकिन भाजपा आलाकमान किसी दूसरे प्लान पर काम कर रहा है। लेकिन अन्नामलाई रूकने को तैयार नहीं थे। शुक्रवार को उन्होंने सोशल मीडिया एक्स पर ऐलान किया कि मेरे राजनीतिक लक्ष्य अब पहले से बड़े हो गए हैं और मुझे अधिक लोगों को साथ लेकर आगे बढ़ना है। अन्नामलाई ने दावा किया कि भाजपा में रहते हुए उन्होंने कभी भी तमिलनाडु की पहचान, संस्कृति और राज्य के जल अधिकारों जैसे मुद्दों पर समझौता नहीं किया। भाजपा छोड़ने के अपने फैसले को लेकर उन्होंने कहा कि यह निर्णय उन्होंने पूरी गरिमा और सम्मान के साथ लिया है ताकि तमिलनाडु में एक नई तरह की राजनीति की शुरुआत की जा सके। अन्नामलाई ने बताया कि उन्होंने 4 दिसंबर 2025 को ही पार्टी नेतृत्व को अपने इस्तीफे की इच्छा से अवगत करा दिया था, लेकिन उनसे चुनाव प्रक्रिया पूरी होने तक इंतजार करने को कहा गया। अन्नामलाई ने यह भी कहा कि मेरे सामने हमेशा यह द्वंद्व रहा कि मैं पहले भाजपा का कार्यकर्ता हूं या तमिलनाडु का बेटा। आखिरकार मैंने अपने रास्ते पर आगे बढ़ने का फैसला किया। इसके पूर्व 2 जून को भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन को 2 जून को लिखे अपने इस्तीफे के में अन्नामलाई ने कहा था कि वह तमिलनाडु में विकासोन्मुख और सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित राजनीति के अपने दृष्टिकोण को लेकर पार्टी नेतृत्व पर और बोझ नहीं डालना चाहते। सिंघम के नाम से मशहूर अन्नमलाई आगे क्या करेंगे, इसको लेकर अटकलें जारी हैं। इस बीच उनकी दिल्ली यात्रा के दौरान उनके समर्थकों ने चेन्नई और कोयंबटूर समेत कई प्रमुख स्थानों पर उनके समर्थकों ने पोस्टर लगाए, जिनमें उन्हें थलाइवर (नेता) और निडर सोच वाला नेता बताया गया। कुछ समर्थकों ने उनके नेतृत्व में नए राजनीतिक आंदोलन की भी वकालत की। अन्नामलाई का बीजेपी छोड़ने का फैसला राज्य की जमीनी हकीकत को देखते हुए लिया गया लगता है। क्योंकि तमिलनाडु में राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के लिए जमीन तमाम कोशिशों के बाद भी नहीं बन पा रही है। ऐसे में चर्चा यह भी है कि अन्नामलाई को इस तरह उड़ने की छूट देना शायद भाजपा का ही प्लान बी हो सकता है। क्योंकि अन्नामलाई राष्ट्रवादी सोच के साथ ही आगे बढ़ना चाहते हैं। उनकी राजनीतिक ताकत का अंदाजा 2029 के लोकसभा चुनाव में ही हो जाएगा। अगर वो अपनी पकड़ बना सके तो भविष्य में भाजपा उनके साथ खुलकर भी आ सकती है। अन्नामलाई खुद को टीवीके नेता जोसेफ विजय का विकल्प मान रहे हैं, कितने साबित होंगे, यह वक्त बताएगा।

एआई दूर नहीं कर सकता है यह खाई

भारत ने पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन, जलवायु परिवर्तन से मुकाबला, अपशिष्ट प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन पहलों ने न केवल पर्यावरणीय संतुलन को मजबूत किया बल्कि करोड़ों नागरिकों के जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका से जुड़े मानव अधिकारों को भी सुदृढ़ किया है, इस बात का संतोष होता है। मानव अधिकारों का मूल उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करना है।

नजरिया

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी
लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं। वर्तमान में केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

मानव अधिकार और पर्यावरण एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं, आज इसे पूरी दुनिया मानने लगी है। लेकिन यह मान रही है इसके पीछे दुनिया की मजबूरी है वरना मनुष्य अपने भौतिक सुखों में इतना डूब चुका है कि उसे और किसी की खबर कहाँ है? स्वच्छ वायु, शुद्ध जल, सुरक्षित प्राकृतिक संसाधन तथा स्वस्थ पर्यावरण प्रत्येक व्यक्ति के जीवन, स्वास्थ्य और गरिमापूर्ण अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। इसी कारण आज विश्व स्तर पर स्वस्थ पर्यावरण का अधिकार एक मूलभूत मानव अधिकार के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। भारत में भी संविधान के अनुच्छेद 21 के अंतर्गत जीवन के अधिकार की व्यापक व्याख्या करते हुए न्यायपालिका ने स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण को मानव अधिकार का अभिन्न अंग माना। भारत ने पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन, जलवायु परिवर्तन से मुकाबला, अपशिष्ट प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन पहलों ने न केवल पर्यावरणीय संतुलन को मजबूत किया बल्कि करोड़ों नागरिकों के जीवन, स्वास्थ्य और आजीविका से जुड़े मानव अधिकारों को भी सुदृढ़ किया है, इस बात का संतोष होता है। मानव अधिकारों का मूल उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान करना है। लेकिन बिना अनुकूलता के सम्मान कहाँ मिलता है? यदि किसी व्यक्ति को स्वच्छ हवा न मिले, पीने योग्य पानी उपलब्ध न हो, प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा न मिले या उसका प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित जीवन प्रभावित हो जाए, तो उसके मूल अधिकारों का क्या? पर्यावरणीय क्षरण के सबसे अधिक प्रभाव गरीब, आदिवासी, ग्रामीण और तटीय समुदायों पर पड़ते हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण केवल प्रकृति की रक्षा का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों की रक्षा का भी प्रश्न है, मानें या न मानें।

ग्रीन इंडिया मिशन, प्रतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन एवं योजना प्राधिकरण, नगर वन योजना तथा अरावली ग्रीन वॉल परियोजना जैसी पहलों ने हरित क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। एक पेड़ मां के नाम अभियान के माध्यम से जनभागीदारी को बढ़ावा मिला और करोड़ों पौधों का रोपण हुआ। लेकिन भारत सरकार द्वारा अपनाई गई पर्यावरणीय नीतियाँ आज भी पर्याप्त हैं, यह कहना ठीक नहीं है। वन वीरान हो गए। लेकिन क्या आपको पता है वन केवल पेड़ों का समूह नहीं हैं, बल्कि वे जलवायु संतुलन, जैव विविधता संरक्षण और लाखों लोगों की आजीविका के आधार हैं। भारत के कुल वन और वृक्ष आवरण में हुई वृद्धि देश की पर्यावरणीय क्षमता को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जा रही है लेकिन वनों की कटाई भी तो खूब हो रही है।

यह नहीं भूलना चाहिए कि वनों का विस्तार मानव अधिकारों से सीधे जुड़ा हुआ है क्योंकि इससे स्वच्छ वायु, जल संरक्षण, भूमि की उर्वरता तथा जलवायु सुरक्षा सुनिश्चित होती है। ग्रामीण और वनवासी समुदायों की आजीविका भी वन संसाधनों पर निर्भर करती है। इस प्रकार वन संरक्षण सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों को भी सुदृढ़ करते हैं। वनों के साथ हमें जल पर भी बात करनी चाहिए। जल जीवन का आधार है। प्रदूषित जल न केवल स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न करता है बल्कि मानव जीवन के अधिकार को भी प्रभावित करता है। इसी उद्देश्य से आरंभ किया गया नमामि गंगे कार्यक्रम भारत की सबसे महत्वपूर्ण नदी पुनर्जीवन योजनाओं में से एक है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सीवेज उपचार संयंत्रों की स्थापना, औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण, नदी तट विकास, जैव विविधता संरक्षण तथा वनीकरण जैसे व्यापक प्रयास किए गए हैं। गंगा और उसकी सहायक नदियों में प्रदूषण स्तर कम करने तथा जल गुणवत्ता में सुधार के लिए हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाएँ सरकार द्वारा संचालित की गई हैं। स्वच्छ नदियाँ नागरिकों को सुरक्षित पेयजल, बेहतर स्वास्थ्य और सम्मानजनक जीवन प्रदान करती हैं। इसलिए नदी संरक्षण मानव अधिकारों की रक्षा का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता न केवल पृथ्वी को गर्म करने वाली ग्रीनहाउस गैसों की चिंताजनक मात्रा के लिए जिम्मेदार है, बल्कि इस तकनीक का पर्यावरणीय प्रभाव भी इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि इससे पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव पड़ सकता है।

संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय-यूएनयू के एक अध्ययन में बताया गया है कि, एआई से संबंधित जल खपत इस दशक के अंत तक 1।3 अरब लोगों की बुनियादी वार्षिक घरेलू जरूरतों के बराबर हो सकती है, जबकि इसका भूमि फुटप्रिंट 14,500 वर्ग किलोमीटर से अधिक हो सकता है जो जकार्ता महानगर क्षेत्र के आकार का लगभग दोगुना है। जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, बाढ़, सूखा और चक्रवात मानव जीवन, स्वास्थ्य, भोजन और आवास के अधिकारों को प्रभावित करते हैं। पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसमें समाज की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है। मिशन लाइफ, नेशनल ग्रीन कॉर्प्स, इको-क्लब, हरित क्रेडिट कार्यक्रम जैसे अभियान नागरिकों को पर्यावरणीय दायित्वों के प्रति जागरूक तो बना रहे हैं। लेकिन इससे पर्यावरणीय न्याय मिलना मुश्किल है। पर्यावरणीय न्याय का अर्थ है तो विकास के लाभ और पर्यावरणीय संसाधनों का उपयोग सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचे तथा किसी समुदाय पर प्रदूषण या पर्यावरणीय क्षति का असमान बोझ न पड़े, ऐसा माना जाता है। पर्यावरण और मानव अधिकार एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ न्याय नहीं वहां मानव अधिकारों की बात करना तो बहुत बड़ी बात है। भारत का हरित परिवर्तन केवल पर्यावरण संरक्षण की कहानी नहीं है, बल्कि यह मानव अधिकारों को सशक्त बनाने की भी कहानी है। यह विश्वास, विकास और जनकल्याण पर आधारित एक ऐसी यात्रा है पूरे विश्व को इस यात्रा को समझना होगा। यह आपूर्तिक दाचित एआई से आने वाले वर्षों में नहीं होगी इसे जितना ज़ल्दी समझ लिया जाए, उतना ही अच्छा है। दुनिया के विशेषज्ञ अब कहने लगे हैं कि एआई अवसंरचना के विस्तार से पहुंच और प्रभाव में भी नई असमानताएं पैदा हो रही हैं। इन खाई को दूर करने का विकल्प एआई के पास तो नहीं है। संयुक्त राष्ट्र के विविध अध्ययन और संयुक्त राष्ट्र विश्वविद्यालय के अध्ययन यह साफ़ आग्रह कर रहे हैं कि एआई का भविष्य न केवल तकनीकी नवाचार पर बल्कि आज लिए गए शासन संबंधी निर्णयों पर भी निर्भर करेगा।

वैश्विक सहयोग और सतत उपयोग जैसे सिद्धांतों पर आधारित एक जिम्मेदार एआई पारिस्थितिकी तंत्र अभी तक पूरी दुनिया में विकसित नहीं हुआ है। क्लाइमेट चेंज की बहस में एआई की अहम भूमिका भले बतायी जा रही हो लेकिन जब हमारी एआई ज्ञान प्रणाली की पारिस्थितिकीय आंकड़े व भाषा की समझ जब अब तक बन ही नहीं सकी है तो वे इतना कारगर कार्य कैसे करेंगे, सवाल यह है?

ऐसे में, भारत समेत दुनिया के मानवाधिकार संरक्षकों को यह अब समझना आवश्यक है कि एआई मानव अधिकार को समझे, पर्यावरण को समझे और पारिस्थितिकीय व्यवस्था को पूरी तरह से समझे और इसके अनुसार एक अच्छा तंत्र प्रामाणिक रूप से दुनिया के विशेषज्ञ तैयार करें तब आमूल-चूल परिवर्तन आएगा। इस वर्ष भी पर्यावरण दिवस मनाया गया। सभी ने अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग सुना दिया। शायद कल से इस पर बात न हो और हो भी तो एआई से क्लाइमेट जस्टिस की राह ढूंढने की कोशिश की जाए। तो, यह समझ लेना चाहिए कि यह सब बकवास की बातें हो रही हैं, कोई भी गंभीर नहीं है। पर्यावरण दिवस के बाद भी आपकी चिंता दिखे तब आप असली पर्यावरण हितैसियों में सम्मिलित हैं वरना पर्यावरण दिवस पर माइक लगाकर चिल्लाने वाले और प्रदर्शन करने वाले लोगों यह सब दिखावा करना बंद करो। तुम्हारे पास आने वाली पीढ़ी के लिए न कोई चिंता है और न ही तुम उन्हें सुरक्षित करने में किसी काम के हो, यह मान लो। तुम्हारे अर्थहीन स्वांग अक्षम्य हैं, और आने वाली पीढ़ी इसके लिए कभी तुम्हें माफ़ नहीं करेगी।

करप्शन की 'आग' में 'खाक' हुई कई जिंदगियां

मुद्दा

डॉ.रमेश ठाकुर
सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, भारत सरकार

भीषण अग्निकांड देश की राजधानी के माथे पर बर्निंग कैपिटल का ठप्पा लगा रहे हैं। बीते कुछ वर्षों में हुए भंयकर अग्निकांडों से शासन-प्रशासन द्वारा सबक न लेने का नतीजा है मालवीय नगर अग्निकांड की घटना? दिल्ली में साल नहीं, बल्कि प्रत्येक महीने कहीं न कहीं अग्निकांड की पुनरावृत्ति हो रही है। लिबर्टी सिनेमा जैसे बड़े अग्निकांड तो मात्र बानगी हैं, उससे भी कहीं बढ़कर दर्दनाक घटनाएं लगातार जारी हैं। यही कारण है कि दिल्ली को अब बर्निंग कैपिटल कहा जाने लगा है। मालवीय नगर घटना में कई विदेशी पर्यटक भी हताहत हुए हैं, जो भारत के लिए वैश्विक स्तर पर शर्मसार करता है? पिछले माह ही पूर्वी दिल्ली के विवेक विहार में एक घर में एसी ब्लास्ट से तीन परिवारों के 9 लोग जलकर मरे थे। उससे पहले पालम विहार में भी एक भीषण अग्निकांड में एक ही परिवार के 9 लोग जिंदा जलकर खाक हो गए थे। मुंडका, पहाड़गंज, जामिया नगर, मंडावली, सदर बाजार, चांदनी चैक की घटनाओं को भी दिल्ली वाले नहीं भूले हैं।

सवाल उठता है, क्या अग्निकांड की घटनाएं कभी रूक पाएंगी या यूं ही बेकसूर लोग आग के हवाले होते रहेंगे। कह सकते हैं कि मालवीय नगर अग्निकांड में 25 लोग जलकर मरे नहीं, बल्कि उनकी सुनियोजित तरीके से चरमराती शासकीय व्यवस्था ने सामूहिक हत्याएं की हैं। लानत और धिक्कार है ऐसी व्यवस्था पर जब ऐसी घटनाओं पर भी लीपापोती की जाती है। मालवीय नगर अग्निकांड इतना दुखद है कि जिसे तस्वीरों में जिन्होंने भी टीवी-अखबारों या सोशल मीडिया के जरिए देखा या सुना? उनके मन को पूरी तरह से झकझोर दिया। घटना के वक्त पीड़ितों की मदद की गुहार और उनकी दर्दभरी चीख-पुकारें चश्मदीदों को रूला रही थीं, वो सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहते थे लेकिन असहज थे। दरअसल, आग की लपटों ने पूरे होटल को अपने कब्जे में लिया हुआ था। इसलिए निहत्थे मददगार चाहकर भी कुछ नहीं कर सके। घटना सुबह करीब साढ़े आठ या नौ बजे के आसपास की है।

करीब घंटे-डेढ़ घंटे बाद फायरब्रिगेड, स्थानीय पुलिस व अन्य बचाव दल घटनास्थल पर पहुंचें और तत्काल प्रभाव से मोर्चा संभाला? लेकिन, शायद तब तक बहुत देर हो चुकी थी। आग ने होटल के सभी कमरों को अपने आगोश में ले लिया था। स्थानीय लोग असहाय थे। मदद करना चाहते थे, लेकिन किसी का कोई बस नहीं चला। आग इतनी तेजी से भड़क हुई थी जिससे बचावकर्मी भी फंस गए। करीब आठ-दस बचावकर्मी भी आग से झुलस गए जिनका चिकित्सा उपचार विभिन्न अस्पतालों में जारी है। दिल्ली में लगातार होते अग्निकांड के कुछ वाजिब कारण है जिसे हुकूमत अच्छे से जानती है। अव्वल तो, महानगरों में अनियोजित अवैध निर्माण, जो हादसों को चौबीसों घंटे न्योता देते हैं। वहीं, जिस होटल में आग लगी, उसमें कमरों को बनाने की इजाजत मात्र 6 कमरों की थी, लेकिन 25 कमरे बने हुए थे। 4 मंजिला परमिशन के बाद 7 मंजिला बनाया हुआ था। पूरे होटल में एक भी रेस्क्यू उपाय नहीं था। बिजली का अतिरिक्त लोड लदा था। पूरे होटल की इमारत घूसखोरी के दम पर टिकी थी जिसमें बिजली विभाग से लेकर एमसीडी, पुलिस, फायर ब्रिगेड तक सभी भ्रष्टाचार के तालाब में गोते लगा रहे थे। सभी विभागों ने नियमों को ताक पर रखा हुआ था। ये सभी विभाग प्रत्येक महीने अपना हिस्सा लेकर होटल से जाते थे। स्थानीय सफेदपोश और लोकल प्रशासन भी अंजान नहीं थे।

दिल्ली फायर सर्विस के आंकड़े की माने तो दिल्ली में इस वर्ष जनवरी में छोटी-बड़ी करीब 1,396 घटनाएं रिपोर्ट हुई। वहीं, फरवरी में 1,096, मार्च में 1,538 और अप्रैल में बढ़कर ये आंकड़ा 2,663 तक जा पहुंचा। विवेक विहार में 'चाइल्ड केयर अस्पताल' की घटना को याद करके आज भी रोंगटे खडे होते हैं जहां अचानक लगी आग से उपचाराधीन कई दर्जन नवजात बच्चे जलकर मर जाते हैं। उस घटना ने पूरे देश को झकझोर दिया था। ऐसी ही एक घटना दो साल पहले 26 जनवरी को मानसरोवर पार्क में हुई थी जिसमें 4 लोग जलकर मरे थे। कुल मिलाकर इन सभी दर्दनाक घटनाओं से शासन-प्रशासन ने कोई सीख नहीं ली? दिल्ली में अग्निकांड की एक घटना घटती है तो दूसरी घटना की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। हादसे की जांचों का खेल भी बड़ा निराना है। जब तक शोर मीडिया और आम लोगों की चर्चाओं में रहता, जांच के नाम पर डंडा खूब फटकारा जाता है। थोड़े समय बाद सबकुछ शांत हो जाता है। मालवीय नगर घटना की भी जांच होगी कुछ दिन? सील किया जाएगा होटल, एकाध गिरफ्तारियां भी होंगी। अवैध निर्माण का हवाला देकर तोड़फोड़ होगी, बुलडोजर भी इलाके में कुछ दिनों तक हूं-हूं करेगा। अंत में प्रशासन फिर किसी बड़े हादसे के इंतजार कमरे में बैठकर करेगा।

मालवीय नगर घटना की तपिश को दिल्ली सरकारी किसी तरह से शांत करने की जुगत में है। बे-मौत मरे लोगों की जान की कीमत कुछ लाख रुपए मुआवजा देकर रफा-दफा करने की फिराक में है। पर, इस हादसे में कई लोग ऐसे भी हैं जो अपने घरों में इकलौते कमाने वाले थे। उनकी तो दुनिया ही लुट गई। किसी ने अपना पति खोया, तो किसी ने अपना पिता? क्या इस कमी की भरपाई कोई कर पाएगा? शायद नहीं? दिल्ली में आग की घटनाओं से पिछले 5 सालों में 2022-2026 जून तक 302 लोगों की मौतें हुई। पिछले दो सालों में अग्निकांड की घटनाएं दिल्ली में दूसरे राज्यों के मुकाबले सर्वाधिक बढ़ी हैं। अफसोस इस बात का है कि घटनाओं को रोकने और बचाव के इंतजामों में कोई तरक्की नहीं हुई। मई-जून के महीनों में आग लगने की घटनाएं ज्यादा होती हैं। क्योंकि इन दिनों अतिरिक्त उर्जा लोड बढ़ने से बिजली के तारों से शॉर्टसर्किट होना आम होता है। ये सब जानते हुए भी होटल और व्यवसायिक प्रतिष्ठान वाले कोई व्यवस्थाएं अपने यहां नहीं करते। फायर ब्रिगेड भी रामभरोसे हैं उनकी भी तैयारियां पुरानी और बे-जार होती हैं, जबकि उसे आधुनिक किए जाने की जरूरत है।

फैशन की दौड़ में नैसर्गिक सुंदरता का संकट

दृष्टिकोण

एकता शर्मा
(सामाजिक विषयों की विश्लेषक)

सोशल मीडिया पर आई एक अजीब घटना ने समाज को चौंका दिया। हुआ यूं कि एक महिला ने ब्यूटी पार्लर से लौटने के बाद तीन महीने तक अपना चेहरा धोने से इनकार कर दिया। कारण बताया गया कि उसे डर था कि पानी लगते ही उसका 'पार्लर ब्यूटी वाला चेहरा' खराब हो जाएगा और उसकी असल शक्ल सामने आ जाएगी। पहली नजर में यह घटना भले ही हास्यास्पद या अतिशयोक्तिपूर्ण लगे, लेकिन इसके भीतर आधुनिक समाज की एक गहरी मानसिक और सांस्कृतिक समस्या छिपी हुई है। बाहरी सुंदरता के प्रति बढ़ता अस्वस्थ आकर्षण और प्राकृतिक व्यक्तित्व से दूरी।

मनुष्य स्वभाव से सुंदर दिखना चाहता है। साफ-सुथरे कपड़े पहनना, सजना-संवरना और आकर्षक दिखने की इच्छा सामान्य है। लेकिन, समस्या तब शुरू होती है, जब सुंदरता आत्मविश्वास का साधन न रहकर पहचान का आधार बन जाती है। आज का दौर सोशल मीडिया, कैमरा फिल्टर, ग्लैमर इंडस्ट्री और कृत्रिम सौंदर्य उत्पादों का दौर है। हर जगह 'परफेक्ट लुक' को सफलता और लोकप्रियता से जोड़कर पेश किया जाता है। इंस्टाग्राम और रील्स की दुनिया में चेहरा एक 'प्रोडक्ट' बनता जा रहा है। लोग अपनी असली तस्वीर से ज्यादा फिल्टर वाली तस्वीर को पसंद करने लगे।

ऐसे माहौल में कई लोग धीरे-धीरे अपनी वास्तविक पहचान से असंतुष्ट होने लगते हैं। उन्हें लगता है कि बिना मेकअप, बिना फिल्टर या बिना कृत्रिम सजावट के वे स्वीकार नहीं किए जाएंगे। यही मानसिकता आगे चलकर असुरक्षा, हीन भावना और आत्म-संदेह को जन्म देती है। फैशन अपने आप में गलत नहीं है। हर युग में लोगों ने पहनावे, साज-सज्जा और सौंदर्य के नए तरीके अपनाए। लेकिन, जब फैशन समझदारी की जगह दिखावे का माध्यम बन जाए, तब वह व्यक्ति को भीतर से कमजोर करने लगता है। आज बाजार ने सुंदरता को एक उद्योग में बदल दिया। करोड़ों रुपए के विज्ञापन लोगों को यह विश्वास दिलाते हैं कि गोरा रंग, चमकती त्वचा, महंगे कपड़े और कॉस्मेटिक ट्रीटमेंट ही आत्मविश्वास की कुंजी हैं। परिणाम यह है कि लोग अपनी प्राकृतिक बनावट से संतुष्ट नहीं रह पा रहे। विशेष रूप से महिलाओं पर 'परफेक्ट दिखने' का सामाजिक दबाव अधिक है। शादी, नौकरी, सोशल मीडिया या सार्वजनिक जीवन हर जगह बाहरी रूप को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। यह दबाव कई बार मानसिक तनाव और आत्महीनता का कारण बन जाता है। यह घटना इसी मानसिकता का चरम रूप प्रतीत होती है, जहां एक व्यक्ति को अपनी 'असल शक्ल' दिखने का डर सताने लगा। यह केवल एक महिला की समस्या नहीं, बल्कि उस सामाजिक सोच का परिणाम है जो इंसान को उसके व्यक्तित्व से ज्यादा उसके चेहरे से आँकती है।

प्राकृतिक सुंदरता केवल चेहरे की बनावट नहीं होती, बल्कि आत्मविश्वास, सहजता और व्यक्तित्व का

सम्मिलित रूप होती है। एक व्यक्ति की मुस्कान, व्यवहार, संवेदनशीलता और आत्मीयता उसे वास्तव में सुंदर बनाती है। कृत्रिम सजावट क्षणिक प्रभाव पैदा कर सकती है, लेकिन स्थायी आकर्षण हमेशा स्वाभाविकता में होता है। इतिहास और साहित्य में भी सादगी और नैसर्गिकता को ही सबसे बड़ा सौंदर्य माना गया है। भारतीय चिंतन ने हमेशा बाहरी चमक की बजाय आंतरिक सुंदरता को महत्व दिया। हमारी संस्कृति में 'सादगी' को एक गुण माना गया है, न कि कमी। आज जरूरत इस बात की है कि समाज युवाओं को यह समझाए कि हर चेहरा अलग और सुंदर है। त्वचा का रंग, चेहरे की बनावट या फैशन का स्तर किसी व्यक्ति की योग्यता और सम्मान तय नहीं करते।

डिजिटल दुनिया ने सुंदरता की परिभाषा को और अधिक कृत्रिम बना दिया है। फिल्टर और फोटो एडिटिंग ऐप्स ने वास्तविकता और दिखावे के बीच की दूरी मिटा दी है। लोग अपनी असली तस्वीरों से ज्यादा संपादित तस्वीरों को देखकर खुद की तुलना करने लगे हैं। इसका सबसे बड़ा असर किशोरों और युवाओं पर पड़ रहा है। वे यह मानने लगे हैं कि बिना मेकअप या बिना 'परफेक्ट लुक' के वे आकर्षक नहीं हैं। यही कारण है कि कॉस्मेटिक सर्जरी, स्किन ट्रीटमेंट और अत्यधिक मेकअप का चलन तेजी से बढ़ रहा है। लेकिन, यह समझना जरूरी है कि सोशल मीडिया की चमक वास्तविक जीवन नहीं होती। जीवन में इंसान की असल पहचान उसके विचार, व्यवहार और कर्म से बनती है, न कि केवल चेहरे से।

इस घटना को मजाक समझने के बजाय इसे एक सामाजिक चेतावनी की तरह देखने की जरूरत है। यह घटना बताती है कि आधुनिक समाज में बाहरी सुंदरता का दबाव किस हद तक बढ़ चुका है। परिवार, स्कूल और समाज को मिलकर ऐसी सोच विकसित करनी होगी, जहां बच्चों और युवाओं को आत्म स्वीकृति का महत्व समझाया जाए। उन्हें यह बताया जाए कि सुंदरता का अर्थ केवल गोरा चेहरा या महंगा मेकअप नहीं, बल्कि स्वस्थ मन, आत्मविश्वास और अच्छा चरित्र भी है। जरूरत इस बात की भी है कि फैशन और सौंदर्य को आत्म-अभिव्यक्ति तक सीमित रखा जाए, आत्म-मूल्य÷ का आधार न बनाया जाए। सुंदर दिखना गलत नहीं, लेकिन अपनी असली पहचान से डरने लगना निश्चित रूप से चिंता का विषय है।

फैशन और मेकअप तब तक अच्छे हैं, जब तक वे आत्मविश्वास बढ़ाएं,लेकिन यदि वे व्यक्ति को उसकी वास्तविकता से दूर करने लगें, तो यह मानसिक और सामाजिक समस्या बन जाती है। नैसर्गिक सुंदरता में जो सच्चाई और सहजता होती है, वह किसी कृत्रिम चमक में नहीं मिल सकती। समाज को अब यह तय करना होगा कि वह लोगों को उनके चेहरे से पहचानेगा या उनके व्यक्तित्व से।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मर्द में छिपा हुआ एआई एजेंडा पहचानो

व्यंग्य

डॉ.प्रेमचंद द्वितीय
लेखक व्यंग्यकार हैं।

प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन का मानना है कि जानवरों में नर ज्यादा आकर्षक होते हैं और इंसानों में इसका उल्टा है यहां महिलाएं ज्यादा आकर्षक मानी जाती है। एक रिसर्च में महिलाओं को भीअन्य महिलाएं सुंदर लगती है।लेकिन मर्द में छिपे हुए एए आय एजेंडे को भांपना भी कड़ी चुनौती होती है। यह खबर पढ़कर पंडित सदानंद जी बोले पंडिताइन हर चार छः दिन में नजर उतारने का कहती है दो-चार बार मैंने नजर उतारी लेकिन हर बार नजर उतारने से तंग आकर मैंने सोचा इसे ही पूरी तरह नजर से उतार दू लेकिन पत्नीव्रता होने के कारण यह दुस्साहसिक कार्य नहीं कर पाया।

खैर जब मैंने श्रीमती से पूछा तो बोली मैं पुरुषों के किसी भी कार्यक्रम और समारोह. में पिछले दिनों नहीं गई, महिलाओं में ही उठी बैठी तथा आना-जाना हुआ लेकिन अन्य महिलाओं से ज्यादा मैं बहुत सुंदर दिखी, इसीलिए महिलाओं ने नजर लगा दी महिला की महिलाओं को जर्बदस्त नजर लगती है इसलिए नमक मिर्च उतार दो ताकि नजर उतर जाए।

सदानंद जी के महिला द्वारा महिला को नजर लगने या नजर से गिरने की बात सुनकर सुनील भैया बोले हम इंसानों और जानवरों में मामला उल्टा-पुल्टा है। जानवरों में नर सुंदर होते हैं और इंसानों में महिलाएं सुंदर एवं आकर्षक मानी जाती है। जब इंसानों में बदसूरती या वे कम सुंदर होते हैं तो वह अपनी बदसूरती को विलोपित करने और दबाने के लिए तथा सुंदर दिखने के लिए तरह-तरह के जतन करते हैं और उसके ठीक विपरीत महिलाएं अपनी सुंदरता को छुपाने के लिए घूंघट निकालती.है और स्कार्फ में सुंदरता छुपाती है।मर्द उन्हें नौकरियों या सोशल कार्य से न जोडकर ,हाउसवाइफ, बनाकर हाउस से बाहर जाने से रोकते हैं।सोशल वर्क करने वाली महिलाओं को आगे नहीं बढ़ने देते हैं।कारण यह की महिला की सुंदरता पर कोई नजर न लगा दे , आंच ना आ जाए कोई दाग न लग जाए ! जब महिलाओं के आरक्षण की बात आती है तो पुरुष अपने वर्चस्व में खतरा भांपकर महिलाओं के आरक्षण का आर्टिफिशियल इंटीलेजेंस का इस्तेमाल करते है क्योंकि वे लोकतंत्र में सहभागिता करने वाली महिलाओं के पति ,पिता, बेटे ,भाई भतीजे बनकर महिलाओं के आरक्षित पद पर अनारक्षित होकर परदे के पीछे से राज करते हैं।जब पुरुषों द्वारा महिलाओं को पीछे धकेलने की बात सामने आई तो चर्चा में शामिल धूमिल जी बोले अरे महिला ही महिला को आगे नहीं बढ़ने देना चाहती है महिलाओं के आरक्षण बिल के पारित न होने में आधी आबादी जो महिलाओं की है उसकी भूमिका आज तक आक्रमक न होने से उनका आरक्षण आगे नहीं बढा।

यही नही महिला में एक दूसरे की बुराई करने , चुगली करने, अपनी-अपनी सुंदरता की तारीफ करने में महिलाएं अव्वल है।पनघट से लेकर गीत ,कथा,वार्ता, संगीत भजन अन्य कार्यक्रमों में महिलाएं एक दूसरे से ज्यादा सुंदर दिखने में तथा एक दूसरे को नीचा दिखाने में ऐसी मशगुल.हो जाती है कि समारोह कब और कैसे हुआ और कब खत्म हुआ मालूम ही.नहीं पड़ता है।यह चर्चा चल रही थी कि स्वामी नरेंद्र जी आ टपके और बोले खूबसूरती में महिलाओं पर रिसर्च में महिलाएं एक दूसरे से ज्यादा सुंदर दिखती है और दिखाना चाहती है। उधर पुरुषों को भी अपनी के अलावा अन्य महिलाएं खूबसूरत लगती है जबकि पुरुष पुरुष को नहीं भाता है, न हीं स्मार्ट देखना चाहता है।

वस्तुतः पुरुषों का छिपा हुआ एजेंडा रहता है जबकि महिलाओं को यह एजेंडा मालूम पड़ता है तो वह डंडा पेल देती है।वे बोले खुल्लम-खुल्ला प्यार करेंगे दुनिया से नहीं डरने वाले पुरुष छिप छिप कर अपनी सुंदरता और पुरुषार्थ के जरिए आकर्षक दिखना चाहते हैं।इस पर राम जी बोले पुरुषों से ज्यादा आकर्षक महिलाओं को अक्सर उम्र छिपाना पड़ती है लेकिन सुंदर दिखने के लिए वह सजने में घंटों लगाती है। ताकि वह सुंदर दिखे। इसके ठीक विपरीत उल्टा पुरुषों को ढेर सारी बातें छुपाना पड़ती है पुरुषों को अपनी उम्र छुपाने के लिए आए सफेद बालों को डाय करना पड़ता है ,पुरुषों को बड़ी हुई तौंद छिपाना पड़ती है।पुरुषों को मोबाइल के मैसेज छुपाना पड़ते हैं अपनी खूबसूरत गर्लफ्रेंड छुपाना पड़ती है। वे बोले हद तो तब होती जब पुरुष अपना शरीर छुपाने के लिए ऊपर से नीचे तक पूरे शरीर को कपड़े से ढंक देता है।जबकि महिलाओं की सुंदरता में कम कपड़े चार चांद लगाते हैं। हालांकि महिला पुरुष दोनों ही अपने लुक की परवाह करते हैं और लुका छुपी से सुंदरता को लुक लायक बनाना चाहते हैं। चाहे महिला हो या पुरुष उन्हें चिंता सताती है कि मैं कैसा दिख रहा मैं कैसी दिख रही ! लेकिन यह बात दिगर है कि इंसानों में यानी पुरुष महिलाओं की बनिस्बत कम सुंदर और कम आकर्षक दिखते हैं ,जबकि बेचारे जानवरों में नर आकर्षक होते हैं।इसी कारण अनेक मर्द सोचते हैं कि यदि हम जानवर न होकर जानवरों जैसा व्यवहार और रवैया रखते तो ज्यादा सुंदर और आकर्षक दिखते ! इसीलिए मर्द के चेहरे पर चमक दमक मत देखो उनमें छिपे एआई एजेंडे को भांपो !

सामयिक
गिरीश जोशी
लेखक संस्कृति अध्येता हैं।

आज के युद्ध और शिवाजी महाराज की रणनीतियां

शिवाजी महाराज के राज्य का बड़ा हिस्सा कोंकण समुद्र के किनारे पर था । वहां धातु कम मिलती थी इसलिए उन्होंने ऐसे हथियार विकसित किए जिसमें धातु का इस्तेमाल कम होता था। उदाहरण के लिए मराठों ने एक ऐसा भाला तैयार किया जिसका नुकीला हिस्सा धातु का होता था और बचा हुआ पीछे का हिस्सा लकड़ी का होता था। इस भाले का भी ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करने के लिए इसके लकड़ी वाले हिस्से को एक रस्सी से बांधा जाता था और एक बार भाले से वार करने के बाद शत्रु को समाप्त करने के बाद रस्सी से उस भाले को वापस खींच लिया जाता था यानी एक ही भाले से अनेक शत्रुओं को मार गिराने का काम मराठा सेना किया करती थी।

कश्मीर कोर के पूर्व कमांडर कैप्टन अता हसनैन लिखते है आज दुनिया में युद्ध का स्वरूप बदल गया है खासकर अब पूर्ण विजय मिलना लगभग समाप्त हो गया है, ऐसे राष्ट्र जो ताकत में अपने दुश्मनों से कमतर हैं वो भी बलशाली राष्ट्रों को निरंतर युद्ध में उलझाए रखने की रणनीति पर काम करते दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए रूस और यूक्रेन का युद्ध हो, अमेरिका और ईरान का युद्ध हो यही ध्यान में आ रहा है।

शिवाजी महाराज की रणनीति- मुगल साम्राज्य उस समय का सबसे शक्तिशाली साम्राज्य माना जाता था। उनके राज्य का विस्तार,संसाधन,सैन्य शक्ति सब कुछ छत्रपति शिवाजी महाराज के सामने दस गुना से अधिक थे लेकिन फिर भी शिवाजी महाराज की बनाई व्यवस्था ने औरंगजेब को एक-दो नहीं पूरे सत्ताईस वर्षों तक युद्ध में झोंक कर रखा। महाराज के जाने के बाद उनके उत्तराधिकारियों छत्रपति शंभूराजे, राजाराम महाराज और तारा रानी ने संघर्ष करते हुए औरंगजेब को महाराष्ट्र की धरती पर उलझाए रखा। औरंगज़ेब तो हिंदवी स्वराज्य को समाप्त नहीं कर सका उल्टा वही महाराष्ट्र की धरती पर बड़ी लाचार अवस्था में मर गया और उत्तर में उसका मुग़ल साम्राज्य तहस नहस हो गया । नेतृत्व के चले जाने के बाद भी दुशमन को लंबी लड़ाई में उलझाने की रणनीति का उदाहरण आज से 350 साल पहले शिवाजी महाराज ने प्रस्तुत किया था। आज दुनिया के छोटे-छोटे देश युद्ध में इस रणनीति पर चलते दिखाई दे रहे हैं।

शिवाजी महाराज का नवाचार- मुगलों से लड़ने के लिए उनकी रणनीति, उनके हथियारों, क्षमता, कमजोरी का अध्ययन कर अपने नए हथियार विकसित किए, नई रणनीति बनाई । शिवाजी महाराज ने जंगलों में लड़ने के लिए, पहाड़ों पर लड़ने के लिए, मैदान में लड़ने के लिए अलग -अलग हथियार तैयार करवाए थे।

शिवाजी महाराज के राज्य का बड़ा हिस्सा कोंकण समुद्र के किनारे पर था । वहां धातु कम मिलती थी इसलिए उन्होंने ऐसे हथियार विकसित किए जिसमें धातु का इस्तेमाल कम होता था। उदाहरण के लिए मराठों ने एक ऐसा भाला तैयार किया जिसका नुकीला हिस्सा धातु का होता था और बचा हुआ पीछे का हिस्सा लकड़ी का होता था। इस भाले का भी ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल करने के लिए इसके लकड़ी वाले हिस्से को एक रस्सी से बांधा जाता था और एक बार भाले से वार करने के बाद शत्रु को समाप्त करने के बाद रस्सी से उस भाले को वापस खींच लिया जाता था यानी एक ही भाले से अनेक शत्रुओं को मार गिराने का काम मराठा सेना किया करती थी ।

महाराज की युद्धनीति के आयाम- आज के युद्ध मैदान में कम लेकिन ज्यादातर रणनीति, मनोविज्ञान, कूटनीति और समाज में विमर्श के स्तर पर लड़े जा रहे हैं ।इन आयामों पर यदि हम शिवाजी महाराज की अफजल खान के साथ हुई लड़ाई को देखें तो समझ में आता है कि महाराज ने अपने से कई गुना बड़े दुश्मन को खत्म करने के लिए सारी रणनीतियों का इस्तेमाल किया था। अपनी कूटनीति से उसे पहाड़ों में आने के लिए मजबूर किया क्योंकि यहां वह कमजोर था। अफजल खान ने शिवाजी महाराज के राज्य की जनता का मनोबल तोड़ने उसका महाराज से समर्थन ख़त्म करने के लिए उनकी कुलदेवी तुलजा भवानी के मंदिर को तोड़ा, महाराष्ट्र के कुल देवता भगवान विठ्ठल के मंदिर को नुकसान पहुंचाया, महिलाओं, बुजुर्गों, किसानों, यहां तक की बच्चों पर भी अत्याचार किए लेकिन जनता का महाराज पर विश्वास कायम रहा ।

अफ़जल तरह- तरह की चालें चलता रहा लेकिन महाराज ने अपना पूरा ध्यान लक्ष्य पर बनाए रखा। वास्तव में यह हरकतें अफजल खान केवल शिवाजी महाराज के मनोबल को तोड़ने के लिए नहीं कर रहा था बल्कि वह उस समय के समाज में यह विमर्श भी बनाने का की कोशिश कर रहा था कि जो शिवाजी अपने आराध्य देवता के मंदिरों की रक्षा नहीं कर सकता, अपनी जनता की सुरक्षा नहीं कर सकता वह किसी राज्य को कैसे चल सकता है, उसे कैसे सुरक्षित रख सकता है

लेकिन उस समय का समाज अफजल खान के इस विमर्श के झांसे में नहीं आया।

युद्धकला की नई दिशा- छत्रपति शिवाजी महाराज ने भारतीय युद्धकला को नई दिशा दी। उनकी अनेक सफलताएँ कम संसाधनों से, श्रेष्ठ रणनीति, गति, भूगोल ज्ञान और मनोवैज्ञानिक युद्ध पर आधारित थीं। आज हम देखते हैं छोटे-छोटे हथियारों जैसे ड्रोन से दुश्मन के बड़े ठिकानों को बड़ा नुकसान पहुंचाया जा रहा है। शाइस्ता खान जैसे बड़े दुश्मन को खत्म करने के लिए शिवाजी महाराज बहुत ही छोटी सी टुकड़ी लेकर गए थे अनेक वर्ग किलोमीटर में फैली उसकी छावनी के भीतर पर घुसकर शाइस्ता खान तक पहुंचना, उस पर हमला करना और वापस सुरक्षित लौट आना, ये शिवाजी महाराज की तत्कालीन युद्ध रणनीति का सफल प्रयोग था।

दुश्मन को खत्म करने के अभिनव प्रयोग- छत्रपति शिवाजी महाराज की महानता इस बात में थी कि उन्होंने हर युद्ध एक ही तरीके से नहीं लड़ा। वे परिस्थिति अनुसार रणनीति बदलते थे जहाँ गति आवश्यक वहाँ छापामार तरीके से लड़ाई लड़ते ,जहाँ रक्षा आवश्यक होती वहाँ नया किला बनाते या शत्रु का बना बनाया किला जीत लेते, जहाँ कूटनीति आवश्यक होती वहाँ संधि कर लेते, जहाँ संदेश देना जरूरी होता वहाँ प्रतीकात्मक विजय प्राप्त करते। शिवाजी महाराज की रणनीति की खास बाते यदि देखें तो वो दुश्मन की घेराबंदी से रणनीतिक रूप से निकालने मे माहिर थे । युद्ध में हार की स्थिति को रणनीतिक तौर पर सफलता में बदल देते थे । खास तौर पर तेज़ हमला और तत्काल वापसी उनकी युद्ध नीति का मुख्य आयाम था। वे अपनी सेना और राजी की जनता का मनोबल बड़ा ऊंचा रखते थे। लड़ाई के दौरान दुश्मन कि हर हरकत, अपनी सेना की रणनीति और रसद प्रबंधन पर वे बड़ी बारीकी से निगाह रखते थे ।

सफलता की दूरगामी योजना- आज के दौर में सफलता के लिए हसनैन लिखते हैं कि जो देश लंबे तनाव के दौरान सामाजिक एकता, आर्थिक स्थिरता और जनता का भरोसा बनाए रख सकेंगे, दीर्घकालिक रणनीतिक बढ़त उन्हें ही मिलेगी। कमजोर प्रतिद्वंद्वी अब पूरी जीत नहीं, बल्कि टिके रहने, बाधा डालने और बने रहने की क्षमता हासिल करना चाह रहे हैं। भले ही वे युद्ध जीतने में सक्षम न हों, लेकिन उनके पास मजबूत प्रतिद्वंद्वियों की निर्णायक जीत को रोके रखने की अभूतपूर्व क्षमता है। अपने समय में शिवाजी महाराज इसी रणनीति पर आगे बढ़ते रहे इसलिए उन्हें दीर्घकालिक सफलता भी मिली। जिस मुगल साम्राज्य को समाप्त करने के बारे में कोई सोचना तो दूर कल्पना भी नहीं करता था उसे शिवाजी महाराज ने अपनी कुशल रणनीति और कूटनीति से तबाह किया।

हर संसाधन को युद्ध का हथियार बनाया

जिस तरह शिवाजी महाराज ने अस्त्र -शस्त्र और किलों के अलावा भौगोलिक स्थिति को, पहाड़ों,जंगलों, नदियों, मौसम,सुदूर गांवों मे रहने वाली प्रतिभाओं को अपने साथ जोड़कर यानि उस समय जो भी संसाधन मिला जिसे भी जरूरी समझा उसे अपने युद्ध तंत्र का जरिया बनाया और हमारे सामने एक लाजवाब नमूना पेश किया। ठीक उसी तरह अब आज के दौर में युद्ध केवल सेना और सीमा तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बुनियादी ढांचा, संचार प्रणाली, एनर्जी ग्रिड, वित्तीय नेटवर्क और आम धारणा या विमर्श ये सब युद्धक्षेत्र की जद में आ चुके हैं।

महाराज की रणनीति के सबक- शिवाजी महाराज की रणनीति के खास सबक ये है कि युद्ध संख्या से नहीं, निर्णय से जीता जाता है, भूगोल सबसे बड़ा हथियार हो सकता है, मनोबल तकनीक से ज्यादा महत्वपूर्ण है, आर्थिक केंद्र पर हमला जीत के लिए निर्णायक हो सकता है । आज भी शिवाजी महाराज और उनके तौर तरीके हमारे सुरक्षा बलों के लिए प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए हैं और कल भी बने रहेंगे।

बेपानी समाज
डॉ. शंकर कुमार सान्याल
अध्यक्ष, हरिजन सेवक संघ-दिल्ली

गांधी-विनोबा के आलोक में जेपी की शाश्वत दृष्टि

5 जून 1974 को पटना की धरती पर लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने 'सम्पूर्ण क्रांति' का वह अमर आवाहन किया था, जिसने राजनीति की सीमाओं को पार कर राष्ट्रीय जागरण का रूप धारण कर लिया। मेरे लिए यह अवसर विशेष महत्व रखता है। मैं आपके समक्ष हरिजन सेवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में हूँ। यह वही संस्था है जिसकी स्थापना महात्मा गांधी ने 1932 में सामाजिक न्याय, मानव गरिमा तथा समाज के सबसे वंचित वर्गों की सेवा के उद्देश्य से की थी। गांधीजी को हरिजन सेवक संघ स्थापित करने की प्रेरणा जिन मूल्यों से मिली थी, वही मूल्य आगे चलकर जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा में भी अभिव्यक्त हुए। अतः गांधीजी, आचार्य विनोबा भावे और लोकनायक जयप्रकाश नारायण–इन तीन महान राष्ट्र निर्माताओं की विरासत पर विचार करना मेरे लिए सम्मान के साथ-साथ उत्तरदायित्व का विषय भी है। इन तीनों नेतृत्वकर्ताओं का विश्वास था कि राजनीतिक स्वतंत्रता का अंतिम उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन, नैतिक पुनर्जागरण तथा समाज के अंतिम व्यक्ति का सशक्तिकरण होना चाहिए।

आधुनिक भारत के सार्वजनिक जीवन में बहुत कम व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्हें जयप्रकाश नारायण जैसी नैतिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई हो। उन्होंने कभी सत्ता की इच्छा नहीं की, न ही किसी पद की आकांक्षा रखी। फिर भी उनकी वाणी पूरे देश में गूँजती थी, क्योंकि वह गहरे विश्वास, सत्यनिष्ठा और लोकसेवा के प्रति अटूट समर्पण से उत्पन्न होती थी।

1974 में सम्पूर्ण क्रांति का उनका आह्वान केवल एक राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं था; वह भारत के लोकतांत्रिक, सामाजिक और नैतिक आधारों के पुनर्निर्माण का एक गहन आवाहन था। सम्पूर्ण क्रांति के वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि यह न तो कोई पृथक सिद्धांत था और न ही कोई आकस्मिक राजनीतिक नारा। इसकी जड़ें उस समृद्ध बौध्दिक और आध्यात्मिक परंपरा में थीं, जिसका पोषण महात्मा गांधी ने किया और जिसे आगे आचार्य विनोबा भावे ने विकसित किया।

महात्मा गांधी ने राजनीति के अर्थ को ही बदल दिया। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का समावेश किया। उनके लिए नैतिकता से पृथक राजनीति निरर्थक थी। गांधीजी का सर्वोदय–अर्थात् 'सभी का कल्याण '–इस विश्वास पर आधारित था कि समाज की वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब उसके सबसे कमजोर और वंचित लोगों का उत्थान हो। उनका अंत्योदय का सिद्धांत हमें यह कसौटी देता है कि किसी भी नीति या कार्य का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाए कि उसका प्रभाव समाज के अंतिम और सबसे निर्बल व्यक्ति पर क्या पड़ता है।

इसके अतिरिक्त उतना ही महत्वपूर्ण था उनका यह आग्रह कि साधन और साध्य को कभी अलग नहीं किया जा सकता। जयप्रकाश नारायण ने इसी नैतिक दृष्टि को आत्मसात किया। उन्होंने अनुभव किया कि सामाजिक न्याय, समानता और स्वतंत्रता को हिंसा या दबाव के माध्यम से स्थायी रूप से स्थापित नहीं किया जा सकता; इसके लिए व्यक्ति और संस्थाओं दोनों का गहन रूपांतरण आवश्यक है।

इस वैचारिक परिवर्तन में आचार्य विनोबा भावे की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। भूदान और ग्रामदान आंदोलनों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्थाई सामाजिक परिवर्तन बलपूर्वक नहीं, बल्कि ह्रदय परिवर्तन और आत्मीयता से संघर्ष से नहीं, विश्वास से; और राज्य की बाध्यता से नहीं, बल्कि स्वैच्छिक लोकभागीदारी से ज्यादा सम्भव है। जयप्रकाश नारायण ने विनोबाजी के कार्यों में जागृत नागरिक शक्ति का प्रत्यक्ष उदाहरण देखा। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं रह सकता; उसे जीवन-पद्धति बनना होगा। मानव-परिवर्तन की शक्ति में जयप्रकाश नारायण के विश्वास का एक अत्यंत प्रेरक उदाहरण, चंबल के डाकुओं का आत्मसमर्पण है।

सम्पूर्ण क्रांति के उद्भव को 1970 के दशक के प्रारंभिक छात्र आंदोलनों की पृष्ठभूमि में भी समझना आवश्यक है। गुजरात का नव निर्माण आंदोलन तथा बिहार का छात्र आंदोलन बढ़ते भ्रष्टाचार, महँगाई और प्रशासनिक अव्यवस्था के विरुद्ध जनचेतना की अभिव्यक्ति थे। जब बिहार के छात्रों ने जयप्रकाश नारायण से नेतृत्व का आग्रह किया, तब उन्होंने एक आंदोलन को व्यापक लोकतांत्रिक नवजागरण का रूप दे दिया। परिणामस्वरूप स्वतंत्रता के बाद का सबसे बड़ा जनतांत्रिक जनआंदोलन खड़ा हुआ, जिसने आगे चलकर सम्पूर्ण क्रांति का स्वरूप ग्रहण किया।

इस आंदोलन ने 1977 में भारतीय राजनीति में ऐतिहासिक परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त किया और केंद्र में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी जेपी लगातार यह स्पष्ट करते रहे कि उनका उद्देश्य केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि समाज और लोकतंत्र का नैतिक पुनर्निर्माण है। गांधी और विनोबा की प्रेरणा ने ही सम्पूर्ण क्रांति की वैचारिक नींव तैयार की।

जब जयप्रकाश नारायण ने 'सम्पूर्ण क्रांति' की बात की, तब वे किसी सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान नहीं कर रहे थे। वे समाज के समग्र रूपांतरण की बात कर रहे थे। उन्होंने इस परिवर्तन के अनेक परस्पर जुड़े आयामों की चर्चा की।

पहला आयाम था राजनीतिक क्रांति। वे शासन में पारदर्शिता, जवाबदेही, सत्ता के विकेंद्रीकरण, चुनावी शुचिता और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी के पक्षधर थे।

दूसरा आयाम था सामाजिक क्रांति। वे जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, सामाजिक बहिष्कार और मानव गरिमा को ठेस पहुँचाने वाली सभी प्रकार की असमानताओं के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध थे।

तीसरा आयाम था आर्थिक क्रांति। उनका स्वप्न ऐसा समाज था जिसमें अवसरों का अधिक न्यायपूर्ण वितरण हो, गरीबी और बेरोजगारी का प्रभावी समाधान किया जाए तथा विकास समावेशी और टिकाऊ हो।

चौथा आयाम था सांस्कृतिक क्रांति। वे नैतिक मूल्यों, सामाजिक सद्भाव, नागरिक उत्तरदायित्व और विविधता के प्रति सम्मान को विकसित करना चाहते थे।

पाँचवाँ आयाम था शैक्षिक क्रांति। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल प्रमाणपत्र प्रदान करना नहीं, बल्कि चरित्र, नागरिकता-बोध और व्यावहारिक विवेक का विकास करना होना चाहिए।

छठा आयाम था बौद्धिक क्रांति। वे स्वतंत्र चिंतन, आलोचनात्मक दृष्टि और अन्याय के विरुद्ध प्रश्न उठाने के साहस को आवश्यक मानते थे।

सातवाँ और सबसे गहन आयाम था आध्यात्मिक क्रांति। उनका विश्वास था कि नैतिक पुनर्जागरण के बिना कोई भी स्थायी सुधार संभव नहीं है। संस्थाओं का चरित्र उन व्यक्तियों से निर्मित होता है जो उन्हें संचालित करते हैं, इसलिए समाज का परिवर्तन व्यक्ति के आत्मपरिवर्तन से प्रारंभ होना चाहिए।

यही समग्र दृष्टि सम्पूर्ण क्रांति को सामान्य राजनीतिक आंदोलनों से अलग बनाती हैजयप्रकाश नारायण की दृष्टि की प्रासंगिकता समय के साथ कम नहीं हुई है; बल्कि आज वह और अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। जेपी द्वारा उठाए गए प्रश्न आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं–लोकतांत्रिक संस्थाएँ जनता के प्रति उत्तरदायी कैसे बनी रहें ?, विकास को अधिक मानवीय और समावेशी कैसे बनाया जाए ?, सार्वजनिक जीवन को अवसरवाद के बजाय मूल्यों से कैसे संचालित किया जाए ?, नागरिक, लोकतंत्र के निष्क्रिय दर्शक न बनकर उसके सक्रिय सहभागी कैसे बनें ? ये सभी प्रश्न सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा के केंद्र में हैं।

विकेंद्रीकरण पर उनका बल आज स्थानीय स्वशासन और जमीनी लोकतंत्र को सशक्त बनाने के प्रयासों में दिखाई देता है। पारदर्शिता और जवाबदेही पर उनका आग्रह स्वच्छ प्रशासन की आधारशिला बना हुआ है। सामाजिक न्याय के प्रति उनकी प्रतिबद्धता आज भी समान अवसर और समावेशी विकास के प्रयासों को प्रेरित करती है। युवाओं पर उनका विश्वास हमें स्मरण कराता है कि प्रत्येक पीढ़ी पर लोकतांत्रिक आदर्शों के नवीनीकरण का दायित्व होता है।

सबसे बढ़कर, नैतिक नेतृत्व में उनका विश्वास आज अत्यंत प्रासंगिक है। गांधी, विनोबा और जयप्रकाश नारायण की संयुक्त विरासत भारत और विश्व को एक कालजयी संदेश प्रदान करती है। यह संदेश संघर्ष पर अहिंसा की विजय का है; भौतिक लाभ से ऊपर मानव गरिमा को स्थापित करने का है; लोकतंत्र को केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि सहभागिता, उत्तरदायित्व और पारस्परिक सम्मान की संस्कृति के रूप में देखने का है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि जेपी की दृष्टि किसी एक कालखंड तक सीमित नहीं थी। वह हमारी अंतरात्मा को निरंतर पुकारने वाला संदेश है। इतिहास सम्पूर्ण क्रांति को केवल एक राजनीतिक आंदोलन के रूप में नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक चेतना के एक महान जागरण के रूप में याद करता है, जिसका नेतृत्व भारत के युवाओं ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नैतिक मार्गदर्शन में किया था। यह हमें ऐसी संस्थाएँ बनाने का आह्वान करती है जो उत्तरदायी हों; ऐसे समुदायों का निर्माण करने की प्रेरणा देती है जो करुणामय हों; और ऐसे नागरिकों को गढ़ने का संदेश देती है जो लोककल्याण के प्रति समर्पित हों। यह हमें बताती है कि लोकतंत्र केवल कानूनों और संस्थाओं से नहीं, बल्कि चरित्र और नागरिकता-बोध से मजबूत होता है। और सबसे बढ़कर, यह हमें उन मूल्यों–सत्य, अहिंसा, न्याय और सेवा–को जीवित रखने का आह्वान करती है, जिन्होंने गांधी को प्रेरित किया, विनोबा का मार्गदर्शन किया और जयप्रकाश नारायण के जीवन तथा कार्य में सशक्त अभिव्यक्ति पाई।

- जय हिन्द !

विचार
विवेक मिश्रा

प्रकृति और प्रगति के मध्य मानव प्रवृत्तियों का पर्यावरण

पृथ्वी में विरचित समस्त जीव, उत्पत्ति से लेकर वृद्धि तक खान - पान , रहन - सहन , को लेकर इन्हीं पंचतत्वों पर आश्रित रहते हैं। वहीं प्रगति के भी समस्त स्तंभ निर्माण हेतु, आवश्यक सामग्री इन्हीं पंचतत्वों से प्राप्त करते हैं। उदाहरणार्थ भवन निर्माण हेतु ईट,रेत, सीमेंट जैसे घटक हो या आज की एआई तकनीक में प्रयुक्त सेमीकंडक्टर चिप में मौजूद दुर्लभ खनिज, सभी भूगर्भ जनित हैं। यदि प्रकृति व प्रगति को मानवीय संबंधों की उपमा से जोड़ें तो प्रगति,प्रकृति पुत्री है और प्रकृति का अस्तित्व भी प्रगति के मातृतुल्य नित्य संवर्धन से ही है। बदलते मौसमी रंगों से जल,थल,नभ में प्रकृति अपना श्रृंगार करती है, यह नित्य नूतन परिवर्तन प्रगति के ही तो जीवंत प्रमाण हैं।

प्रकृति अभिभावक है,जिसके नेहांचल में जीवत्व उत्कलित होता है।जीव - अजीव की प्रगति का मूलाधार प्रकृति है। प्राकृतिक पंचायत के पुनीत पंच(जल,थल,अग्नि,वायु,आकाश), ब्रह्माण्डीय परिधि में निहित प्रति परिष्करण व परिवर्तन के प्रवर्तक हैं। पृथ्वी में विरचित समस्त जीव, उत्पत्ति से लेकर वृद्धि तक खान - पान , रहन - सहन , को लेकर इन्हीं पंचतत्वों पर आश्रित रहते हैं। वहीं प्रगति के भी समस्त स्तंभ निर्माण हेतु, आवश्यक सामग्री इन्हीं पंचतत्वों से प्राप्त करते हैं। उदाहरणार्थ भवन निर्माण हेतु ईट,रेत, सीमेंट जैसे घटक हो या आज की,द्ध तकनीक में प्रयुक्त सेमीकंडक्टर चिप में मौजूद दुर्लभ खनिज, सभी भूगर्भ जनित हैं। यदि प्रकृति व प्रगति को मानवीय संबंधों की उपमा से जोड़ें तो प्रगति,प्रकृति पुत्री है और प्रकृति का अस्तित्व भी प्रगति के मातृतुल्य नित्य संवर्धन से ही है। बदलते मौसमी रंगों से जल,थल,नभ में प्रकृति अपना श्रृंगार करती है, यह नित्य नूतन परिवर्तन प्रगति के ही तो जीवंत प्रमाण हैं। समन्वयी सूत्र से बंधा प्रकृति और प्रगति का यह सहअस्तित्व, पर्यावरणीय पारिस्थितिक को उपहार की तरह प्राप्त हुआ है। इस सूत्रबंध के सूक्ष्म तंतुओं के रूप में स्थित मानवीय प्रवृत्तियां यह तय करती हैं, कि यह संतुलन संस्था कैसे संचालित होगी ? आज वास्तविकता के धरातल से जब इस नैसर्गिक व्यवस्था का आंकलन मानवीय हस्तक्षेप से करते हैं, तो हम देखेंगे कि प्रगति के ध्वनिक प्रवाह में लीन मानुषिक प्रवृत्तियां, प्रकृति के ममत्व से विमुख हो रही है। प्रगतिपथ में आने वाले पेड़-पौधों,जल,जंगल,पर्वतों को निःसंकोच काटते,लांघते,भेदते हम , हर संभव प्रयोजनों से सुगमता व सुलभता के कृत्रिम संसाधनों का सृजन कर लेना चाहते हैं।

प्रतिष्ठित पत्रिका 'नेचर' के अनुसार मानवीय गतिविधियों के कारण हर वर्ष पूरी दुनिया में 1500 करोड़ पेड़ कम हो रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय संस्थान जंगलों के नुकसान को हैक्टेयर में मापती है, इस हिसाब से विगत 5 वर्ष में 1.09 करोड़ हैक्टेयर वन्य क्षेत्र कम हुआ है,जो कि फ्रांस और केन्या जैसे देशों का कुल क्षेत्रफल है। विभिन्न देशों की सरकारें विकास परियोजनाओं के लिए आधिकारिक रूप से पेड़ों की कटाई को मंजूरी देती है, इस मामले में इंडोनेशिया और भारत अग्रणी हैं। विगत पांच वर्षों में भारत सरकार ने विकास योजनाओं के लिए 1 से 1.5 करोड़ पेड़ों को काटने की मंजूरी दी है। इन योजनाओं में प्रमुख रूप से अरुणाचल में कमला,इतालीन,दिबांग जैसी बहुउद्देशीय जल विद्युत परियोजना, अंडमान निकोबार में द्वीप विकास परियोजना, चारधाम महामार्ग परियोजना हैं । हालाँकि भारत सरकार विश्व के अन्य देशों के मुकाबले ज्यादा संवेदनशील है, भारत में अन्य देशों से इतर काटे गए एक-एक पेड़ के आंकड़े जुटाए जाते हैं। कैंपा (प्रतिपूरक वनरोपण निधि अधिनियम, 2016) जैसे प्रावधान किए गए हैं, जिसके तहत विकास कार्यों के लिए जितने क्षेत्रफल में वन भूमि का इस्तेमाल वृक्ष काट कर किया जाता है, उतनी ही गैर वन भूमि को वृक्षारोपण हेतु दान करना होता है। भूमि नहीं होने की स्थिति में , दुगने क्षेत्रफल में वृक्षारोपण का खर्च संबंधित निर्माण एजेंसी को इस कोष में देना होता है। जिसका 90 प्रतिशत हिस्सा संबंधित राज्य सरकारों के पास जाता है , जबकि 10 प्रतिशत हिस्सा केंद्र सरकार की निधि में जमा होता है। वृक्षों को काटने से पहले अनुमति के द्विस्तरीय चरण से गुजरना होता है। पहले चरण में कानूनी, वित्तीय और पर्यावरणीय नियमों व शर्तों की दक्ष प्रणाली है, इसकी मंजूरी के बाद भी निर्माण एजेंसी एक भी पेड़ नहीं काट सकती है , जब तक कि द्वितीय चरण के तहत संबंधित राज्य सरकार एवं निर्माता यह आश्वस्त नहीं कर देते हैं, कि प्रभावित वनक्षेत्र के एवज में फंड जमा कर दिया गया है एवं स्थानीय लोगों के अधिकारों का भी संरक्षण हो चुका है।

उल्लेखित इन समग्र प्रयासों के बाद भी पर्यावरणविदों और ष्ट्रत्र की रिपोर्ट कुछ वास्तविक चुनौतियों की ओर गम्भीर सवाल खड़े करती है, जो कैंपा जैसी योजनाओं के यथार्थ क्रियान्वयन से संबंधित है। जंगलों की कटाई जैव विविधता को नष्ट करती है, इनके स्थान पर रोपित नए वृक्ष अक्सर मोनोक्लचर को बढ़ावा देते हैं , जिसमें एक ही तरह के वृक्ष बड़ी संख्या में लगा दिये जाते हैं। प्रावधान के तहत , काटे गए वन्य क्षेत्र के आसपास ही गैर वन्य भूमि पर वृक्षारोपण करना होता है, किंतु जमीन उपलब्ध न होने के कारण संबंधी राज्य से हटकर दूसरे राज्यों में वृक्षारोपण का कार्य किया जाता है। इस प्रकार की भौगोलिक भिन्नता प्रायः वन्य क्षेत्र की विविधता , संरक्षण और संवर्धन में अंतर पैदा करती है । वन अनुसंधान संस्था के सर्वे में यह पाया गया कि नए लगाए वृक्षों की उत्तरजीविता का प्रतिशत 33 प्रतिशत है, नियमानुसार यह 60 प्रतिशत से 65 प्रतिशत होना चाहिए। राज्य सरकारों द्वारा फंड के दुरुपयोग के मामले भी इन रिपोर्ट में सामने आए , आवंटित कोष से वन विभाग के कार्यालयों और सरकारी बंगलों का कायाकल्प कर दिया गया। कियान्वयन से जुड़ी इन प्रवृत्तियों का उन्मूलन, तब संभव होगा जब हम अधिकारिक उत्तरदायित्व में पर्यावरण को अनिवार्य प्राथमिकताओं के साथ शामिल करें।

आज , प्रकृति और प्रगति के सहज संबंधों में मानवीय लिप्सा की अंधस्पर्धा खड़ी कर दी गई है। चीन का विस्तारवाद इसका जीवंत उदाहरण है। तिब्बत पर कब्जा जमाने के बाद 1950 से 1985 के बीच चीन ने सीमावर्ती इलाकों में घुसबैठ व तेज पहुंच बढ़ाने के लिए, विकास कार्यों के नाम पर कुल 1.08 करोड़ हेक्टेयर वन भूमि को नष्ट किया गया। बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव के बारे में यह प्रचलित है कि , यह प्रोजेक्ट जिस भी देश में कार्य करता है, वहां सामान्य से 5त्न अधिक वन्य क्षेत्र कम होता है । चीनी विस्तार भूमि ही नहीं समुद्र में भी भारत के इर्द गिर्द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स के रूप में मौजूद है। यही कारण है कि, चीन जैसे देश का पड़ोसी होने के नाते भारत को भी आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से , सामरिक महत्व वाले अंडमान,अरुणाचल और उत्तराखंड में प्रकृति से ऊपर , ढांचागत निर्माण कार्यों की प्रगति को प्राथमिकता देना पड़ता है। उत्तर अमेरिका महाद्वीप के देशों में किसी प्रकार का सीमावर्ती संघर्ष नहीं है, आज वहाँ की जलवायु और पर्यावरणीय स्थिति अन्य महाद्वीपों से श्रेष्ठकर है। यूरोप जो सबसे बेहतर पर्यावरण रखने वाला महाद्वीप माना जाता है, आज युद्धसंघर्ष से बढ़ते कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन के कारण अप्रत्याशित रूप से गरम हो रहा है।

समुचित प्रमाणों से स्पष्ट है, लालसा और संघर्ष से भरी मानव प्रवृत्तियां ही हैं, जो प्रकृति और प्रगति के मध्य संतुलन को नष्ट कर , पृथ्वी पर पर्यावरण को संदूषित कर रही हैं। इसीलिए , शांति, संतोष और संयम से चलित मनोवृत्तियां ही अमूल्य पर्यावरणीय संपदा का संरक्षण और संवर्धन कर सकतीं हैं।

पीएम मित्र पार्क को शीघ्र रेलवे लाइन से जोड़ा जाए - सावित्री ठाकुर

रतलाम में आयोजित सांसदगणों की रेलवे महाप्रबंधक के साथ बैठक में लोकसभा क्षेत्र के विभिन्न रेलवे विकास कार्यों की समीक्षा की

धार। केंद्रीय राज्य मंत्री एवं धार - महू लोकसभा क्षेत्र की सांसद सावित्री ठाकुर ने रतलाम में पश्चिम रेलवे द्वारा आयोजित सांसदगणों की समीक्षा बैठक में सहभागिता करते हुए धार-महू संसदीय क्षेत्र से जुड़े विभिन्न रेल विकास कार्यों, निर्माणाधीन परियोजनाओं एवं यात्री सुविधाओं के विषयों को प्रमुखता से उठाया। बैठक में पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक एवं वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष क्षेत्र की आवश्यकताओं और जन अपेक्षाओं से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा की।

श्रीमती ठाकुर ने बदनावर क्षेत्र में स्थापित किए जा रहे प्रधानमंत्री मित्र पार्क को रेलवे नेटवर्क से शीघ्र जोड़ने की आवश्यकता पर विशेष बल देते हुए कहा कि यह परियोजना क्षेत्र के औद्योगिक विकास, निवेश संवर्धन तथा रोजगार सृजन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने रेलवे अधिकारियों से इस संबंध में सर्वे कार्य एवं प्रस्तावित रेल लिंक की प्रगति की जानकारी प्राप्त करते हुए आवश्यक कार्यवाही को गति देने का आग्रह किया।

बैठक में सांसद श्रीमती ठाकुर ने इंदौर-धार रेल परियोजना की प्रगति, निर्माणाधीन रेलवे टनल, रेलवे

ओवरब्रिज एवं अंडरब्रिजों की वर्तमान स्थिति तथा धार में रेल परिचालन शीघ्र प्रारंभ किए जाने के संबंध में विस्तृत जानकारी मांगी। उन्होंने परियोजनाओं में हो रहे विलंब के कारणों पर भी चर्चा करते हुए कार्यों को निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने पर जोर दिया।

सांसद ने किसानों को भूमि अधिग्रहण के बदले उचित एवं समयबद्ध मुआवजा उपलब्ध कराने का विषय भी प्रमुखता से उठाया। इसके साथ ही उन्होंने निर्माणाधीन रेलवे पुलों एवं ओवरब्रिजों के समीप खराब सर्विस रोड, वर्षा ऋतु में जलभराव की समस्या तथा यातायात प्रबंधन से जुड़े मुद्दों पर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित किया।

श्रीमती ठाकुर ने लोकसभा क्षेत्र के रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध यात्री सुविधाओं की समीक्षा करते हुए स्वच्छता, पेयजल, प्रतीक्षालय, प्रकाश व्यवस्था, सुरक्षा, दिव्यांगजन सुविधाओं तथा अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत किए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बदनावर में रेलवे टिकट आरक्षण केंद्र प्रारंभ करने की मांग भी रखी।

इसके साथ ही क्षेत्र में नई रेल सेवाओं, ट्रेनों के ठहराव, माल परिवहन सुविधाओं के विस्तार तथा आगामी वर्षों में प्रस्तावित रेल परियोजनाओं पर भी विस्तार से चर्चा हुई।

श्रीमती ठाकुर ने कहा कि धार लोकसभा क्षेत्र के समग्र विकास एवं जन सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए रेलवे द्वारा सभी परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण किया जाना आवश्यक है।

बैठक में पश्चिम रेलवे परिक्षेत्र के विभिन्न सांसदगण, रेलवे महाप्रबंधक रामश्रय पांडेय, रेलवे डीआरएम अश्विनी कुमार सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं संबंधित विभागों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत काल भैरव बावड़ी का हुआ कायाकल्प

विश्व पर्यावरण दिवस पर कलेक्टर के नेतृत्व में प्रशासनिक अमले और जनप्रतिनिधियों ने किया श्रमदान

धार। जिले में चलाए जा रहे %जल गंगा संवर्धन अभियान% के अंतर्गत जल चेतना कार्यक्रम के तहत 5 जून को विशेष आयोजन किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के पावन अवसर पर आज प्रातः 7 बजे मंडी प्रांगण स्थित ऐतिहासिक काल भैरव बावड़ी के विशेष साफ-सफाई एवं जीर्णोद्धार के लिए वृहद श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। जलस्रोतों

के संरक्षण का संदेश देते हुए इस अभियान का नेतृत्व स्वयं कलेक्टर राजीव रंजन मीना ने किया।

इस जल चेतना कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व धार राहुल गुप्ता, मुख्य नगरपालिका अधिकारी, स्थानीय जनप्रतिनिधियों, विभिन्न विभागों के अधिकारियों तथा नगरपालिका की टीम ने पूरे उत्साह और ऊर्जा के साथ अपनी सहभागिता निभाई।

जल चेतना से ही समृद्ध होगा हमारा पर्यावरण- कलेक्टर

अभियान के दौरान कलेक्टर राजीव रंजन मीना ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान का मुख्य उद्देश्य आमजन में जल चेतना जागृत करना और हमारे पारंपरिक जलस्रोतों को पुनर्जीवित करना है। काल भैरव बावड़ी का यह जीर्णोद्धार इसी कड़ी का एक हिस्सा है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि जल स्रोतों को स्वच्छ रखना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संकट को दूर किया जा सके।

अधिकारियों और टीम ने खुद थामी कमान

श्रमदान के दौरान कलेक्टर सहित सभी वरिष्ठ अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों ने स्वयं बावड़ी परिसर में उतरकर साफ-सफाई की। नगरपालिका की विशेष टीम के सहयोग से बावड़ी के भीतर और आसपास जमा कचरे, गाद और झाड़ियों को पूरी तरह साफ कर बावड़ी को उसका प्राचीन और स्वच्छ स्वरूप लौटाया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और नागरिकों ने जल स्रोतों के संरक्षण और पर्यावरण को हरा-भरा बनाए रखने का संकल्प लिया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर ÷एक पेड़ मां के नाम÷ अभियान में केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ,विधायक नीना वर्मा ने किया पौधारोपण

धार। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून के अवसर पर ÷एक पेड़ मां के नाम÷ अभियान के अंतर्गत वृहद पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अभियान के तहत जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों, प्रबुद्ध नागरिकों और छात्र-छात्राओं ने मिलकर न केवल पौधों का रोपण किया, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का सामूहिक संकल्प भी लिया। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। इस दौरान धार विधायक नीना वर्मा, कलेक्टर राजीव रंजन मीना, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अभिषेक चौधरी, मुख्य नगरपालिका अधिकारी सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी और प्रशासनिक अमला मौजूद रहा।

मातृशक्ति को नमन और प्रकृति का संरक्षण- इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री के आह्वान पर शुरू हुआ ÷एक पेड़ मां के नाम÷ अभियान प्रकृति और हमारी संस्कृति को आपस में जोड़ता है। उन्होंने प्रत्येक नागरिक से अपनी माँ के सम्मान में एक पौधा लगाने और उसकी देखभाल करने की अपील की। धार विधायक नीना वर्मा ने कहा कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने विद्यार्थियों और युवाओं की सहभागिता की सराहना की।

पर्यावरण संरक्षण की पहल- परम डिस्ट्रीब्यूटर्स ने रोपे 2 हजार पौधे

टांगनामाल से धपाड़ा स्कूल तक, हरियाली से संवरेगा क्षेत्र

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए परम डिस्ट्रीब्यूटर्स ने व्यापक पौधा रोपण अभियान चलाया। इस दौरान हरियाली बढ़ाने का संदेश देते टांगनामाल से धपाा स्कूल तक विभिन्न स्थानों पर करीब 2000 पौधों का रोपण किया गया। इस दौरान अधिकारियों, कर्मचारियों, जनप्रतिनिधियों, विद्यालय स्टाफ और क्षेत्रवासियों ने पौधारोपण में उपस्थित होकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। कार्यक्रम में क्षेत्रवासियों और कंपनी के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाई। पौधारोपण के साथ ही लगाए गए पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का भी संकल्प लिया गया ताकि भविष्य में ये पौधे बड़े होकर पर्यावरण संतुलन को मजबूत कर सकें।इस अभियान में जिला खनिज अधिकारी भागवत नागवंशी, जनपद पंचायत सीईओ फिर्दोष शाह, जनपद सदस्य भूरेलाल चौहान, रोजगार सहायक अशोक पाटनकर सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। वहीं परम डिस्ट्रीब्यूटर्स रेत कंपनी के जनरल मैनेजर सतीश सिंह जादौन, प्रमोद सिंह, मन्नू सिकरवार, चंद्र प्रकाश मिश्रा, अंकुर भदौरिया, दिलीप द्विवेदी तथा कुलदीप चौहान ने अभियान के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है पौधारोपण : भागवत नागवंशी

जिला खनिज अधिकारी भागवत नागवंशी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वृक्ष हरियाली बढ़ाने के साथ जीवन के लिए आवश्यक शुद्ध वायु और संतुलित वातावरण भी प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि पौधे लगाने के साथ-साथ उनका संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। सभी नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान से जुड़ना चाहिए। परम डिस्ट्रीब्यूटर्स कंपनी के जनरल मैनेजर सतीश सिंह जादौन ने कहा कि सभी के सहयोग से लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल सुनिश्चित की जाएगी ताकि उनका बेहतर विकास हो सके। उन्होंने सभी लोगों से अपने जीवन में कम से कम एक पौधा लगाने और उसकी जिम्मेदारी लेने का आह्वान किया।

विद्यालय परिसर में भी हुआ पौधारोपण

धपाड़ा स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के स्टाफ और क्षेत्रवासियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कमलेश वर्मा सहित विद्यालय परिवार के सदस्यों ने पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उपस्थित लोगों ने प्रत्येक पौधे की देखभाल करने और अधिक से अधिक लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया।

बालाजी से क्षमा प्रार्थना के साथ मंदिर में श्रद्धालुओं का प्रवेश शुरू

बैतूल। गुरुवार 4 जून की दोपहर भारत के पांचवेधाम श्री रुक्मणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में कुछ लोगों के द्वारा मंदिर के सेवादार के साथ मारपीट की गई थी। इसकी पुलिस रिपोर्ट के साथ मंदिर प्रबंधन ने मंदिर आम श्रद्धालुओं की सुरक्षा को ध्यान रखते हुए बंद कर दिया था। आज शुक्रवार को राष्ट्रीय हिन्दू सेना समेत काफी लोगों ने पुलिस प्रशासन को ज्ञापन देकर कठोर कार्रवाई और सुरक्षा की मांग की। इसके बाद सिख समाज के प्रतिष्ठित व्यवसायी मंजीत सिंह साहनी और सुखदर्शन सिंह ने सभी मारपीट करने वाले लोगों से संपर्क कर उन्हें बालाजीपुरम लेकर आए। इसके बाद यहां बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा के अलावा मंदिर से जुड़े काफी लोग मौजूद थे। सभी लोगों ने भगवान बालाजी की आरती की और कल की घटना के लिए क्षमा प्रार्थना की। श्री साहनी जी और सभी ने मिलकर मंदिर का ताला खोला और आम श्रद्धालुओं का आना जाना आरंभ किया। सिख संगत के सभी लोगों ने आगामी समय में मंदिर की सुरक्षा का भी संकल्प लिया। इस दौरान बैतूल एसडीओपी सुनील लाटा भी पहुंचे और मंदिर प्रबंधन की मांग पर स्थायी पुलिस चौकी की मांग को जल्द ही पूर्ण करने का आश्वासन दिया।

प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसो. धार की जिला कार्यकारिणी बैठक आयोजित, 15 सदस्यों ने ली संघ की सदस्यता

धार। प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन धार की जिला कार्यकारिणी बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले की समस्त तहसीलों के पदाधिकारी उपस्थित हुए । प्रांतीय आव्हान पर प्रदेश के समस्त पेंशनर्स द्वारा अपनी लंबित मांगों के शासन स्तर से निराकरण हेतु तीन चरणों में आंदोलन किया जाना प्रस्तावित किया गया है। प्रथम चरण मे 10 जून को तहसील स्तर पर उपस्थित होकर सभी पेंशनर्स मुख्यमंत्री महोदय, राज्यपाल महोदय के नाम से ज्ञापन दिया जावेगा । 30 जून को जिला स्तर पर सभी पेंशनर्स साथी एकत्र होकर कलेक्टर को ज्ञापन प्रस्तुत करेंगे। 22 जुलाई को भोपाल में जंगी प्रदर्शन किया जावेगा । इस अवसर पर प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन धार जिला अध्यक्ष प्रमोद टोंगिया ने जिले के पदाधिकारियों से निवेदन किया है कि प्रस्तावित आंदोलन मे सम्मिलित होकर इसे सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

इस अवसर पर 15 सदस्यों द्वारा संघ की नवीन सदस्यता ग्रहण की गई । सभी सदस्यों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में मोहन सिंह परिहार, हरिहरदत शुक्ल , के के वर्मा, संरक्षक के पी निगम, प्रदीप देवास्कर , गजेंदर सिंह चौहान, अशोक तंवर, श्रवण नायक, जगदीश शर्मा, सईद खान, देवीसिंह वर्धमान, भानालाल सोलंकी, शांतिलाल राठौर, चंद्रावत जी, कैलाश बघेल, आदि पदाधिकारी उपस्थित हुए। कार्यक्रम का संचालन श्याम शर्मा , आभार गजेंद्र सिंह चौहान द्वारा किया गया।

हरित सहकार अभियान'' विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ''एक पेड़ मॉ के नाम'' अंतर्गत पौधारोपण किया

धार। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, धार में सुश्री वर्षा श्रीवास, बैंक प्रशासक एवं उपायुक्त सहकारिता धार एवं के.के. रायकवार बैंक मुख्य कार्यपालन अधिकारी की उपस्थिति में पर्यावरण प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग एवं प्लास्टिक के बढ़ते उपयोग से पर्यावरण सरंक्षण हेतु ''हरित सहकार अभियान'' एवं विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ''एक पेड़ मॉ के नाम'' से पौधारोपण महा-अभियान कें अंतर्गत आज पौधारोपण बैंक मुख्यालय परिसर धार में किया गया। साथ ही बैंक की शाखाओं एवं

बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख सहकारी संस्थाओं में''हरित सहकार अभियान'' अंतर्गत पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इस अवसर पर बैंक प्रशासक एवं उपायुक्त सहकारिता जिला धार एवं बैंक मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों को भी आगामी मानसून सीजन में पौधारोपण किये जाने एवं सहकारी समितियों के माध्यम से ''हरित सहकार अभियान'' को पर्यावरण संरक्षण एवं ग्रामीण विकास का एक प्रभावी मॉडल बनाये जाने एवं अभियान को सहकारिता आंदोलन का सामाजिक एवं पर्यावरणीय नेतृत्व प्रदान किये जाने हेतु प्रेरित किया गया।

इस अवसर पर सोनिया लाड प्रबंधक लेखा, सौरव सिंह समकारिया विपणन अधिकारी, उज्जवल वर्मा प्रभारी स्थापना, विकास लाड प्रभारी शाखा प्रबंधक, अंकित परमार प्रभारी योजना एवं विकास एवं समस्त मुख्यालय, शाखा के कर्मचारी उपस्थित रहे।

हरा भरा न्यायालय परिसर, अन्य शासकीय कार्यालयों के लिए प्रेरणाः शर्मा

बैतूल/आमला। आमला न्यायालय परिसर में अधिवक्तागण की ओर से आज दोपहर में 2 बजे पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। जिसमें वार्ड क्र. 5 के पार्षद राकेश शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र शर्मा सहित अधिवक्ता गण मौजूद थे। पार्षद राकेश शर्मा ने कहा कि प्ररोहण 2026 हरित आमला हरित प्रदेश हरित न्यायालय में मील का पत्थर साबित होगा। यह प्रयास प्रेरणादायक है। अधिवक्ता संघ आमला के उपाध्यक्ष रवि शंकर पटवारी ने वकीलों को संबोधित करते हुए कहा कि पौधे धरती का श्रृंगार होते हैं। इसे केवल भूमि में लगाकर औपचारिकता पूरी नहीं करनी चाहिए, बल्कि इसका पालन पोषण करे और जब बड़े होकर यह पुष्प और फल देते हैं, तो वह हमारे आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत लाभदायक होती है। कार्यक्रम में बीजों का रोपण और औषधि पौधों को लगाया गया। नीम पीपल बादाम आवला अशोक हरसिद्धि कनेर बेलपत्र के पौधो को स्वर्गीय तपेश कुमार दुबे द्वारा पूर्व में तैयार की गई। न्याय वाटिका में लगाया गया वकील राजेंद्र उपाध्याय ने बताया कि गमले में तुलसी के पौधे लगाकर वह सभी अधिवक्ता साथियों के शेड में लगाएंगे। साथ ही उन्होंने न्यायालय परिसर में माली की पद स्थापना की मांग भी की। जितेंद्र शर्मा ने पौधरोपण के महत्व को बताते हुए कहा कि यह कार्य हमें करना ही है। शास्त्रों में प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारियां का निर्वहन करने का कहा गया है।

कार से अवैध 15 पेटी शराब कार सहित आरोपी पुलिस गिरफ्तार, पहली बार इतनी मात्रा में शराब जब्त

सोहागपुर। सोहागपुर पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर पिपरिया से नर्मदापुरम एक कार से अवैध शराब की जानकारी प्राप्त होने के उपरांत सोहागपुर पुलिस ने टीम बनाकर सजगता से ग्राम रेवा बनखेड़ी मोड़ पर सक्रिय खड़ी पुलिस ने सफेद मारूति कार को रोका लेकिन पुलिस स्टाफ को देखकर भागने की असफल कोशिश की। लेकिन पुलिस ने घेराबंदी करके कार को सहित वाहन चालक को पकड़ लिया। उल्लेखनीय है कि पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम ने अवैध मादक पदार्थ एवं अवैध शराब विक्रय करने वाले व्यक्तियों के विरूद्ध कार्यवाही करने हेतु आदेशित किया गया था। जिसमें श्रीमान पुलिस पुलिस अधीक्षक नर्मदापुरम श्री साई कृष्णा एस0 थोटा , अति पुलिस अधीक्षक, श्री अभिषेक राजन नर्मदापुरम के निर्देशन एवं अनुविभागीय अधिकारी पुलिस सोहागपुर श्री संजू चौहान मार्गदर्शन बीती रात कार पकड़ ली गई। पुलिसकर्मियों ने कार की तलाश ली।जिसमें 15 पेटी शराब मिली। पुलिस आरोपी ने अपना नाम पियूष उर्फ प्रवीण पिता अनिल उम्र 22 साल निवासी ग्राम भाट मोहल्ला इटारसी का होना बताया । उसके कब्जे से एक मारूती कार कं0 एमपी 05 सीए 6355 एवं 15 पेटी प्लेन मंदिरा 720 क्वार्टर कुल 750 क्वार्टर में 180 एमएल कुल 135 लीटर कीमति कुल 75 हजार रूपये की शराब जप्त करके आरोपी के विरूद्ध धारा 34 (2) आबकारी एक्ट अपराध कं0 369/26 धारा 34 (2) कायम कर विवेचना में लिया है। इस प्रकरण के आरोपी पियूष उर्फ प्रवीण पिता अनिल उम्र 22 साल नि0 ग्राम भाट मोहल्ला इटारसी को गिरफ्तार माननीय न्यायालय सोहागपुर पेश किया गया।आरोपी को माननीय न्यायालय के द्वारा न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया।

हमें जंगल बचाना सीखना होगाः दीवान

भोपाल। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर, जन स्वास्थ्य अभियान इंडिया (जेएसआई) ने गांधी भवन में व्यावसायिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, जम्मू और कश्मीर, दिल्ली, बिहार, छत्तीसगढ़, मणिपुर, असम, ओड़ीशा, गुजरात, महाराष्ट्र और राजस्थान के मजदूर संगठनों, जन स्वास्थ्य विशेषज्ञों, समुदाय के प्रतिनिधियों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने व्यावसायिक स्वास्थ्य, पर्यावरणीय नुकसान और मजदूरों के अधिकारों से जुड़ी चुनौतियों पर चर्चा की। व्यावसायिक स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और पानी एवं वैश्विक गर्मी जैसे चार सत्रों में इस चर्चा को आयोजित किया गया।

सम्मेलन में इस बात पर जोर दिया गया कि भारत में काम से जुड़ी सेहत और सुरक्षा एक बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता बनी हुई है, लाखों मजदूर उद्योगों, खनन, निर्माण, घरेलू काम और दूसरे अनौपचारिक क्षेत्रों में खतरनाक हालात का सामना करते हुये काम कर रहे हैं। प्रतिभागियों ने मजदूरों की सेहत की सुरक्षा के लिए श्रम कानूनों, काम से जुड़ी सुरक्षा के मानकों को बेहतर ढंग से लागू करने और संगठित प्रयास करने की जरूरत पर चर्चा की। सिलिकोसिस से प्रभावित कुछ मजदूरों ने अपनी कहानियां और मदद पाने में आने वाली चुनौतियों के बारे में भी बताया। ऐसे सम्मेलनों के महत्व को बताते हुए, अमूल्य निधि ने कहा कि हमें अपनी जागरूकता बढ़ानी होगी और पर्यावरण की रक्षा तथा काम से जुड़ी स्वास्थ्य संबंधी खतरों से बचाव के लिए मिलकर काम करना होगा। व्यावसायिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ जगदीश पटेल ने कहा कि काम से जुड़े स्वास्थ्य खतरों के मामले में हर जगह जोखिम है, और हमें उनकी पहचान करने की जरूरत है। 90 से ज्यादा ऐसे काम हैं जिनसे सिलिकोसिस हो सकता है। 70 से ज्यादा देशों ने एस्बेस्टस पर रोक लगा दी है, भारत ने सिर्फ एस्बेस्टस की माइनिंग पर रोक लगाई है, लेकिन इसके इंपोर्ट की इजाजत है। काम से जुड़े खतरों के बारे में बात करते हुए सुश्री चुन्नी ने कहा कि काम के दौरान मजदूरों को कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ता है।

आकाशवाणी के 90 वर्ष पूर्ण होने पर तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

भोपाल। आकाशवाणी के 90 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आकाशवाणी भोपाल द्वारा शासकीय सरदार वल्लभभाई पटेल पॉलीटेक्निक महाविद्यालय, भोपाल में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के विषय भारतीय संस्कृति तथा समाज में आकाशवाणी की भूमिका से संबंधित थे, जिन पर विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी मनीष गजभिये ने आकाशवाणी के जनहितकारी कार्यक्रमों एवं समाज में उसकी सकारात्मक भूमिका की जानकारी दी। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की रिकॉर्डिंग 'युववाणी' कार्यक्रम के लिए भी की गई, जिसका प्रसारण 8 जून को पूरे मध्य प्रदेश में किया जाएगा।प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले आदित्य कुमार पटेल को 8 जून को आकाशवाणी के 90वे स्थापना दिवस के अवसर पर एक दिन का आरजे बनने का अवसर प्रदान किया जाएगा। इसके अंतर्गत वे आकाशवाणी के लाइव प्रसारण में सहभागिता करते हुए श्रोताओं से सीधे संवाद स्थापित करेंगे। कार्यक्रम प्रमुख शुभम् तिवारी ने कहा कि युवाओं की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना आकाशवाणी की प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन युवा पीढ़ी को समाज और राष्ट्र से जुड़े विषयों पर अपने विचार प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान करते हैं।कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

संगीत की लता पर सुमन की तरह महकती रही

सुमन कल्याणपुर

अशोक जोशी

(लेखक और समीक्षक)

संयोग है कि लता की तरह गाने वाली सुमन कल्याणपुर की आवाज ही नहीं बल्कि उनके नाम और लता के नाम में भी साम्यता थी। सुमन का शाब्दिक अर्थ पुष्प होता है और सभी जानते हैं कि ज्यादातर सुगंधित पुष्प लता पर ही खिलते हैं। सुमन कल्याणपुर की आवाज भी लता की तरह खिली। लेकिन, जिस दौर में उनका आगाज हुआ साक्षात लता मंगेशकर सफलता के सातवें आसमान पर थी। इसलिए उनकी रोशनी में सुमन कल्याणपुर की आवाज एक तरह से दबकर रह गई और उन्हें उतना नाम और काम नहीं मिला जिसकी वे हकदार थी। फिर भी उन्होंने कभी इस बात का अफ़सोस नहीं किया। अपने इसी संतोषी और सौम्य स्वभाव के कारण वे हिंदी सिनेमा की सम्मानजनक गायिका के रूप में अपना स्थान बनाने में कामयाब रही।

वैसे तो संगीत के सुर ही सुरीले होते हैं, लेकिन जब इन्हें किसी सौम्य गायक के गले से पेश किया जाए तो इन सुरों में सुरीलेपन के साथ सौम्यता भी जुड़ जाती है। हिंदी सिनेमा को भी पचास के दशक में एक ऐसी गायिका मिली, जिनके व्यक्तित्व से सौम्यता झरती थी। जब उन्होंने अपनी महीन आवाज में गाना आरम्भ किया तो दर्शकों ने उन्हें बेहद पसंद किया। लेकिन देश की महानतम गायिका लता मंगेशकर की आवाज से मेल खाती उनकी आवाज उनके लिए परेशानी का सबब भी बन गई। इसके बावजूद एक दौर ऐसा भी आया जब संगीतकारों ने उन्हें लता के स्थान पर जगह देकर काम दिया और उन्होंने एक तरह से लता की कमी को महसूस न होने दिया। यह गायिका थी सुमन कल्याणपुर जिनका हाल ही में 89 साल वर्ष की उम्र में निधन हुआ। सुमन कल्याणपुर का नाम भारतीय फिल्म संगीत के इतिहास में सदैव एक ऐसी गायिका के रूप में याद किया जाएगा, जिनकी आवाज में मिठास, शालीनता और भावनात्मक गहराई का अद्भुत संगम था सुमन कल्याणपुर हिंदी सिनेमा की अत्यंत लोकप्रिय पार्श्वगायिका थीं।

संयोग है कि लता की तरह गाने वाली सुमन कल्याणपुर की आवाज ही नहीं बल्कि उनके नाम और लता के नाम में भी साम्यता थी। सुमन का शाब्दिक अर्थ पुष्प होता है और सभी जानते हैं कि ज्यादातर सुगंधित पुष्प लता पर ही खिलते हैं। सुमन कल्याणपुर की आवाज भी लता की तरह खिली। लेकिन, जिस दौर में उनका आगाज हुआ साक्षात लता मंगेशकर सफलता के सातवें आसमान पर थी। इसलिए उनकी रोशनी में सुमन कल्याणपुर की आवाज एक तरह से दबकर रह गई और उन्हें उतना नाम और काम नहीं मिला जिसकी वे हकदार थी। फिर भी उन्होंने कभी इस बात का अफ़सोस नहीं किया। अपने इसी संतोषी और सौम्य स्वभाव के कारण वे हिंदी सिनेमा की सम्मानजनक गायिका के रूप में अपना स्थान बनाने में कामयाब रही।

सुमन कल्याणपुर हिन्दी सिनेमा की स्वर्णिम पीढ़ी की उन महान पार्श्वगायिकाओं में थीं, जिन्होंने अपनी मधुर, कोमल और सुरेली आवाज से लाखों श्रोताओं के दिलों में स्थान बनाया। उनका जन्म 28 जनवरी 1937 को ढाका (तत्कालीन ब्रिटिश भारत) में सुमन हेम्माडी के रूप में हुआ था। बाद में विवाह के पश्चात वे सुमन कल्याणपुर कहलायीं। उन्होंने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की और 1950 के दशक में फिल्मी गायन की दुनिया में प्रवेश किया। उन्होंने 1954 में प्रदर्शित फिल्म 'मंगू' में 'कोई पुकारे धीरे से तुझे' गाना गाया। उसके बाद मियां बीबी राजी, बात एक रात की, दिल एक मंदिर, दिल ही तो है, शगुन, जहांआरा, राजकुमार, जानवर, अप्रैल फूल, सांझ और सवेरा, नूरजहां, साथी और %पाकीजा% के लिए एक से बढ़कर एक मधुर गीत गाए। इस दौरान उन्होंने संगीतकार शंकर-जयकिशन, रोशन, मदन मोहन, एसडी बर्मन, एन दत्ता, हेमंत कुमार, चित्रगुप्त, नौशाद, एसएन त्रिपाठी, गुलाम मोहम्मद, कल्याणजी-आनंदजी से लेकर लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल तक सभी के लिए लिए गाने गाए। उन्होंने 740 से अधिक फिल्मी और गैर-फिल्मी गाने गाए, जिसमें उन्होंने सबसे ज्यादा लगभग 150 गीत रफी के साथ मिलकर गीत गाए।

1950 और 1960 के दशक में इस अवधि को हिंदी फिल्म संगीत के स्वर्ण युग के रूप में संदर्भित किया गया था। इस समय शमशाद बेगम, गीता दत्त, लता मंगेशकर, सुमन कल्याणपुर, आशा भोंसले के महिला पार्श्वगायक का बोलबाला था। इसी अवधि के दौरान, लता ने रॉयल्टी के मुद्दों पर रफी के साथ गाने से इनकार कर दिया था। इसका सबसे ज्यादा फायदा सुमन कल्याणपुर को मिला। इस दौरान लता के द्वारा गाए जाने वाले गीतों को रफी के साथ कल्याणपुर द्वारा रिकॉर्ड किया गया। सुमन कल्याणपुर ने इन गानों को इतनी शिद्दत के साथ गाया कि आम श्रोता उन्हें लता के गीत ही मानते रहे। उन्होंने इस अवधि में रफी के साथ 140 से अधिक युगल गीत गाए। इनमें से कई गाने आज भी बहुत लोकप्रिय हैं।

सुमन कल्याणपुर की आवाज की तुलना अक्सर लता मंगेशकर से की जाती थी, क्योंकि दोनों के स्वर में अद्भुत समानता थी। स्वयं सुमन जी ने कहा था कि उन्होंने कभी किसी की नकल नहीं की, बल्कि अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास किया। 1960 और 1970 के दशक में उन्होंने अनेक अमर गीत गाए। उनके लोकप्रिय गीतों में आजकल तेरे मेरे प्यार के चर्चे, न तुम हमें जानो, तुमने पुकारा और हम चले आए ,ना ना करते प्यार तुम ही से कर बैठे, मेरा प्यार भी तू है, ठहरिए होश में आ लूँ, दिल ने फिर याद किया, परबतों के पेड़ों पर शाम का बसेरा, अजहूँ न आए बालमा, तुझे प्यार करते हैं करते रहेंगे, मुझे ये फूल न दे, चुरा ले न तुमको, ये मौसम सुहाना, बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है, जूही की कली मेरी लाडली और 'कितना है तुमसे प्यार मुझे मेरे राजदार' जैसे सुरीले गीत शामिल है।

सुमन कल्याणपुर ने हिंदी, मराठी, असमिया, गुजराती, कन्नड़, मैथिली, भोजपुरी, राजस्थानी, बंगाली, ओडिया और पंजाबी के अलावा अन्य कई भाषाओं में भी फिल्मों के लिए गाने रिकॉर्ड किए हैं। सुमन कल्याणपुर को मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर, मुकेश, गीता दत्त, आशा भोसले, हेमंत कुमार, तलत महमूद, किशोर कुमार, मन्ना डे, महेंद्र कपूर और शमशाद बेगम, के साथ हिंदी फिल्म संगीत के सुनहरे युग के लोकप्रिय गायिकाओं में से एक माना जाता है। भारत सरकार ने उनके संगीत-जगत में अमूल्य योगदान के लिए उन्हें 2023 में नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया। 31 मई 2026 को 89 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उनके निधन को भारतीय फिल्म संगीत के एक युग के अंत के रूप में देखा गया । इसे सुखद संयोग ही माना जाएगा कि संगीत की इस सुमन को अंतिम विदाई देते समय दाह संस्कार के पहले उपस्थित सभी लोगों ने 'रहें न रहे हम महका करेंगे' गीत गाकर उन्हें पंचतत्व में विलीन किया। एक सुरीली आवाज को इससे बढकर श्रद्धांजलि और क्या हो सकती थी!

स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने अधिकारी मैदान में

ग्वालियर (निप्र)। जिले में आमजन को बेहतर एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए शासन की मंशा के अनुरूप जिला प्रशासन लगातार प्रयासरत है।

कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान के निर्देश पर सभी एसडीएम अपने-अपने क्षेत्र के सामुदायिक, प्राथमिक व उप स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण कर रहे हैं। इस दौरान स्वास्थ्य सेवाओं को और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए जा रहे हैं। इस कड़ी में बुधवार को शहरी स्वास्थ्य केन्द्र हुरावली व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चीनौर सहित अन्य सरकारी अस्पतालों का निरीक्षण किया गया। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने निर्देश दिए हैं कि सभी प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में मरीजों को समय पर उपचार, आवश्यक दवाइयां और अन्य स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। उन्होंने चिकित्सकों एवं स्वास्थ्य कर्मियों की नियमित उपस्थिति, स्वास्थ्य केन्द्रों की साफ-सफाई, पेयजल, विद्युत व्यवस्था तथा आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया है।

बुधवार को एसडीएम झांसी रोड श्री अतुल सिंह ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हुरावली का निरीक्षण किया। उन्होंने स्वास्थ्य केन्द्र में मरीजों को उपलब्ध कराई जा रही सेवाओं, दवा वितरण व्यवस्था तथा अन्य व्यवस्थाओं का अवलोकन कर आवश्यक सुधारात्मक निर्देश दिए। साथ ही स्वास्थ्य कर्मियों से कहा कि मरीजों को बेहतर उपचार और सुविधाएं उपलब्ध कराने में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए।

वहीं एसडीएम भितरवार श्री राजीव समाधिया ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चीनोर का निरीक्षण कर स्वास्थ्य सेवाओं एवं व्यवस्थाओं की समीक्षा की।

प्रदेश में प्री मानसून जमकर बरस रहा

45 जिलों में आज भी अलर्ट, 60किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से चलेगी आंधी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में मानसून की एंट्री भले ही न हुई हो, लेकिन प्री मानसून जमकर बरस रहा है। झाबुआ में शुक्रवार सुबह जोरदार बारिश हुई। धार, पीथमपुर और रतलाम में भी पानी गिरा। देवास में बारिश की वजह से एक कार रपटे में बह गई।

इससे पहले भोपाल में गुरुवार शाम करीब 70 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार के साथ आंधी चली और बारिश हुई। करीब 80 पेड़ या उनकी टहनियां सड़कों पर गिर गईं। इससे ट्रैफिक जाम के हालात बने। ओले भी गिरे। मौसम केंद्र के मुताबिक, भोपाल-इंदौर समेत करीब 45 जिलों में मौसम बदला सकता। 60किमी प्रतिघंटा तक की रफ्तार से आंधी चल सकती है। नीमच, मंदसौर, आगर-मालवा, श्योपुर, शिवपुरी, अशोक नगर, सागर और दमोह में तेज आंधी का ऑरेंज अलर्ट है।

वहीं, रायसेन, सीहोर, राजगढ़, विदिशा, धार, अलीराजपुर, बुरहानपुर, बड़वानी, खंडवा, खरगोन, झाबुआ, उज्जैन, शाजापुर, देवास, रतलाम, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, ग्वालियर, गुना, दतिया, मुरैना, भिंड, जबलपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, नरसिंहपुर, बालाघाट, मंडला, पांढुर्णा, सतना, पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़ और निवाड़ी में कहीं तेज आंधी तो कहीं बारिश वाला मौसम बना रहेगा।

भोपाल-इंदौर समेत 35 जिलों में तेज आंधी का अलर्ट

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटे के दौरान 35 जिलों में तेज आंधी चलने का अलर्ट जारी किया है। इसके अनुसार, भोपाल, श्योपुर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, आगर-मालवा, शाजापुर, राजगढ़, देवास, रायसेन, सीहोर में 40 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चल सकती है।

इसके अलावा विदिशा, इंदौर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, सतना, मैहर, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, कटनी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर में भी आंधी-बारिश का दौर जारी रहेगा।

आंधी से सिस्टम फेल...भोपाल में रातभर गुल रही बिजली,तारों पर गिरे पेड़, झूके पोल

गुरुवार को तेज आंधी की वजह से भोपाल की बिजली सप्लाई सिस्टम फेल हो गया। 350 फीडरों के नेटवर्क से सैकड़ों इलाकों में सप्लाई पर असर पड़ा। जिसे सुधारने में टीमें शुक्रवार सुबह 4.30 बजे तक जुटी रहीं। वहीं, 10 विशेष टीमें लगी हुई हैं। अफसरों का कहना है कि क्षतिग्रस्त और फॉल्टी हिस्सों को हटाकर लाइनें जोड़ी गईं। ताकि, तत्काल राहत मिल सके। आज पूरे हिस्से को दुरुस्त कर रहे हैं।

बता दें कि गुरुवार शाम भोपाल में 70 से 80 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी चली थी। इससे पूरे शहर में बिजली की सप्लाई पर असर पड़ा। हालांकि, सवाल ये खड़ा होता है कि जब बिजली कंपनी पूरे साल लाइनों का मेंटेनेंस करती है तो फिर पहली ही तेज आंधी में सिस्टम फेल कैसे हो गया?

इसे लेकर बिजली कंपनी के अधीक्षण यंत्री प्रदीप सिंह चौहान का कहना है कि लाइन का मेंटेनेंस किया जाता है। जिसमें लाइन सुधार और पेड़ों की टहनियों को हटाया जाता है। गुरुवार शाम को तूफान इतना तेज था कि बिजली के पोल ही झुक गए थे। कई पेड़ उखड़कर जमींदोज हो गए। टीमें पूरी रात लाइन सुधारने में जुटी रही। सुबह तक बिजली सप्लाई बहाल कर दी गई।

अन्ना नगर की सिंदूर वाटिका में मंत्री सारंग ने किया पौध-रोपण

प्रधानमंत्री ने दी पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन को नई दिशा

भोपाल (नप्र)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सहकारिता, खेल और युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने शुक्रवार को नरेला विधानसभा क्षेत्र के अन्ना नगर स्थित सिंदूर वाटिका में एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत पौध-रोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन का संकल्प लिया। पौधारोपण कार्यक्रम के दौरान मंत्री श्री सारंग ने उपस्थित नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनकी नियमित देखभाल करने का आह्वान किया।

मंत्री श्री सारंग कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन को नई दिशा मिली है। आगे उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में एक पेड़ माँ के नाम अभियान पर्यावरण के संरक्षण और अपने माँ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का जन-जन का संकल्प बन चुका है। उन्होंने कहा कि पौधारोपण वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक आवश्यकता है, जो पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के साथ-साथ आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य प्रदान करता है। इस अवसर पर स्थानीय जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता, नागरिक एवं पर्यावरण प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

पर्यावरण संरक्षण सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण और संवर्द्धन हम सभी की सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारी है। यदि हम आज प्रकृति की रक्षा करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण, पर्याप्त प्राकृतिक संसाधन और बेहतर जीवन उपलब्ध करा सकेंगे। उन्होंने नागरिकों से अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण अनुकूल आदतों को अपनाने, जल संरक्षण करने, प्लास्टिक के उपयोग को कम करने तथा अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने का भी आग्रह किया।

पर्यावरण के संरक्षण और संवर्धन को मिली नई दिशा

मीडिया से चर्चा करते हुए मंत्री श्री सारंग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में पर्यावरण संरक्षण, संवर्धन और उसके सतत विकास और जनभागीदारी को नई दिशा मिली है। उनके नेतृत्व में भारत ने विकास और कल्याण के नए आयाम स्थापित किए हैं तथा वैश्विक स्तर पर अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है। आगे उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत विभिन्न स्थानों पर व्यापक स्तर पर वृक्षारोपण किया गया है। यह अभियान प्रकृति और मातृत्व के प्रति सम्मान का प्रतीक है, जो समाज को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने का महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है।

मंत्री श्री सारंग ने कहा कि इस अवसर पर पूरे देश में लाखों की संख्या में पौधे रोपे जा रहे हैं और पर्यावरण संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप दिया जा रहा है।

कोलार लाइन सुधरी, फिल्टर प्लांट से डायरेक्ट सप्लाई

शाम तक 75 इलाकों में पहुंचेगा पानी, 10 लाख आबादी थी तीन दिन से परेशान

भोपाल (नप्र)। भोपाल की 40 प्रतिशत यानी 10 लाख से अधिक आबादी की प्यास बुझाने वाली कोलार लाइन सुधार दी गई है। निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने बताया शुक्रवार सुबह 6 बजे से कोलार लाइन से जुड़े इलाकों में सप्लाई शुरू कर दी है। लोगों को राहत देने के लिए पहले टंकियां नहीं भरी गई है। कोलार फिल्टर प्लांट से डायरेक्ट सप्लाई की गई है।

निगम के अधीक्षण यंत्री उदित गर्ग ने बताया कि बांसखेड़ी में कोलार लाइन को सुधारने का काम गुरुवार रात 9 बजे तक निपटा दिया था। वहीं, रात में ही पंप चालू कर दिए थे। इसके बाद आज सुबह से सप्लाई शुरू कर दी। चार इमली, शिवाजी नगर, तुलसी नगर, ई-1, ई-5, ई-6, अरेरा कॉलोनी, पीजीबीटी, नारियलखेड़ा, टीला जमालपुरा, जवाहर चौक, इब्राहिमपुरा में सप्लाई की गई है। बाकी इलाकों में बारी-बारी से पानी पहुंचाया जा रहा है।

कोलार की 68 टंकियां, सप्लाई के बाद भरेंगे

अधीक्षण यंत्री गर्ग ने बताया कि भोपाल में कोलार, नर्मदा, केरवा और बड़ा तालाब की कुल 173 टंकियां हैं। फिल्टर प्लांट से पहले इन टंकियों को भरा जाता है, इसके बाद पानी की सप्लाई होती है। आज सुबह डायरेक्ट फिल्टर प्लांट से पानी की सप्लाई की गई। जब सप्लाई पूरी हो जाएगी, इसके बाद कोलार लाइन की कुल 68 टंकियों को भरेंगे। ताकि, शनिवार से नियमित जलप्रदाय किया जा सके।

तीन दिन से चल रहा था सुधार कार्य, टैंकरों से जलप्रदाय

बता दें कि कोलार प्रोजेक्ट की 1650 एमएम व्यास की ग्रेविटी पाइप लाइन में

पिछले तीन दिन से सुधार चल रहा था। यह लीकेज हो गई थी। इस वजह से कोलार लाइन से जुड़े इलाकों में पानी की सप्लाई नहीं हो रही है। जिससे 75 से ज्यादा इलाके प्रभावित रहे। कई इलाकों में टैंकरों से जलापूर्ति की गई, लेकिन यह पर्याप्त नहीं था। इस कारण लोगों को रुपए देकर खरीदना पड़ा।

इन इलाकों में पड़ा असर

जोन नंबर-3 के अंतर्गत नारियलखेड़ा, रेजीमेंट रोड, शाहजहांनाबाद, मुर्गी बाजार, रामनगर, रेशम केंद्र, पूर्वी और पश्चिमी निशातपुरा।

जोन-4 के चौकसे नगर, ग्रीन पार्क, इंदिरा सहायता नगर, डीआईजी बंगला, शांति नगर, सिंधी कॉलोनी, भोपाल टॉकीज, हमीदिया रोड, संगम टॉकीज आदि।

जोन-5 के अंतर्गत मोती मस्जिद, गिन्नौरी, इब्राहिमपुरा, बुधवारा, इतवारा, मंगलवारा, काली मंदिर, इस्लामपुरा, सेंट्रल लायब्रेरी, छावनी।

जोन-6 के अंतर्गत 1100 क्वार्टर्स, शाहपुरा, त्रिलंगा, ई-7 अरेरा कॉलोनी, पंचशील नगर, श्याम नगर, 12 नंबर मल्टी आदि।

जोन-7 के तुलसी नगर, माता मंदिर, चक्की चौराहा, शिवाजी नगर आदि।

जोन-8 के अंतर्गत चार इमली, शिवाजी नगर, चूना भट्टी, कोलार बस्ती, दुर्गा नगर, पंपापुर, राहुल नगर बस्ती, राहुल नगर मल्टी, वैशाली नगर, सुरूचि नगर, निवेश नगर, नेहरू नगर, कोटरा सुल्तानाबाद, नया बसेरा, अंबेडकर नगर, गवर्मेंट क्वार्टर्स कोटरा सुल्तानाबाद।

जोन-10 के अंतर्गत एमपी नगर जोन-2, शिवाजी नगर, अरेरा कालोनी, ई-1 से ई-7 तक, ईश्वर नगर, गुलमोहर जी-3, गुलमोहर कॉलोनी, लक्ष्मण नगर, भरत नगर, सांईबाबा बोर्ड, जनता क्वार्टर्स आदि क्षेत्रों में जलप्रदाय बाधित रहा।

राइट क्लिक

महज एक माह में तृणमूल कांग्रेस के तिनका- तिनका बिखरने के मायने...

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के कार्यकारी प्रधान संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

पश्चिम बंगाल में पूर्व मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी की पार्टी अ.भा.तृणमूल कांग्रेस को राज्य में विधानसभा चुनाव हारे महज महीना ही हुआ है, लेकिन इन तीस दिनों में पार्टी जिस तरह तिनका-तिनका बिखर रही है, वह अपने आप में हैरतनाक और राजनीतिशास्त्र के विद्यार्थी के लिए शोध का विषय है। चुनाव हारने के बाद राजनीतिक पार्टियां कई बार टूटती-बिखरती हैं, लेकिन उसमें भी समय लगता है। लेकिन एक माह पहले तक 'अजेय' समझी जाने वाली टीएमसी के विधायक दो फाड़ हो गए और सांसद कभी भी दो हिस्सों में बंट सकते हैं। टूटन का यह खेल निचले स्तर तक भी पहुंच चुका है। टीएमसी में बिखराव के इस खेल के पीछे भाजपा का हाथ माना जा रहा है, लेकिन भाजपा तो निमित्त है, जो हो रहा है, उससे यह भी उजागर हो रहा है कि टीएमसी वैचारिक, संगठनात्मक और प्रतिबद्धता की दृष्टि से कितनी पोली जमीन पर खड़ी थी। कभी राजनीतिक विचार क्रांति के केन्द्र रहे बंगाल में सियासत का मतलब अब केवल सत्ता का गोंद है, यह टीएमसी के हश्र से सिद्ध हो रहा है। ऐसे में कई सवाल उठ रहे हैं। पहला, कल तक राष्ट्रीय स्तर पर विपक्ष की नेता बनने का ख्वाब देख रही ममता बैनर्जी क्या बंगाल में ही अपनी पार्टी को बचा पाएंगी ? क्या हर क्षेत्रीय अथवा जातिवादी पार्टी की ? त्रासदी परिवारवाद ही है? ममता की पार्टी के राजनीतिक अवसान से राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के नए सिरे उभार को मदद मिलेगी या कांग्रेस भी अंततः इसी अंतर्विरोध का शिकार होगी? और यह भी कि भाजपा का 'बंगाल मॉडल' देश के राजनीतिक नक्शे और तासीर को कितना और कैसे बदलेगा?

ममता बनर्जी जितनी जुझारू हैं, उससे भी ज्यादा झगड़ालू नेता हैं। हर वक्त पंगा और टकराव तालियां तो बजवा सकता है, लेकिन जनता के मन में एक गंभीर और विश्वसनीय नेता की छवि निर्मित नहीं कर सकता। अगर तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की ही बात की जाए तो उसकी विचारधारा में अल्पसंख्यकों की ओर झुकी हुई धर्मनिरपेक्षता, बंगाली भाषा और अस्मिता का आग्रह तथा रेवड़ी और कल्याणकारी सरकार के साथ देश के सर्वांगीण विकास का आग्रह है, लेकिन बुनियादी तौर पर वह सत्ता प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के गणित से ही संचालित होता है। ममता उद्योगों के लिए लोगों की जमीनों के हस्तांतरण और तत्कालीन कम्युनिस्ट सरकार का तगड़ा विरोध कर 2011 में सत्ता में आईं। लेकिन बंगाल में सत्ता में जमे रहने के राजनीतिक अनुष्ठान के अलावा और कुछ नहीं हुआ। परिणामस्वरूप लोगों को ममता राज से मोहभंग होने लगा और उन्हें एक सशक्त विकल्प की तलाश थी, जो 2026 के चुनाव में भाजपा के रूप में मिला और मतदाता से उसे ही जिता दिया। अब भले ही ममता इसका ठीकरा एसआईआर और भाजपा की साम्प्रदायिकता पर फोड़ती रहें, लेकिन सच सामने आ रहा है। ममता सरकार कुशासन के प्रति लोगों का गुस्सा उन्हें सत्ता से बेदखल करने के बाद भी थमता नहीं दिख रहा। लेकिन पार्टी में भी बगावत का सिलसिला अगर नहीं थम रहा तो इसका बड़ा कारण ममता बनर्जी का तानाशाहीपूर्ण रवैया और परिवारप्रेम है। यही वो फांस है, जिसकी लगभग सभी क्षेत्रीय और जातिवादी पार्टियां शिकार हैं, यह जानते हुए भी कि यह प्रवृत्ति अतंतः उनके पतन का कारण बनती है। यह बात अलग है कि ऐसे नेता दीवार पर लिखी इस इबारत को नहीं पढ़ना चाहते। ममता की पार्टी में टूटन का अभिषेक भतीजे अभिषेक बनर्जी को 2021 से अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में आगे बढ़ाने की कोशिशों से हो गया था। आम कार्यकर्ता में यही संदेश गया कि उसका कोई राजनीतिक भविष्य नहीं है। अभिषेक ने भी पार्टी को तानाशाह की तरह से चलाना शुरू किया। जबकि ममता ने पार्टी में बढ़ रही आंतरिक नाराजी और कुलबुलाहट को लगातार अनदेखा किया। उसका नतीजा इस विधानसभा चुनाव में आ गया। यदि वो बीमारी का सही वक्त पर इलाज कर लेतीं तो शायद पश्चिम बंगाल के चुनावी नतीजे अलग भी हो सकते थे। सबसे आश्चर्य की बात उन मुस्लिम विधायकों का भी ममता का साथ छोड़ जाना है, जिनके लिए ममता ने तुष्टिकरण का इल्जाम अपने सिर पर लिया और ये वोट बैंक अभी भी ममता बनर्जी के साथ है। टीएमसी के टिकट पर जीते 17 मुस्लिम विधायक अब बागी गुट के साथ हैं।

जिन 58 बागियों की अगुवाई कर ऋतुब्रत बनर्जी पश्चिम बंगाल विस में नेता प्रतिपक्ष बन गए हैं, वो खुद पुराने कम्युनिस्ट हैं और सीपीएम से राज्यसभा सांसद भी रह चुके हैं। हालांकि ऋतुब्रत पर लगे चारित्रिक आरोपों के बाद पार्टी ने उन्हें निकाल दिया था। उसके बाद ऋतुब्रत टीएमसी में आ गए और ममता दीदी के चहेते बन गए। लेकिन हम उम्र अभिषेक को ज्यादा तवज्जो मिलने के बाद उन्होंने बगावत का रास्ता चुन लिया। यह कहना गलत नहीं होगा कि जिस तरह 2011 के विस चुनाव में ममता बनर्जी ने कांग्रेस के साथ गठबंधन बनाकर राज्य में बरसों से जमे कम्युनिस्टों को हमेशा के लिए सत्ता से बेदखल कर दिया, उसी कम्युनिस्ट पार्टी के एक पूर्व कार्यकर्ता ने टीएमसी विधायक दल को तोड़कर उस पुरानी पराजय का अपने ढंग से बदला ले लिया है।

अब सवाल ये कि क्या ममता अपने पार्टी की इमारत को फिर पहले की तरह मजबूत शक्ल में खड़ी कर पाएंगी, खासकर तब कि जब टूटन निचले स्तर तक पहुंच गई हो? इसका जवाब न में ज्यादा है, क्योंकि एक तो ममता की बढ़ती उम्र और दूसरे, भतीजामोह से उनका न उबर पाना। वैसे भी आने वाले पांच बरसों में भाजपा राज्य में हर स्तर पर पांव जमाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। तीसरे, बांगलादेश में युनूस सरकार के समय जिस तरह अल्पसंख्यक हिंदुओं पर खुलेआम अत्याचार हुए, उस पर ममता के मौन से बंगाली हिंदू भी आक्रोशित हुए और बंगाली अस्मिता पर शायद पहली बार हिंदुत्ववादी सोच इस तरह हावी हुआ। इसे बदलना अब आसान नहीं है। ऐसे में अब टीएमसी के साथ वो ही लोग रहेंगे, जो ममता के भक्त हैं। यानी टीमएसी रहेगी तो लेकिन विपक्ष की सीमित भूमिका में। बाकी सत्ता के साथ जाएंगे।

टीएमसी के पतन का राज्य में कांग्रेस को कितना लाभ मिलेगा या कम्युनिस्टों को फिर संजीवनी मिलेगी, इस बारे में कोई भी कथन जल्दबाजी होगा। इतना तय है कि कांग्रेस अब ममता को ज्यादा भाव नहीं देगी। आगामी चुनावों में सीटों के बंटवारे में भी वह ज्यादा दबंगई से सौदेबाजी कर सकती है। राष्ट्रीय स्तर पर उनके विपक्ष का नेतृत्व करने की संभावना पर भी पानी फिर गया है। यानी विपक्ष की कमान राहुल गांधी के हाथों में ही रहेगी। राज्य में वामपंथियों की स्थिति पहले से बेहतर हो सकती है। लेकिन पहले सी व्यापक स्वीकृति अब मुश्किल है।

यहां सबसे दिलचस्प बात भाजपा का 'पश्चिम बंगाल मॉडल' है। इस राज्य में विस चुनाव के पहले इसी स्तम्भ में मैंने लिखा था कि चुनाव नतीजे जो भी हों, भाजपा का बंगाल मॉडल एकदम नया होगा। वही हो भी रहा है। कुछ लोग इसे सत्ता प्राप्ति के 'महाराष्ट्र मॉडल' से जोड़ कर देख रहे थे, लेकिन वह सही नहीं है। महाराष्ट्र में भाजपा ने दूसरी क्षेत्रीय पार्टियों को राज्य में सत्ता में पाने के लिए तोड़ा था, लेकिन बंगाल में चूंकि उसके पास पहले ही प्रचंड बहुमत है, इसलिए टीएमसी को तोड़ने के पीछे असली मकसद संसद में ताकत बढ़ाना है न कि राज्य में। ये कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना वाला अंदाज है। माना जा रहा है कि विधायकों के टूटने के बाद जल्द ही टीएमसी के 29 लोकसभा सांसद भी दो फाड़ हो सकते हैं। अगर 20 सांसद भी अलग हुए तो वो पृथक गुट बनाकर भाजपा में विलय कर सकते हैं। ऐसा हुआ तो लोकसभा में भाजपा के सांसदों की संख्या 240 से बढ़कर 260 तक जा पहुंचेगी। बाकी 12 का इंतजाम भी किसी और तिकड़म से किया जा सकता है। और पार्टी अपने दम पर ही बहुमत में आ सकती है, जिसे अभी अपने एनडीए सहयोगियों के भरोसे सरकार चलानी पड़ रही है। इस सारे खटकरम पर नैतिक सवाल जरूर उठेंगे, लेकिन चूंकि भाजपा वैचारिक आवरण में व्यावहारिक राजनीतिक करती है। इसलिए वो साधन से ज्यादा साध्य को महत्व देती है। पश्चिम बंगाल से अब भाजपा को उखाड़ने के लिए किसी नए 'राजनीतिक अवतार' की जरूरत होगी, वो कब, कैसे जन्म लेगा, यह भविष्य की बात है।

रायसेन में दो बस टकराईं... राष्ट्रीय कवि समेत 3 की मौत

एक शख्स का सिर दो हिस्सों में बंटा, 15 घायलों को 10 एम्बुलेंस से पहुंचाया अस्पताल

रायसेन (नप्र)। मध्यप्रदेश के रायसेन में दो बसों की आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में 3 यात्रियों की मौत हो गई, जबकि 27 लोग घायल हो गए। हादसा इतना भीषण था कि एक यात्री का सिर फटकर दो हिस्सों में बंट गया। कई घायलों के सिर, चेहरे और हाथ-पैर में गंभीर चोटें आई हैं। घायलों को 10 एम्बुलेंस की मदद से जिला अस्पताल रायसेन, भोपाल के हमीदिया अस्पताल, नागपुर अस्पताल और लक्ष्मी स्पेशलिटी अस्पताल पहुंचाया गया। घटना शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे खरबई थाना चौकी क्षेत्र के सेहतगंज टोल प्लाजा के पास हुई।

मृतकों की पहचान नीतेश व्यास (28) पिता एसएन व्यास, निवासी पंडा टेकापार, सुल्तानगंज, माखन लोधी (29) पिता रामबाबू लोधी, निवासी पचीपुरा, बेगमगंज और दीपेश अहिरवार (19) निवासी सुल्तानगंज के रूप में हुई है।

नीतेश व्यास, मृतक

नीतेश व्यास राष्ट्रीय स्तर के कवि थे और बेगमगंज से भोपाल जा रहे थे। वहीं दीपेश मजदूरी के लिए भोपाल जा रहा था। शुरुआती दौर में 5 लोगों की मौत की सूचना सामने आई थी, लेकिन बाद में प्रशासन ने 3 मौतों की पुष्टि की।

एसपी बोले- भोपाल-सागर रूट पर चलती हैं दोनों बस

एसपी आशुतोष गुप्ता ने बताया कि कल्पना ट्रैवल्स की बस और शक्ति ट्रैवल्स की बस के बीच टक्कर हुई। दोनों बसें भोपाल-सागर रूट पर संचालित होती हैं। भोपाल से सागर जा रही बस में सवार यात्रियों की मौत हुई है। टक्कर के बाद एक बस पुलिया से टकराकर रुकी। कलेक्टर अरुण कुमार विश्वकर्मा और एसपी आशुतोष गुप्ता मौके पर पहुंचे। पुलिस और प्रशासन की टीम ने राहत एवं बचाव कार्य चलाकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया।

पत्नी को वीडियो कॉल कर पति ने लगाई फांसी, मौत

कमरे में मिली शराब की बोतल, तीन दिन पहले मायके गई थी पत्नी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रातीबड़ इलाके में रहने वाले एक सरकारी स्कूल के प्यून ने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। आत्महत्या से पहले उसने अपनी पत्नी को वीडियो कॉल कर फांसी का फंदा दिखाया और जान देने की बात कही। सूचना मिलने पर परिजन मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पत्नी को किया वीडियो कॉल

रातीबड़ थाना पुलिस के अनुसार, नीलबड़ के नाथू बरखेड़ा निवासी 32 वर्षीय भावेश पटेल, पिता जगदीश पटेल, घर के पास स्थित एक सरकारी स्कूल में प्यून के पद पर कार्यरत था। उसकी पत्नी पिछले तीन दिनों से इंदौर स्थित अपने मायके में थी।

गुरुवार देर रात भावेश ने पत्नी को वीडियो कॉल किया। कॉल के दौरान उसने फांसी का फंदा दिखाते हुए कहा कि वह आत्महत्या करने जा रहा है।

ऊर्जा मंत्री ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान में बिजली कंपनी कार्यालय परिसर में किया पौधरोपण

भोपाल। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एक पेड़ माँ के नाम 2.0 अभियान के तहत शुक्रवार को मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के कार्यालय परिसर में फाइकस पांडा का पौधा लगाया। उन्होंने कहा कि पौधों की पेड़ बनने तक देखभाल करें। फाइकस पांडा वातावरण में शुद्ध ऑक्सीजन प्रवाह करता है। साथ ही सदाबहार होता है। इस अवसर पर कंपनी के मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) डॉ. राकेश शर्मा, मुख्य वित्तीय अधिकारी श्री अखिलेश कुमार पांडे, निदेशक (पीडीटीसी) श्री अनिल कुमार खत्री, मुख्य महाप्रबंधक (भोपाल क्षेत्र) श्री बी.बी.एस. परिहार एवं मुख्य महाप्रबंधक श्री डी.पी. अहिरवार सहित सभी वरिष्ठ अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

मंत्री श्री तोमर ने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि गतवर्ष इस परिसर में जो पौधे लगाए गये थे, वे सभी सुरक्षित हैं और लहलहा रहे हैं। उन्होंने सभी बिजली कंपनियों के एमडी को निर्देशित किया है कि सुनियोजित तरीके से पौधरोपण करायें। साथ ही इनकी देखभाल भी सुनिश्चित करें।

कॉल सेंटर में कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने के निर्देश

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बिजली से संबंधित शिकायतें दर्ज करने के लिये बनें कॉल सेंटर का निरीक्षण किया। मंत्री श्री तोमर ने कहा कि बरसात में बिजली की शिकायतें ज्यादा आती है। अत- इनमें कर्मचारियों की संख्या बढ़ाएं। वर्तमान में 90 कर्मचारी कार्य कर रहे हैं।

कॉल सेंटर से उपभोक्ताओं से की बात

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कॉल सेंटर में 4 घंटे से अधिक समय से लंबित शिकायतों के संबंध में संबंधित क्षेत्र के डीई और उपभोक्ताओं से बात की। उन्होंने शिवाजी नगर क्षेत्र और आनंद नगर क्षेत्र के डीई से बात कर कहा कि कारण सहित बताएं कि शिकायतों के निराकरण में इतना समय क्यों लग रहा है। कारण तार्किक नहीं होने पर कार्यवाही की जाएगी। मंत्री श्री तोमर ने बिजली उपभोक्ता श्री संजय नागपुरे और श्री राहुल से बात कर उनकी शिकायतों के निराकरण के संबंध में जानकारी ली। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी में चयनित कर्मचारियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में कहा कि आप सकारात्मक रहते हुए आने वाली पीढ़ी का जीवन सकारात्मक बनाएं। आपको सौंपे जाने वाले दायित्वों का निर्वहन निष्ठापूर्वक करें और कार्यालय में सकारात्मक माहौल बनाएं।

इंदौर में हादसा टला, शोरूम में भीषण आग, 20 लोगों को सुरक्षित निकाला

जांबाजों ने रस्सियों और सीढ़ियों के सहारे चलाया बचाव अभियान

इंदौर। शहर के लसूड़िया इलाके में शुक्रवार की सुबह एक बड़ा हादसा होते-होते रह गया। खालसा चौक के पास सुबह करीब 7 बजे इलेक्ट्रिक वाहनों के एक शोरूम में अचानक आग लग गई। ऊपर फंसे 20 लोगों ने सीढ़ियों और रस्सियों के सहारे सुरक्षित निकाला गया।

शो रूम में लगी आग ने देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया और पूरी इमारत में काला धुआं फैल गया। इस दुकान के ठीक ऊपर बने फ्लैट में रह रहे 6 परिवारों के करीब 20 लोग अंदर ही फंस गए। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस और दमकल विभाग की गाड़ियां तुरंत मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया गया। दमकल कर्मियों और स्थानीय लोगों की सूझबूझ से करीब 1 घंटे के भीतर सभी फंसे हुए लोगों को सही-सलामत बाहर निकाल लिया गया।

शुक्रवार सुबह जब लोग अपनी दिनचर्या शुरू कर रहे थे, तभी अचानक शोरूम से लपटें उठने लगीं। बिजली के वाहनों और वहाँ रखे उपकरणों के कारण आग बहुत तेजी से भड़की, जिससे दुकान के ठीक ऊपर बने फ्लैटों का रास्ता बंद हो गया। ऊपरी मंजिलों पर रह रहे लोग धुएं के कारण नीचे उतरने में असमर्थ हो गए और इमारत में चीख-पुकार मच गई। लोग अपनी जान बचाने के लिए खिड़कियों से मदद की गुहार लगाने लगे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए आस-पास के नागरिकों ने तुरंत प्रशासन को इसकी सूचना दी।

सूचना मिलते ही पुलिस और दमकल की टीमें सक्रिय हुईं। चारों तरफ फैले घने धुएं और तपिश के बीच लोगों को निकालना एक बड़ी चुनौती थी। राहत दल के कर्मचारियों ने अपनी जान जोखिम में डालकर सीढ़ियों और रस्सियों का जाल बिछाया। स्थानीय निवासियों की मदद से एक-एक कर सभी 20 सदस्यों को सुरक्षित नीचे उतारा गया। राहत की बात यह रही कि समय पर की गई इस कार्रवाई की वजह से किसी भी व्यक्ति की जान नहीं गई और न कोई घायल ही हुआ।

शार्ट सर्किट से आग की आशंका

शुरुआती जांच-पड़ताल में इस हादसे की वजह बिजली के तारों में हुआ शार्ट सर्किट माना जा रहा है। अधिकारियों का कहना है कि दुकान में बिजली से चलने वाले वाहनों और उनकी बैटरियां मौजूद थीं, जिसकी वजह से आग को फैलने में अधिक समय नहीं लगा। दमकल कर्मियों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग को पूरी तरह बुझाया और फिर काफी देर तक पानी का छिड़काव किया ताकि दोबारा चिंगारी न भड़के। फिलहाल पुलिस और दमकल विभाग इस बात की बारीकी से जांच कर रहे हैं कि इमारत में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम थे या नहीं। प्रशासन ने लोगों से अपने प्रतिष्ठानों में सुरक्षा के साधनों को दुरुस्त रखने की अपील की है।

मंत्रीद्वय शाह एवं पटेल नें कार्यकर्ताओं से किया संवाद

भोपाल। मध्यप्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री श्री कुंवर विजय शाह एवं मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने शुक्रवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रदेश भर से आए पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद किया।

मध्यप्रदेश शासन के कैबिनेट मंत्री श्री कुंवर विजय शाह एवं मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने प्रदेश भर से आए पार्टी कार्यकर्ताओं एवं आमजनों से संवाद कर उनकी जनसमस्याओं का त्वरित समाधान किया। जिन समस्याओं का तत्काल समाधान नहीं किया जा सका, उन्हें संबंधित विभागों को निराकरण के लिए भेजा गया है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से संवाद करते हुए उनकी जनसमस्याओं को समझा और उन्हें शीघ्र समाधान दिलाने का आश्वासन दिया।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव से समत्व भवन (मुख्यमंत्री निवास) में माउंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करने वाली रायसेन जिले की ग्राम सेमरी निवासी सुश्री अंजना यादव ने सौजन्य भेंट की।

एसपी ऑफिस के बाहर महिला ने खुद पर उड़ेला पेट्रोल, पुलिसकर्मियों की सूझबूझ से टली बड़ी घटना

ग्वालियर (नप्र)। शुक्रवार को एसपी चैंबर के बाहर एक महिला ने खुद पर पेट्रोल छिड़क कर आग लगाकर जान देने की कोशिश की है। ये घटनाक्रम शुक्रवार की दोपहर हुआ। जानकारी के अनुसार जरीना नाम की एक महिला शुक्रवार को एसपी ऑफिस पहुंची थी। यहां उसने एसपी के चैंबर के बाहर खड़े होकर अपने हाथ में पकड़ी हुई पेट्रोल से भरी बोतल से पेट्रोल निकाल कर खुद पर डालना शुरू कर दिया।

पेट्रोल उड़ेलकर आग लगाने की कोशिश

वहीं, महिला खुद पर पेट्रोल उड़ेलकर आग लगाने की कोशिश करने लगी। महिला की यह हरकत देखकर ग्वालियर एसपी ऑफिस में मौजूद पुलिस कर्मी दौड़कर महिला के पास पहुंचे। साथ ही उसके हाथों को पकड़ा और पेट्रोल की बोतल छीनी। महिला की इस हरकत से पुलिसकर्मी भी हैरान रह गए। इसके बाद आनन-फानन में महिला को पकड़कर गाड़ी में बिठाया गया और उसे अस्पताल रवाना कर दिया गया।

काफी परेशान हूं- इस दौरान मीडियाकर्मियों ने महिला से बात करने की कोशिश की तो महिला ने बताया कि वह काफी परेशान है और उसकी कहीं सुनवाई नहीं हो रही है। कई बार चक्कर लगाने के बावजूद जब सुनवाई नहीं हुई तो वह इतनी परेशान हो गई कि उसने आज पेट्रोल छिड़क कर जान देने की कोशिश की है। खास बात है कि इस मामले पर अभी तक पुलिस की तरफ से कोई भी प्रतिक्रिया नहीं आई है।

बहन पर प्रताड़ना का आरोप- महिला का कहना है कि वह अपनी बहन से प्रताड़ित है। बहन ने हमारे साथ धोखाधड़ी की है। इसकी वजह से हम काफी परेशान हो गए हैं। शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं हुई है। साथ ही हमें मदद भी नहीं मिल रही है। अस्पताल ले जाने के बाद महिला की तबीयत बिगड़ गई है।